उसके साजन

कुशवाहा 'कान्त'



SH
: 92 :

"बड़े से शीशे के सामने खड़ी हुई वह अपनी अद्भुत रूपराशि देखकर स्वयं ही अपने ऊपर मोहित हो रही थी। उसकी छाती पर कसी हुई ज़री के काम की चोली ऐसी मन-लुभावनो दीख रही थी कि जिसकी गणना नहीं। उसकी बल खाती हुई नाजुक कमर को देखकर यही दिल चाहता था कि उसे पकड़कर अपनी गोद में बिठा लें—और उसके मदभरे नैनों में अपने नयन गाड़ दें…"

—**इसी उपन्यास में से**

कुशवाहा 'कान्त'

उस के साजन

(रोमांटिक उपन्यास)

स्टार पाकेट सीरीज़

उस के साजन

प्रकाशक :


स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा०) लि०

दरियागंज, दिल्ली-६

नवीन संस्करण
अप्रैल, १६७०
मूल्य : दो रुपये मात्र 6=००

वितरक :
पंजाबी पुस्तक भंडार
दरीबा कलां, दिल्ली-६

मुद्रक :
रूपक प्रिंटर्स, दिल्ली-३२

SH-92 US-KE-SAAJAN (Kushwaha Kant)

एक

'रसना ! तुम आज बड़ी सुन्दर लग रही हो'—कुन्दन कुमार ने रसना को अपने वक्ष के पास खींचते हुए कहा।

रसना किंचित् भ्रूभंग करते हुए बोली—'तुम क्या कम सुन्दर हो प्राण !' इतना कहकर उसने अपनी कोमल बाँहें कुन्दन कुमार के गले में डाल दीं और उनके होंठों पर अपने होंठ रख दिये। दोनों प्रेम-सरोवर में गोते लगाने लगे।

परन्तु उसी समय कुन्दन कुमार चौंक पड़े। उनका शरीर न जाने क्यों भय से सिहर उठा। उन्होंने रसना से कहा—'प्रिये ! वह देखो उस चट्टान के पीछे।'

रसना ने उधर दृष्टि की, जिधर कुन्दन कुमार ने संकेत किया था, तो वह भी काँप उठी। उसने देखा—उस चट्टान के पीछे से चमकती हुई दो भयंकर काली आँखें उन दोनों को घूर रही थीं, परन्तु इन दोनों को अपनी ओर देखता पाकर वे आँखें पुनः चट्टान की ओट में हो गईं।

'टाँडा फाल्स' की भयावने जंगल में, 'फाल' (झरने) के किनारे बैठे हुए इन दो प्रेमासक्त प्राणियों के प्रेमालाप में विघ्न पड़ गया। कुन्दन कुमार राजापुर के सुप्रसिद्ध ज़मींदार के पुत्र थे और रसना थी उनकी पत्नी। कुन्दन कुमार की अवस्था लगभग पच्चीस वर्ष की थी। उनका रूप सुन्दर एवं शरीर सुगठित था। उनमें ऐसा आकर्षण था, जो युवतियों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। रक्त वर्ण कपोलों पर भिनती हुई रेखाएँ बड़ी ही भली मालूम होती थीं। उनकी पत्नी रसना उनसे भी दो हाथ बढ़कर थी। उसकी सुन्दरता मादक थी। रसना का सारा शरीर रसना-मय था। कटाक्षपूर्ण मदभरे नयन, लाल-लाल पतले होंठ और छाती पर उठे हुए दो यौवन सरजित —यह सब देखकर सभी रसना की रसना में लीन हो जाते थे। कुन्दन कुमार मिर्जापुर के सबसे भारी ज़मींदार के लड़के थे। अतः उनको किसी वस्तु की अतृप्त लालसा नहीं थी। अतुलित वैभव सदैव

उनके चरण चूमा करता था। बग्घी, गाड़ी, मोटर, नौकर-चाकर, सभी उन्हें उपलब्ध थे। रसना और कुन्दन कुमार, दोनों पश्चिमी सभ्यता में रंगे थे और अच्छे-से-अच्छे वस्त्र पहना करते थे।

आज प्रातःकाल ही खूब पानी बरसा था, अतः कुन्दन कुमार की इच्छा 'टाँडा फाल्स' पर चलने की हुई। अपनी पत्नी रसना को साथ लेकर वे अपनी मोटर पर सवार हो गए और शीघ्र ही 'टाँडा फाल्स' नामक विशाल झरने पर जा पहुँचे। मोटर सड़क पर ही छोड़कर कुन्दन कुमार और रसना झरने के एकदम समीप जंगल में चले गये और वहीं एकान्त में, झरने वाली नदियों के किनारे बैठकर, अपने अतृप्त प्रेम का आदान-प्रदान करने लगे। प्रकृति की निस्तब्धता बड़ी ही प्रिय लग रही थी। चारों ओर वन-प्रान्त हरियाली से उत्फुल्लित था। सघन वन के कई वृक्षों ने आपस में मिलकर सुन्दर निकुञ्ज बना रखा था।

'क्या था उस चट्टान के पीछे ?' रसना ने भय-से थर-थर काँपते हुए पूछा।

'शायद कोई मनुष्य छिपा हुआ हमारी प्रेम-साधना देख रहा था'—कुन्दन कुमार बोले, 'या वन का कोई दुर्दान्त निशाचर···।'

'निशाचर ?'—रसना चीख उठी—'बचिये ! वह आप ही की ओर आ रहा है।'

कुन्दन कुमार ने भयभीत नेत्रों से पुनः उस चट्टान की ओर देखा। उनकी दृष्टि तुरन्त ही उस कद्दावर चीते पर पड़ी, जो अभी-अभी ही उस चट्टान के पीछे से निकलकर, अपनी खूनी आँखों से देखता हुआ, धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ रहा था। रसना चीखकर कुन्दन कुमार से लिपट गई। इस समय उसकी छाती ज़ोरों से धड़क रही थी। उसके उत्तुंग वक्षःस्थल कुन्दन कुमार के शरीर से कसकर चिमटे हुए थे। कुन्दन कुमार ने रसना को आश्वासन दिया और उसे अपने पीछे करके स्वयं आगे खड़े हो गये ! बोले—'रसना ! घबराओ नहीं।'

परन्तु उस समय उनका भी हृदय धड़क रहा था। उनके पास कोई हथियार नहीं था। वे निरस्त्र खड़े होकर उस भयंकर पशु के सन्निकट आने की बाट देख रहे थे। ऐसे सघन वन में आने का विचार करके भी, उन्होंने अपने साथ कोई हथियार नहीं लिया था, यह उनकी मूर्खता ही थी। रसना अभी तक उनसे चिपटी हुई थी। वे बोले—'रसना ! अब वह समीप आ गया है। तुम मुझे छोड़कर दूर

हट जाओ और मुझे जीवन-मृत्यु की परीक्षा देने दो।'

'नहीं, नहीं प्राण। मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती। तुम···।'

रसना ने कुन्दन कुमार को और भी कसकर पकड़ लिया। चीता अब इन लोगों से केवल पाँच हाथ की दूरी पर था।

कुन्दन कुमार ने काँपते स्वर में कहा—'पागल'—और उन्होंने रसना को अपने पीछे ढकेल दिया। इस समय तक चीता कुछ और नज़दीक आ पहुँचा था और अपने अंगारे-जैसे नेत्रों से कुन्दन कुमार को घूर रहा था। रसना कुन्दन कुमार से चार हाथ पीछे खड़ी हुई, भय से थर-थर काँप रही थी। धीरे-धीरे चीता अपना पिछला धड़ समेटने लगा और दूसरे ही क्षण एक भयानक चीख जंगल को प्रताड़ित कर उठी। चीते ने कुन्दन कुमार को दबोच लिया और अपने पैने दाँतों द्वारा उनकी टाँग पकड़कर उन्हें उस नदी के बीच में फेंक दिया, जो आगे जाकर विकराल झरने का रूप धारण कर लेती थी। कुन्दन कुमार का चेतनाहीन शरीर, जल में उभरी हुई, पहाड़ी चट्टानों के बीच से होता, धीरे-धीरे झरने के मुँह की ओर बढ़ रहा था; जहाँ जाकर वह अगम जलराशि के साथ हज़ारों फुट नीचे गिरकर विशाल दह में लुप्त हो जाता।

रसना ने भागना चाहा, परन्तु भय तथा उद्वेग से वह भाग न सकी। चीता अब क्रमशः उसकी ओर बढ़ रहा था। उस भयानक जीव को अपनी ओर आते देखकर रसना चीख उठी।

× × ×

और वह युवक भी चीख उठा, जो उक्त स्थान से ५०० गज़ की दूरी पर एक पेड़ के नीचे बैठा नमक रोटी खा रहा था। दूर से आती हुई कई दर्दनाक चीखों ने उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया और वह खाना बन्द कर चारों ओर ध्यानपूर्वक देखने लगा। इतने में ही पुनः एक चीख सुनाई पड़ी। उस युवक ने पास ही पड़ी हुई अपनी बड़ी-सी कुल्हाड़ी उठा ली और यह कहता हुआ उधर ही को लपका कि 'हैं! यह तो किसी स्त्री की आवाज़ मालूम पड़ती है।'

वह युवक सुन्दर था, परन्तु गरीबी उसके अंग-अंग से फूटी पड़ रही थी। बदन पर फटा चिथड़ा कुर्ता और कमर में एक मैली-सी धोती—यही उसकी पोशाक थी। अवस्था उसकी लगभग २२ वर्ष की थी। वह कंधे पर कुल्हाड़ी रखे हुए, लम्बे-लम्बे डग बढ़ाता हुआ, उसी ओर चला जा रहा था, जिधर से वे दर्दनाक चीखें आई थीं। शीघ्र

ही वह घटनास्थल पर जा पहुँचा और यह देखकर कि एक खौफनाक चीता एक स्त्री के सामने खड़ा हुआ गुर्रा रहा है और उस पर उछलने को तैयार है; वह ठक-सा रह गया। युवक कुछ और आगे बढ़ा। उसी समय वह चीता अपने पीछे की ओर कुछ आहट पाकर घूमा और रसना को छोड़कर युवक की ओर तेज़ी से झपटा। युवक ने अपनी कुल्हाड़ी ऊँची की और चीते पर एक भरपूर हाथ चलाया, परन्तु वार खाली गया और उसकी कुल्हाड़ी छटककर नदी में जा गिरी। दूसरे क्षण युवक और चीता आपस में गुँथ गये और एक-दूसरे पर विजय पाने की आशा से अपना-अपना पराक्रम प्रदर्शित करने लगे। एकाएक चीते ने युवक को ज़मीन पर दे मारा और उसकी गर्दन पर अपना मुँह लगा दिया, परन्तु उसी समय युवक ने पड़े-ही-पड़े अपने एक हाथ से चीते की गर्दन पकड़ ली और दूसरे हाथ से उसका एक पैर, और उसे हवा में उठाकर एक चट्टान पर दे मारा। कठोर पाषाण पर गिरते ही चीते का शरीर कुछ देर के लिए सुन्न-सा हो गया और उस समय तो वह एकदम निर्जीव हो गया, जबकि युवक ने एक बड़ा-सा पत्थर उठाकर उसके सिर पर पटक दिया।

अब युवक रसना की ओर बढ़ा और उसके पास आकर खड़ा हो गया। उस समय रसना भय से चेतनाहीन-सी होकर खड़ी थी। वह अर्द्ध-निमीलित नेत्रों से चीते और युवक का युद्ध देख रही थी। जिस समय युवक रसना के पास जाकर खड़ा हो गया, वह उसकी सूरत देखकर चौंक पड़ी—साथ ही वह युवक भी। रसना के मुँह से निकला—'हैं! बीरन तुम ?'

युवक ने नतमस्तक होकर उत्तर दिया—'हाँ बहूरानी ! मैं ही हूँ।'

'तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे ?' रसना ने पूछा।

'मैं तो यहाँ नित्य ही लकड़ी काटने आया करता हूँ, बीरन कहने लगा—'परन्तु आपको इस भयानक स्थान में देखकर मुझे घोर आश्चर्य हो रहा है। क्या कुमारजी आपके साथ नहीं थे ?'

रसना को अब कुन्दन कुमार की याद आई। उसने नदी की ओर उँगली उठाकर बीरन से कहा—'वह देखो।'

बीरन ने उधर देखा, साथ ही उसका हृदय हाहाकार कर उठा। कुन्दन कुमार का चेतनाहीन शरीर अभी तक पत्थर की चट्टानों के बीच से होता हुआ झरने की ओर बढ़ा जा रहा था। परन्तु अब झरने का

मुहाना केवल आठ हाथ रह गया था।

'टांडा फाल्स' का झरना कई हजार फुट ऊँचा है और उतने ऊँचे से लगातार पानी गिरते रहने के कारण नीचे एक विशाल दह बन गया है। अब तक कुन्दन कुमार का शरीर झरने के साथ नीचे गिरकर दह में लुप्त हो गया होता, परन्तु ऊपर की नदी में, जल से ऊपर निकली हुई पत्थर की चट्टानों ने उन्हें रोका हुआ था। यही कारण था कि उनका शरीर बहुत धीरे-धीरे मुहाने की ओर बढ़ रहा था, परन्तु अब केवल दो ही मिनट की देर थी।

बीरन यह देखकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया, फिर भी उसने शीघ्र ही अपने को सम्हाल लिया और रसना से बोला—'आप यहीं ठहरें। मैं अपनी लकड़ी बाँधने वाली रस्सी लेकर अभी आता हूँ।'

इतना कहकर वह दौड़ता हुआ एक ओरको चला गया और थोड़ी ही देर में एक मजबूत लम्बी रस्सी लिए वापस लौटा। उसने रस्सी का एक सिरा नदी के किनारे के एक पेड़ में बांध दिया और दूसरा अपनी कमर से बाँधकर नदी में कूद पड़ा। धीरे-धीरे तैरता हुआ वह झरने के मुँह की ओर बढ़ने लगा परन्तु अब वह निराश हो गया था, क्योंकि कुन्दन कुमार अब मुहाने से केवल एक हाथ की दूरी पर थे और एक चट्टान की आड़ में पड़कर थोड़ी देर के लिए रुक गए थे। बीरन धीरे-धीरे मुहाने के नजदीक पहुँचा। उसी समय पानी का एक प्रबल वेग आया। बीरनने लपककर कुन्दन कुमार का हाथ पकड़ना चाहा। पानी की लहर ने कुन्दन कुमार के शरीर को प्रबल वेग से झरने के मुँह की ओर ढकेल दिया। सन्निकट ही था कि कुन्दन कुमार का शरीर विकराल दह में गिरकर विलीन हो जाता, कि उसी समय बीरन असीम साहस करके मुहाने पर जा पहुँचा। उस समय तक कुन्दन कुमार का शरीर नीचे की ओर लटक चुका था, परन्तु बीरन ने उनकी एक टाँग पकड़ ही ली। और जोर लगा करके उनके शरीर को ऊपर खींच लिया। रसना, बीरन के अद्भुत साहस का यह अपूर्व प्रदर्शन देख रही थी। बीरन का प्रबल साहस देखकर वह सन्न हो गई। उसने रस्सी को खींचना प्रारम्भ किया, ताकि बीरन को किनारे आने में सहायता मिले।

पाँच मिनट तक लगातार विरुद्ध लहरों से युद्ध करने के पश्चात् बीरन, कुन्दन कुमार के शरीर को लिये हुए, किनारे पर आया। उसने आहत शरीर को एक स्वच्छ चट्टान पर लिटा दिया। रसना आकर

अपने पति के पास बैठ गई। कुन्दन कुमार उस समय बेहोश थे और उनके शरीर पर सैकड़ों घाव हो गये थे, फिर भी कोई घाव भयकारी नहीं था। बीरन ने सब घावों को धोकर उन पर एक जंगली बूटी का रस लगा दिया और पट्टी बाँध दी। एक क्षण के लिए बीरन और रसना की आँखें आपस में जा मिलीं। बीरन के नेत्रों में श्रद्धा का भाव था और रसना के नेत्रों में अनुराग का। उसी समय कुन्दन कुमार में कुछ चेतना के लक्षण प्रतीत होने लगे और धीरे-धीरे उन्होंने अपनी आँखें खोलीं। रसना ने उनके सर पर अपना कोमल कर स्पर्श कर कहा—'प्राण ! अब कैसी तबीयत है ?'

'अब अच्छा हूँ, परन्तु वह चीता···' कराहते हुए कुन्दन कुमार बोले।

'उसे बीरन ने कालके घाट उतार दिया और उसी ने आपकी रक्षा भी की है'—रसना बोली।

कुन्दन कुमार चौंक पड़े। बोले—'बीरन ने मेरी रक्षा की है ? कहाँ है वह ?'

'यह हूँ छोटे सरकार !'—बीरन सामने आकर हाथ जोड़कर बोला—'मुझे क्षमा कीजियेगा कुमारजी ! मैंने अछूत होकर आपके पवित्र शरीर को छू दिया है। मैं क्षमा··।'

'बीरन ! इधर आ !'—कुन्दन कुमार बोले। बीरन जाकर उनके पैरों के पास बैठ गया। उन्होंने अपना शिथिल हाथ बीरन के सर पर रख दिया और बोले—'बीरन ! तू आज अछूत नहीं मेरा भाई है। मेरा रक्षक है ! आज से तू मेरा दाता और मैं तेरा भिक्षुक हूँ।'

बीरन के नेत्रों से आँसू बह चले। जन्म से लेकर आज तक उसे किसी ने भी इतने प्यार का सम्बोधन नहीं किया था। वह अछूत था और जब से इस पृथ्वी पर जन्मा था, तब से सदैव दुःख, संताप, तिरस्कार एवं घृणा का ही पात्र बनता आया था। सभी उसे दुतकारते, सभी उसकी छाया से दूर भागते। बीरन सोचता—समाज हमें हेय की दृष्टि से क्यों देखता है ? एक दिन जब कि वह बहुत छोटा-सा था, उसने अपने पिता से इस विषय में पूछा भी था, तब उन्होंने कहा था कि बेटा ! तू अछूत है। तभी से बीरन को 'अछूत' शब्द दिन-रात सताया करता। आज उसके घर पर न पिता हैं, न माता। दोनों काल के कराल पंजों द्वारा दबोच लिये गए हैं। उसकी झोंपड़ी में केवल एक प्राणी है—वह है उसके सुख-दुख की साथिनी 'तिल्लो'। तिल्लो—

उठती हुई जवानी वाली वह अछूत बाला—असीम सुन्दरी है। उसी के सलोने मुँह को देखकर बीरन अपने दिन, जंगलों से लकड़ी काट-काटकर व्यतीत करता है। बीरन भी राजापुर गाँव के छोर पर, कुन्दन-कुमार के घर से एक फर्लांग की दूरी पर रहता है।

बीरन रुँधे कण्ठ से बोला—'कुमारजी ! ···' और इसके आगे वह कुछ भी न कह सका। कुन्दन कुमार बोले—'बीरन ! मुझे ले चलकर मेरी मोटर तक पहुँचा दे। मैं पैदल नहीं चल सकता।'

बीरन, कुमार को अपनी पीठ पर लादकर सड़क की ओर बढ़ा जहाँ उनकी मोटर खड़ी थी। मोटर वहाँ से छः फर्लांग की दूरी पर थी। मोटर का शोफर बैठा हुआ कुन्दन कुमार की प्रतीक्षा कर रहा था। परन्तु उसने कुन्दन कुमार को आहत अवस्था में लाये जाते हुए देखा, तो वह सन्न हो गया। बीरन ने कुन्दन कुमार को धीरे-से मोटर के सोफ़े पर लिटा दिया। रसना जाकर कुन्दनकुमार के पास बैठ गई।

कुन्दन कुमार बोले—'बीरन ! तू भी आकर मोटर में बैठ जा।'

बीरन हाथ जोड़कर बोला—'कुमारजी ! मैं नीच हूँ। आपकी मोटर में···।'

'बीरन ! तू नीच है, परन्तु तेरा हृदय उच्च है। हृदय की परख ही मनुष्य की सच्ची कसौटी है'—कुन्दन कुमार ने कहा। बीरन आकर शोफर के पास बैठ गया। मोटर मिर्ज़ापुर शहर की ओर चल पड़ी।

आधे घंटे में १६ मील का रास्ता समाप्त कर मोटर राजापुर गाँव में पहुँच गई। गाँव के कोने पर ही बीरन की झोंपड़ी थी। बीरन वहीं उतर पड़ा और कुमार को प्रणाम कर जाने लगा। उसी समय रसना ने उसे पुकारकर कहा—'बीरन ? तुझे रुपये की ज़रूरत रहती है। यह लो मैं अपनी ओर से तुझे दे रही हूँ।'

इतना कहकर रसना ने १००)का एक नोट बीरन की ओर बढ़ाया। बीरन बोला—'बहूरानी ! मैं पुरस्कार नहीं चाहता। मेरे कार्य का भरपूर पुरस्कार मिल चुका है।'

'नहीं-नहीं ! मेरी आज्ञा से इसे ले लो।'—मोटर पर से कुन्दन कुमार ने कहा।

बीरन ने हाथ फैला दिया। रसना ने हाथ पर नोट रख दिया, परन्तु नोट रखते समय उसने बीरन की हथेली में धीरे से चुटकी काट ली। बीरन ने रसना की ओर चौंककर देखा। रसना उस समय

मुस्करा रही थी, परन्तु बीरन ने अपनी झोंपड़ी के दरवाज़े पर जाकर पुकारा—'तिल्लो !'

झोंपड़ी के भीतर से एक चतुर्दशवर्षीया बालिका आकर उससे लिपट गई और बोली—'मेरे लिये क्या लाये हो ?'

'यह'—कहकर बीरन ने वह नोट तिल्लो के हाथ पर रख दिया।

'यह क्या ? नोट ?'—तिल्लो साश्चर्य बोली और बीरन ने झुककर उसका मुँह चूम लिया।

दो

अपने सजे हुए कमरे में कुन्दनकुमार तकिये के सहारे बैठे हैं। इस समय उनका शरीर पूर्णतया स्वस्थ मालूम पड़ता है। शरीर पर के सब घाव अच्छे हो गए हैं। कुमार के सामने एक कुर्सी पर उनका खास कारिन्दा बैठा हुआ है।

'आखिर तुम इतनी घबड़ाहट के साथ मुझसे क्या कहना चाहते हो !' कुमार ने कारिन्दा से पूछा।

'मैं···सरकार ! ···'

कुमार बोले—'तुम्हारा तात्पर्य यह है कि किसी ने पिताजी से मेरी शिकायत की है ?'

'जी सरकार !' कारिन्दा कहने लगा, 'आप ठीक समझे। बड़े सरकार को यह भली-भांति मालूम हो गया है कि आपने बीरन अछूत पर असीम दया दर्शाई थी और यहाँ तक कि उसे अपनी मोटर पर शहर तक भी लाए थे। यहीं तक बात रहती तो कुछ हर्ज नहीं था, परन्तु लोगों में तो यहाँ तक शोर है कि बीरन की स्त्री तिल्लो से आपका अनुचित सम्बन्ध···'

'क्या कहा ?'—कुन्दन कुमार तड़प उठे—'क्या यहाँ तक नौबत पहुँच चुकी है ? लेकिन यह काम किसका है ?'

'इस काम का करने वाला स्वयं आपका कारिन्दा है।'—कारिन्दा ने कहा।

'अर्थात् तुमने ही यह सब काम किया है ? तुमने ही मेरे विरुद्ध पिताजी के कान भरे हैं ?'—कुन्दन कुमार गरजकर बोले। आवेश से उनकी आँखें लाल हो गईं। उठकर खड़े हो गये और कारिन्दा को गर-

दन पकड़कर बोले— 'बोलो ! तुमने यह सब क्यों किया ? क्यों व्यर्थ पिताजी से मेरी शिकायत की ?'

'शान्त ! शान्त ! ! छोटे सरकार ! जो कुछ मैंने किया, आपके हित के लिये किया। आप दिन-पर-दिन पथ-भ्रष्ट होते जा रहे हैं। समग्र गाँव-भर में आपकी चरित्रहीनता की चर्चा फैल गई है। लोगों को मालूम हो चुका है कि आज से बीस रोज़ पहले आपने बीरन को १००) रुपये का नोट दिया था और उसके बीच में कई सौ रुपये आपकी ओर से बीरन के घर जा चुके हैं। यह सब किस लिये आप कर रहे हैं ? इधर जो आपने तिल्लो के लिये कई गहने बनवा दिये हैं, वह किस लिये ? क्या यह इस बात का पक्का प्रमाण नहीं है, कि आप तिल्लो से प्रेम करते हैं ? क्षत्रिय होकर अछूत बालिका पर मरते हैं।'

'चुप रहो ! नहीं तो मैं तुम्हारी गर्दन मरोड़ दूंगा। तुम दगाबाज़ हो। तुम मुझ पर झूठा लांछन लगाना चाहते हो—' कुमार ने हाँफते हुए कहा। उनका शरीर आवेश से काँप रहा था।

'छोटे सरकार ! याद रखिये ! बड़े सरकार ने आप पर निगाह रखने के लिए मुझे नियुक्त किया है—।'

'चुप रह पाजी, शैतान !'—कहकर कुन्दन कुमार ने कारिन्दा की नाक पर कसकर घूँसा जमाया। कारिन्दा भूमि पर गिर पड़ा। उसकी नाक से रक्त बह चला। उसी समय कमरे का दरवाज़ा झोंके के साथ खुल गया और क्रोध से काँपते हुए कुन्दन कुमार के पिता श्री आगर ने वहाँ प्रवेश किया। कुमार अदब के साथ खड़े हो गये।

'क्या हो रहा है कुन्दन ?'—श्री आगर ने तीखी आवाज़ में पूछा। उनके होंठ फड़फड़ा रहे थे।

कुमार कहने लगे—'पिताजी ! यह मुझ पर झूठा अभियोग लगाता है…।'

'झूठा अभियोग ?'—श्री आगर गरज उठे, 'जिसे गाँव का बच्चा-बच्चा जानता है उसे तुम झूठा अभियोग कह रहे हो। कुन्दन मैंने तुझे बहुत बार समझाया, तू नीचों का सम्पर्क त्याग दे, परन्तु तू नहीं माना। तू क्षत्रिय-पुत्र है—नीचों की श्रेणी में बैठना तेरी शोभा नहीं।'

'—पिताजी !'—कुन्दन कुमार नतमस्तक होकर बोले—'अछूतों से आपको इतनी घृणा क्यों है ?'

'केवल मुझे ही नहीं, सभी को घृणा है। अछूत सदैव से घृणा के पात्र होते आये हैं। ईश्वर भी इन्हें नीच समझता है और समाज भी।

अछूत समाज के ऐसे प्राणी हैं, जो हमारी सेवा करने, हमारी मार सहने और हमारा जूठा खाने के लिये ही पैदा किये गये हैं। उनका अपना इस संसार में कुछ नहीं है। वे पराश्रित हैं, अधम हैं, नीच हैं—' श्री आगर ने घृणापूर्वक कहा।

'तेरी चरित्र-भ्रष्टा का हाल मैं पूरा सुन रहा हूं'—श्री आगर पुनः कहने लगे—'सारा गांव तुझ पर थूक रहा है। सरा समाज तेरे विरुद्ध है…।'

'परन्तु पिताजी मैं फिर कहता हूँ कि इन अतिशयोक्तियों को मुझसे कुछ लगाव नहीं। मैं निरपराध हूँ। मेरे अपराध का कुछ भी प्रमाण नहीं—।'

श्री आगर बोले—'तेरे अपराध का मेरे पास पूरा प्रमाण है। तू शराब पीता है और…'

'झूठ ! पिताजी ! बन्द कीजिये ये सब बातें—' कुन्दन कुमार आवेश के साथ बोले।

श्री आगर ने कारिन्दा से कहा—'तुम्हारे पास इसके अपराध के कौन-कौन प्रमाण हैं ?'

'सरकार ! इधर आइये !' कहकर कारिन्दा एक अलमारी के पास आकर खड़ा हो गया और कुन्दन कुमार से बोला—'क्या आप अपनी इस अलमारी की ताली मुझे दे सकते हैं ?'

कुन्दन कुसार ने घृणा के साथ ताली उसके आगे फेंक दी। कारिन्दा ने ताली से अलमारी खोली, साथ ही कुन्दन कुमार और श्री आगर दोनों चौंक पड़े।

कारिन्दा ने कहा—'देखिए ! मेरी बातों का प्रमाण !'

श्री आगर ने अलमारी में दृष्टि डाली—अलमारी में भी दो विलायती शराब (व्हाइट होर्स), की बोतलें और एक चांदी की प्याली रखी हुई थी और पास ही चाँदी के फ्रेम में मढ़ी हुई एक सुन्दर तस्वीर खड़ी थी। कारिन्दा ने यह तस्वीर श्री आगर के हाथ में दे दी और बोला—'यह देखिये ! इनकी प्रेमिका तिल्लो की तस्वीर।'

कुन्दन कुमार ने भय से अपनी आँखें मूंद लीं और चिल्लाकर बोले—'धोखा ! दगाबाजी ! जालसाजी ! पिताजी। यह किसी छिपे शत्रु का काम है।'—और उन्होंने कारिन्दा की ओर खूनी आँखों से देखा।

श्री आगर जी तड़पकर बोले—'क्या तू मेरी आँखों में धूल झोंकना

चाहता है ? मैं स्वयं देख रहा हूं कि तेरी अलमारी में दो शराब की बोतलें रखी हैं और उस अछूत तिल्लो की भी तस्वीर मौजूद है, फिर भी तू अपने को निरपराध साबित करने की कोशिश कर रहा है ?'

'पिताजी !'

'चुप रह कुलाङ्गार !'—श्री आगर ने आवेश से कहा। और कुन्दन कुमार के सुकोमल कपोलों पर चट से एक तमाचा जड़ दिया। कुमार धम्म से कुर्सी पर गिर पड़े। श्री आगर कारिन्दा के साथ चले गये। जाते समय कारिन्दा ने कुन्दन कुमार की ओर देख कर मुस्करा दिया।

कुन्दन कुमार कुर्सी पर बैठकर सोचने लगे—'अपमान ! अनादर ! लांछन ! जिस शराब को मैंने हाथ से छुआ तक नहीं, यह मेरी अलमारी में कहाँ से आई ? जिस तिल्लो को मैंने आज तक देखा भी नहीं उसकी फोटो मेरे पास कैसे आ गई ? अवश्य यह सब इसी कारिन्दा की बदमाशी है। पिताजी की निगाह में मुझे घृणित बनाने के लिए ही उसने यह सब किया है और सारे गाँव में मेरी बदनामी फैला दी है। लेकिन उसका प्रतिकार अब नहीं हो सकता ? पिताजी का भ्रम दूर करना असम्भव है। गाँव की जनता के हृदय पर से अपनी बदनामी हटाना कठिन है। अब चारों ओर अँधेरा-ही-अँधेरा दृष्टिगोचर हो रहा है।'

कुन्दन कुमार रोने लगे। उनके गाल अश्रुधारा से भीग गये।

× × ×

आज से केवल दो वर्ष पहले बीरन और तिल्लो की शादी हुई थी। बीरन युवक था, सुन्दर था और सब प्रकार से तिल्लो के योग्य था। जब गुड़िया-सी सजी हुई तिल्लो बीरन के झोंपड़े में आई तो उसने उसे अपनी गोद में उठा लिया और उसके लाल पतले होंठों पर अपने होंठ रख दिए। लज्जा से तिल्लो का मुँह लाल-लाल हो उठा। इस प्रकार दिन-पर-दिन और रात-पर-रात बीतने लगे। दोनों यौवन के असीम रस का आनन्द उपभोग कर रहे थे। बीरन, तिल्लो को अपने बाहुओं में कसे हुए सारी रात बिता देता। तिल्लो को भी असीम सुख प्राप्त होता। वह बहुधा सोचती कि क्या इस सुख से भी बढ़कर स्वर्गीय सुख होगा। तिल्लो जितनी सुन्दर थी; उतनी ही कार्यदक्ष भी। बीरन दिन-भर लकड़ियाँ काटकर अपना तथा तिल्लो का पेट पालता। इस प्रकार उनके दिन व्यतीत हो रहे थे।

बीरन की झोंपड़ी राजापुर गाँव के एक कोने में पड़ती थी। वह अछूत था, अतः उस गाँव के ज़मींदार श्री आगर ने उसे (तथा अन्य अछूतों को भी) गाँव के कुओं से पानी भरने के लिए मना कर दिया था, और बेचारी अछूत बालाएँ सुदूर स्थित एक गन्दे तालाब से पानी लाया करती थीं। जब यौवन-भार से दबी हुई तिल्लो, अपनी पतली कमर पर मिट्टी का घड़ा रखे हुए, पानी भरने को जाने लगती, तो सैकड़ों के कलेजे पर साँप लोट जाता। क्या ब्राह्मण क्या शूद्र—सभी उसकी रूपराशि पर मुग्ध थे। कोई कहता—'हाय रे तितली' कोई कहता—'तिल्लो जान।' परन्तु तिल्लो किसी को कुछ उत्तर न देती। वह अछूत थी और उसे प्रत्युत्तर करने का अधिकार ही कहाँ था? वह तो केवल लांछन, अपमान तथा दुर्वाक्य ही सहन करने के लिए भेजी गई थी।

उस दिन जबकि तिल्लो दरवाजे पर बैठी हुई, तरकारी काट रही थी, और बीरन लकड़ी लाने जंगल गया हुआ था, राजापुर के ज़मींदार श्री आगर ने अपने कारिन्दे के साथ वहाँ पर पदार्पण किया। तिल्लो अदब के साथ उठ खड़ी हुई। कारिन्दे ने कहा—'तिल्लो सरकार को तेरे ऊपर शक है।'

'शक? कौन-सी बात का शक है सरकार!' तिल्लो बोली।

'तू ज़रा अपनी सन्दूक यहाँ ला'—कारिन्दे ने कहा और तिल्लो भीतर जाकर चटपट अपनी छोटी-सी सन्दूक उठा लाई। कारिन्दा ने उसका ताला खोलने को कहा। तिल्लो ने ताला खोलकर सन्दूक का ढक्कन उठाया, साथ ही सभी चौंक पड़े! सन्दूक में चमचमाते हुए सोने के कई गहने रखे हुए थे। तिल्लो घबराहट से बोली—'हैं! ये गहने किसके हैं और मेरी सन्दूक में कहाँ से आये?'

'नादान बनती है'—कारिन्दे ने तिल्लो को डाँटा और फिर श्री आगर से कहा—'यही वे गहने हैं, जिन्हें कुमार जी ने इस हरामज़ादी के लिए बनवा दिए हैं। अब तो आपने मेरी बातों का पूर्णतया प्रमाण पा लिया।'

'लुच्ची कहीं की'—श्री आगर ने कहा और उनके हाथ की बेंत तिल्लो की पीठ पर 'सट' से जा पड़ी। तिल्लो पीड़ा से आह कर उठी। वह भय से थर-थर काँपती हुई खड़ी रही। उसकी विचित्र दशा थी। वह नहीं समझ पा रही थी कि उसकी सन्दूक में इतने सुनहरे गहने आये कहाँ से? अभी तो कल ही सन्दूक खोला था, तब उसमें एक भी

गहना नहीं था---तो क्या बीरन यह सब चुराकर रख गया है ? नहीं-नहीं ! वह तो ऐसा नहीं है फिर ? और यह कारिन्दा क्या कह रहा है कि कुन्दन कुमार ने उसे यह सब गहने दिए हैं, परन्तु अभी तक तो उसने कुमार की सूरत भी नहीं देखी। वह सुन चुकी थी कि कुमार बड़े दयालु हैं, परन्तु अभी तक उनके दर्शन करने का सौभाग्य उसे नहीं प्राप्त हुआ था।

श्री आगर उन सब गहनों के साथ चले गये। तिल्लो भूमि पर बैठ कर रोने लगी। आज तक उसने सैकड़ों लांछन सहे थे, परन्तु ऐसा रोना उसे कभी न आया था। वह सोचती थी कि जिस प्रकार मुझ पर झूठा लाँछन लगाया गया है उसी प्रकार कुमार पर भी लाँछन लगाया गया होगा। यह सब किसी ऐसे शत्रु की जालसाज़ी है, जो कुमार से जलता है और उन्हें सरकार की आँखों से गिरा देने का प्रयत्न कर रहा है।

वह उठी और मिट्टी का घड़ा उठाकर पनघट की ओर चल पड़ी। पनघट पर जाकर वह घण्टों रोती रही। शाम होते-होते जब वह घर लौटने लगी, तो उसने देखा कि निर्जन रास्ते पर एक पेड़ के नीचे श्री आगर का कारिन्दा खड़ा है। जब तिल्लो पास आ गई, तो कारिन्दा ने क्रूर हँसी हँसकर तिल्लो से कहा—'तिल्लो ! तुम और कुन्दन कुमार मेरे जाल में कसे जा चुके हो। मेरा षड्यन्त्र इस खूबसूरती के साथ रचा गया है कि तुम दोनो उसमें से किसी प्रकार भी नहीं निकल सकते। बड़े सरकार तुम दोनों पर पूर्णतया रुष्ट हैं—खासकर कुन्दन कुमार पर वे बहुत बिगड़े हैं—'

'मैं सब समझती हूँ कारिन्दा साहब !'—तिल्लो बोली, 'यह सब तुम्हारा ही खेल था। तुम्हीं ने सरकार का दिल कुमार की ओर से फेर देने के लिए, यह सब षड्यन्त्र रचा है लेकिन इसका फल अच्छा न होगा तुमने व्यर्थ ही कुमार पर दोषारोषण किया है। यह लांछन···'

'लेकिन तुम कुमार को इस लांछन से बचा सकती हो'···

'कैसे ?' तिल्लो ने पूछा।

'ऐसे', कहकर कारिन्दा ने तिल्लो को अपनी छाती के पास खींच लिया। तिल्लो विद्युत-वेग से छटककर दूर जा खड़ी हुई। बोली··· 'कारिन्दा साहब ! तुम्हारी यह इच्छा कभी पूरी न होगी ?'

'मेरी इच्छा-पूर्ति में कोई बाधा नहीं दे सकता तिल्लो। मैं इसी जगह तुम्हारी इस भरी जवानी का भरपूर मज़ा लूँगा। आज तुम मेरे हाथों से बचकर नहीं जा सकतीं' इतना बहकर कारिन्दा, ने तिल्लो

का हाथ पकड़ लिया। तिल्लो दर्द से चीख उठी। कारिन्दा बोला, 'मेरी जान ! मदभरे प्याले को चारों ओर छलकाती फिरो तभी ज़िन्दगी का मज़ा लूटोगी।'

परन्तु तिल्लो हाथ छुड़ाकर भागी और अपने झोंपड़े में आकर चारपाई पर गिर पड़ी। इसी समय बीरन ने झोंपड़े में प्रवेश किया और तिल्लो को बदहवास देखकर बोला, 'तुम आज परेशान-सी दीख रही हो। कारण क्या है ?'

तिल्लो ने अपने को सम्भाला और उठकर बैठ गई। बीरन भी उसके पास चारपाई पर जा बैठा। तिल्लो ने बीरन की गोद में अपना सिर छिपा लिया और हिचकियाँ लेने लगी। बीरन बोला, 'तुम्हें आज क्या हो गया है ? कुछ कहो भी।'

तिल्लो ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। कुमार का लांछित होना, अपनी सन्दूक में गहनों का निकलना, और रास्ते में कारिन्दा से भेंट, ···कोई बात न छोड़ी। यह सुनकर बीरन बोला, 'यह सब कारिन्दा की ही करतूत है। वह शैतान है भी बड़ा दगाबाज़। उसका चक्र भी पूरा चल चुका है। गाँव-भर में झूठमूठ कुमार की बदनामी उसने फैला दी है।'

'कुमार के उज्ज्वल चरित्र में काला धब्बा लग गया है, अब वह जल्दी नहीं छूटने का। अब इसका कोई उपाय भी नहीं है' तिल्लो ने कहा।

'उपाय ?'—बीरन कुछ देर तक सोचता रहा। एकाएक आवेश में आकर वह खड़ा हो गया और अपनी लम्बी कुल्हाड़ी कन्धे पर रखता हुआ बोला—'इसका उपाय प्रतिशोध है। मैं अभी उस बदमाश की खबर लेता हूँ।'

बीरन बाहर जाने लगा, परन्तु तिल्लो ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोली—'प्रतिशोध लेना हम नीचों का काम नहीं। हमारी इज्जत ही कहाँ, जो प्रतिशोध लें ?'

बीरन तिल्लो को धकेलकर निकल गया। रास्ते में ही उसे कारिन्दा मिला। वह कारिन्दा से तड़पकर बोला—'विश्वासघाती ! मनुष्य के रूप में पिशाच ! यह सब तू क्या जाल फैला रहा है ?'

'शान्त बीरन ! शान्त ! !'—कारिन्दा गम्भीरतापूर्वक कहने लगा—'तुम स्त्री की सुन्दरता के वशीभूत होकर उचित-अनुचित का ज्ञान भूल गये हो, तुम्हें तिल्लो ने पागल बना दिया है। तुम मेरी बात

न मानो, परन्तु जरा गाँव की ओर दृष्टि डालो। सभी तुम्हारी स्त्री को वेश्या कहते हैं, सभी तुम्हारी तिल्लो पर बौछार उड़ाते हैं। और मैं भी कहता हूँ कि तुम्हारी स्त्री व्यभिचारिणी है, कुलटा है···'

'इसका प्रमाण ?'

'इसका प्रमाण तुम्हारे घर पर उपस्थित है। तुम अभी जाओ, तुम्हें प्रमाण मिल जायेगा।'

बीरन के हाथ से कुल्हाड़ी गिर पड़ी। हे भगवान ! वह यह क्या सुन रहा है। उसकी फूल-सी तिल्लो काली नागिन निकली ! जिसे गुल समझा था, वह खार निकली ?

'बीरन !'—कारिन्दा कहने लगा—'मुझे तुम्हारे साथ पूरी सहानुभूति है !'

'सहानुभूति ? एक अछूत के साथ आप सहानुभूति रखते हैं ? अच्छा ! अभी पता चल जायेगा। मैं अभी घर जा रहा हूँ, यदि मेरी स्त्री के कुलटा होने का प्रमाण न मिला तो···'

बीरन उल्टे पाँव लौट आया। झोंपड़ी के दरवाजे पर पहुँचकर वह कुछ देर तक रुका, तत्पश्चात् दरवाजे के अन्दर झाँका। उस समय उसकी स्त्री तिल्लो, दरवाजे की ओर पीठ किये चारपाई पर बैठी कोई चीज ध्यानपूर्वक देख रही थी। बीरन दबे-पाँव जाकर तिल्लो के पीछे खड़ा हो गया। तिल्लो एक तस्वीर गौर से देख रही थी। बीरन ने उस तस्वीर पर दृष्टिपात किया। वह छोटी-सी तस्वीर कुन्दन कुमार की थी। बीरन पर बज्र गिर पड़ा। ओह ! उसकी स्त्री एकान्त में बैठी हुई कुन्दन कुमार का ध्यान कर रही है।

उसने आगे बढ़कर तिल्लो की गरदन पकड़ ली और चिल्लाकर बोला—'फाहशा !'

तीन

मनुष्य के शरीर में जब वासना पूर्ण रूप से व्याप्त हो जाती है तो वह उचित-अनुचित, हानि-लाभ सब कुछ भूल जाता है। वासना उसे पागल बना देती है। वासना के मीठे रस का आस्वादन करता हुआ मनुष्य यह नहीं सोचता कि जीवन का समग्र आनन्द अपनी वासना-पूर्ति में ही है। इसी वासना-पूर्ति के लिए मनुष्य घृणित कार्य कर

डालता है और अपनी मान-मर्यादा सब कुछ भूलकर जीवन को नष्ट करने में तल्लीन हो जाता है।

कुन्दन कुमार की स्त्री रसना वासना के प्रबल वेग में जकड़ी जा चुकी थी। उसका बाल्यकाल सुख तथा ऐश्वर्य में ही बीता था। प्रारम्भ से ही उसकी संगत अच्छी नहीं थी। फल यह हुआ कि वह छोटी उम्र में ही विषय-वासना की ओर आकृष्ट हो गई थी। यद्यपि उसने कुन्दन कुमार जैसा सुन्दर और सहृदय पति पाया था, फिर भी उसकी आदत छूटी न थी। वह छिपे तौर से और लोगों से भी मिला करती थी! पाठक इसे अतिशयोक्ति न समझें, क्योंकि प्रारम्भ ही से जो आदत पड़ जाती है वह जल्दी छूटती नहीं। वही हाल रसना का भी था। वह विषय-वासना में पूर्णरूप से लिप्त हो चुकी थी। वह चाहती थी भ्रमर बनकर भिन्न-भिन्न फूलों का रसास्वादन करना। केवल पति पर ही निर्भर रहना उसने न सीखा था। वह सोचती थी कि जब नाना प्रकार के पकवान मिल सकते हैं तो रूखी-सूखी रोटी ही क्यों खाई जाय? बदसूरत स्त्रियों को छोड़कर, समाज में कौन-सी ऐसी स्त्री है जो गुप्त प्रेम नहीं करती। किसी भी स्त्री के लिए उसका पति ही पर्याप्त नहीं। जब अवसर पाते ही पुरुष अपनी इन्द्रियों की तुष्टि करने से बाज़ नहीं आता, तो स्त्रियाँ ही दिन-रात पति-पति क्यों रटा करें? यही थे रसना के विचार। परन्तु कुन्दन के सामने वह ऐसी पतिव्रता बन जाती थी, कि बेचारे कुन्दन कुमार को उस पर ज़रा भी सन्देह नहीं होता था।

रसना एक पलंग पर बैठी हुई कोई पुस्तक पढ़ रही थी। उसी समय दासी ने आकर खबर दी कि कारिन्दा साहब आए हैं। रसना ने उन्हें भेज देने को कहा। थोड़ी ही देर में कारिन्दा मुस्कराता हुआ आ पहुँचा। रसना का कमरा अहाते के पास पड़ता था, इसलिए उसका अनुचित व्यापार घर वालों को नहीं मालूम हो सकता था। कारिन्दा आकर रसना की चारपाई पर बैठ गया। रसना ने मुस्कराकर पूछा—

'क्या समाचार है?'

'जाल पूरी तौर से फैला चुका हूँ—'कारिन्दा कहने लगा, 'कुन्दन कुमार की अलमारी से शराब की बोतल और तिल्लो की फोटो निकल चुकी है एवं तिल्लो की सन्दूक से कई सुनहरे गहने पाए गए हैं। सारा जाल इस खूबसूरती से बिछाया गया है कि बड़े सरकार को मुझ पर ज़रा भी शक नहीं हुआ है और वे कुमार पर हृदय से रुष्ट हैं। उधर गाँव में फैली हुई भयानक बातें उनके क्रोध को और भी उभार रही

हैं। अब शीघ्र ही कुन्दन कुमार इस घर से सदैव के लिए निकाल दिये जायेंगे, और तब हम-तुम आनन्द लूटते हुए उस शुभ घड़ी की राह देखेंगे, जबकि बड़े सरकार को जहर देकर हम लोग पूर्णतया स्वतन्त्र हो जाएंगे और यह सब ज़मींदारी हमारे और तुम्हारे अधीन होगी।'

'चुप चुप!' रसना ने कारिन्दा का मुँह थाम लिया—'दीवालों के भी कान होते हैं।'

'जब से मैंने बीरन को देखा है'—रसना पुनः कहने लगी, 'तभी से मेरा हृदय उसकी ओर आकर्षित हो गया है। अब कोई ऐसा उपाय करो कि बीरन का हृदय अब तिल्लो से खटक जाय और वह मुझे चाहने लगे।'

'वह मैं कर चुका हूँ'—कारिन्दा बोला—'आज पनघट से लौटते समय तिल्लो से मेरी भेंट हुई थी और मैंने उसे छाती से लगाते समय, उसकी जेब में चुपके से कुन्दन कुमार की फोटो रख दी थी। अब बीरन जब उसकी जेब में कुन्दन कुमार की तस्वीर देखेगा तो वह…'

'सचमुच तुम अद्‌भुत कार्यदक्ष हो। मैं तुम्हें हृदय से चाहती हूँ!' कहकर रसना कारिन्दा से लिपट गई। उसकी उठी छाती कारिन्दा का वक्षःस्थल चूमने लगी। दोनों के होंठ थोड़ी देर के लिये मिल गये।

रसना बोली—'मैंने दासी द्वारा बीरन को बुला भेजा है। वह उसे लेकर गुप्त रास्ते से आ रही होगी।'

'यह तुमने अच्छा किया। अपनी वासनाओं की तुष्टि अवश्य करो। जो मनुष्य अनायास ही अपनी प्रबल आकांक्षाओं का दमन करता है, वह इस जीवन में कभी सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। उसकी जीवन-कलिका कभी प्रस्फुटित नहीं होती।…अच्छा। मैं जा रहा हूँ, फिर भेंट होगी' कहकर कारिन्दा चला गया। थोड़ी ही देर में दासी ने कमरे में प्रवेश किया और बोली—'वह आया है।'

'किधर से लाई हो?'

'गुप्त रास्ते से।'

'अच्छा भेज दो।'

दूसरे ही क्षण बीरन ने उस कमरे में प्रवेश किया। उस समय रसना ने एक अत्यन्त महीन साड़ी पहन रखी थी, जिससे उसका अंग-प्रत्यंग दिखाई पड़ रहा था। बीरन आकर नतमस्तक रसना के आगे खड़ा हो गया। रसना ने उसको बैठ जाने को कहा। वह भूमि पर बैठ गया। उसका सारा शरीर निश्चल था। अभी तक वह यह नहीं जान

सका था कि बहूरानी ने उसे एकान्त स्थान में क्यों बुलाया है ?

'बीरन ! तू बड़ा शोकमग्न दीख रहा है।'

बीरन के मुँह से दुःख की एक आह निकल पड़ी। वह बोला——'बहूरानी ! कुमार जी ने मुझे बरबाद कर दिया। मेरी इज़्ज़त-आबरू नष्ट कर दी। मेरी स्त्री के साथ···और वह स्त्री भी फ़ाहशा निकली। मैंने उसे कल अपनी आँखों द्वारा कुमार की तस्वीर घुटने पर रखे हुए आँसू बहाते देखा था। बहूरानी ! मुझ पर इस समय जो मानसिक कष्ट छाया हुआ है, वह असह्य है। विकट दाह से मैं पागल हुआ जा रहा हूँ।'

मुझे सब मालूम है ! वास्तव में तुम्हारे साथ घोर अन्याय किया गया है। तुम्हें इसका प्रतिशोध लेना चाहिए'——रसना बोली।

बीरन कहने लगा——'प्रतिशोध लेने की शक्ति हम नीचों में कहाँ बहूरानी ! हम तो पद-दलित हैं। बड़ों के पैरों के नीचे कुचला जाना ही हमारा काम है। हमारी इज्जत का कुछ भी मूल्य नहीं है।"

'नहीं, नहीं बीरन ! तुम भूलते हो। तुम्हें अवश्य अपने अपमान का बदला लेना चाहिए।'

'वह किस प्रकार बहूरानी !'

'इस प्रकार—रसना कहने लगी—'उन्होंने तुम्हारी स्त्री पर हाथ साफ किया है, तुम भी उनकी स्त्री पर···'

'बहूरानी !'—बीरन चिल्ला उठा—'यह आप क्या···'

'मैं बिलकुल ठीक कह रही हूँ'—रसना ने कहा—'यह तो न्याय है बीरन ! उन्होंने तुम्हारी स्त्रीकी इज्जत पर धब्बा लगाया है, तुम भी उनकी स्त्री की इज्जत को खाक में मिला दो। उन्होंने तुम्हारी स्त्री को बरबाद किया है। तुम भी उनकी स्त्री को बरबाद कर दो। मैं तुम्हारे इस कार्य में सहायता दूंगी बीरन ! बोलो क्या तुम तैयार हो।'

इतना कहकर रसना ने प्रेमपूर्वक बीरन का हाथ पकड़ लिया और नज़ाकत से अपना आँचल नीचे गिरा दिया। उसकी उठी हुई छाती नग्न अवस्था में बिजली गिराने लगी। बीरन तड़पकर उठ खड़ा हुआ। बोला - 'समझ गया बहूरानी ! मगर आपकी यह इच्छा सफलीभूत न होगी। बीरन प्रतिशोध के लिए घृणित मार्ग का अवलम्बन न करेगा।'—इतना कहकर बीरन बाहर जाने लगा। रसना बोली—'मेरी आज्ञा के बिना तुम बाहर नहीं जा सकते बीरन ! फिर भी मैं इस समय तुम्हें अधिक कष्ट नहीं दूंगी, क्योंकि मैं जानती हूँ कि तुम्हारी मानसिक

अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। मैं तुम्हें दो हफ्ते का समय दे रही हूँ। तुम भली प्रकार सोचकर मुझे उत्तर देना। अब तुम जा सकते हो।'

बीरन बाहर आया। दासी उसे पहुँचाने चली। रास्ते-भर बीरन सोचता रहा—'जिस स्त्री को मैंने देवी समझा था, वह राक्षसी निकली? जिस बहूरानी को मैं साध्वी समझता था, वह कुलटा निकली? उफ! यह दुनिया भी कैसी मायाविनी है?'

× × ×

पलक मारते भर में क्या से क्या हो गया। बदमाश कारिन्दे की करतूत से कुन्दन कुमार, बीरन, तिल्लो सभी पर बदनामी का टीका लग गया। कुन्दन कुमार को महान् ग्लानि हुई। गाँव-भर में उनकी बदनामी फैल उई। वे जिधर भी जाते, लोग उन पर उँगली उठाते। उन्हें अपने चारों ओर अपमान तथा अनादर ही दृष्टिगोचर हो रहा था। उनका जी ऊब गया था। अब वे एक ऐसी जगह पर चले जाना चाहते थे, जहाँ कुछ दिनों तक रहकर वे शान्ति-लाभ कर सकें। अन्त में उन्होंने बम्बई की सैर करने का निश्चय कर लिया।

उस दिन बीरन दरवाज़े से निकला ही था कि एक मोटर उसके दरवाजे पर आकर रुक गई और उस पर से कुन्दन कुमार उतरकर उसके सामने आ खड़े हुए। कुमार को अपने सामने देखकर बीरन की नसों में बिजली दौड़ गई। वह आवेश के साथ बोला—'कुमार जी अब आप क्या करने आए हैं? आपने मेरा घरबार उजाड़ डाला, मेरी हरी-भरी वाटिका नष्ट कर दी और मेरी बसी-बसाई दुनिया मटियामेट कर डाली—अब क्या कुछ और करने का इरादा है? आपने अछूत की इज्जत को इज्जत नहीं समझा, नीच की मर्यादा को मर्यादा नहीं समझा, आपने मीठी-मीठी बातों से सब मटियामेट कर डाला।'

'बीरन'—कुमार शान्तिपूर्वक बोले—'मुझे नहीं मालूम था कि तू भी मुझ पर लांछन लगायेगा। उस दिन तुझ में सहृदय का कुछ ऐसा लेश मिला था कि मैं विश्वास ही न कर सका था कि औरों की भाँति तू भी मुझ पर कीचड़ उँडेलेगा। बीरन! निरपराध की रक्षा भगवान करता है। और मैं अधिक क्या कहूँ! मैं महत् ग्लानि से ऊबकर कुछ दिनों के लिए चला जा रहा हूँ। जाते समय मुझे दुःख न दे। इधर देख! मेरी इन आँखों की ओर—देख! इनमें दुख तथा पश्चात्ताप की कैसी भीषण छाया वर्तमान है।...देख! दिन-रात चिन्ता में दग्ध रहने के कारण ये आँखें कैसी विह्वल हैं।'

एक क्षण के लिए बीरन की आँखें कुन्दन कुमार की आँखों से जा मिलीं । उस समय कुन्दन कुमार के नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी । उनके नेत्रों में कातरता का एक करुण भाव था, जो अपनी निर्दोषिता स्वयं प्रमाणित कर रहा था । कुमार के क्लान्त चेहरे पर सद्भाव की दिव्य-ज्योति विराजमान थी । बीरन का हृदय व्याकुल हो उठा । उसका माथा नीचा हो गया । वह धड़ाम से कुमार के चरणों पर गिर पड़ा और बोला—'छोटे सरकार, मैं नीच हूँ, पापी हूँ । मुझे क्षमा कीजिए । मैंने व्यर्थ ही आपको अप-शब्दों द्वारा अपमानित किया है । कुमार जी ! मैं···।'

'तू मेरा भाई है बीरन !' कहकर कुमार ने बीरन को हृदय से लगा लिया । उनके नेत्रों में दो बूँद आँसू ढुलककर बीरन की हथेली पर आ रहे । उस समय और भी एक प्राणी झोंपड़ी के दरवाज़े की आड़ में यह दृश्य देख रहा था । वह थी तिल्लो ! तिल्लो की भी आँखें तर थीं !

कुमार अपनी मोटर में जा बैठे । मोटर द्रुतगति से आगे बढ़ गई । दरवाज़े की आड़ में खड़ी तिल्लो ने मन ही मन कुमार को प्रणाम किया । बीरन झुककर ज़मीन पर बैठ गया, और जहाँ पर कुमार खड़े थे, वहाँ की मिट्टी लेकर माथे से लगा ली । तिल्लो आगे बढ़ आई और बीरन के कन्धे पर हाथ रखकर बोली—'यह क्या हो रहा है ?'

'अपनी भूल का प्रायश्चित्त'—बीरन ने कहा और तिल्लो का हाथ पकड़ लिया । दोनों झोंपड़ी के भीतर जाकर चारपाई पर बैठ गये । दोनों के मुँह से निकला—'धन्य हैं कुमार !'

चार

कुन्दन कुमार ने अपनी आँखें खोलीं । उन्होंने देखा कि उनकी सीट के सामने ही एक अधेड़ उम्र की स्त्री एवं एक चतुर्दशवर्षीया बालिका बैठी है ।—दोनों किसी बड़े घराने की मालूम पड़ती थीं दोनों के बदन पर बहुमूल्य ज़ेवरात थे । बालिका की सुन्दरता अवर्णनीय थी । यौवन उसके अंग-अंग से फूटा पड़ रहा था । उस समय 'बाम्बे मेल' अपनी पूरी गति से भाग रही थी । कुन्दन कुमार जब से रेलगाड़ी पर सवार हुए थे, तब से अब तक बराबर सोते रहे थे । चिन्ता एवं मानसिक कष्ट ने उन्हें कुछ ऐसी नींद ला दी थी कि वे पाँच घन्टे से पहले न उठ सके ।

इस बीच गाड़ी कितने ही स्टेशनों को पार कर गई, परन्तु उन्हें कुछ भी पता न चला। जब उनकी नींद पूर्णतया समाप्त हो चुकी, तो उनकी आँखें खुल गईं एवं जो कुछ उन्होंने देखा, वह ऊपर लिखा जा चुका है।

उन्होंने हिचकिचाते हुए कहा—'आप लोग...'

'जी'—बालिका बोली—'मेरा नाम अम्बु है और ये मेरी माँ हैं। हम दोनों बम्बई सैर करने के लिए जा रहे हैं।'

'ठीक ! मगर क्या आप ज़रा-सा सर निकालकर डिब्बे के दरवाजे पर लिखे हुए शब्दों पर ध्यान देंगी ?'—कुमार ने विनीत भाव से कहा। अम्बु उठी और खिड़की से सर निकालकर डिब्बे के दरवाज़े पर देखने लगी। साथ ही चौंक पड़ी। उसने देखा कि डिब्बे के दरवाज़े पर साफ़-साफ अक्षरों में लिखा हुआ है—'रिज़र्व्ड।'

वह अपनी माँ के पास आकर बोली—'मां ! यह कम्पार्टमैंट तो रिज़र्व्ड है।'

'रिज़र्व्ड ?'—अम्बु की माँ ने आश्चर्य से कहा।

'हाँ !' बाबू साहब ने शायद रिज़र्व्ड कराया है।

'ऐसी हालत में इस कम्पार्टमेंट में चढ़कर हमने इन बाबू साहब के साथ घोर अन्याय किया है'—अम्बु बोली।

अम्बु की माँ ने कुन्दन कुमार से कहा—स्टेशन पर जल्दी से हम यह न देख सकीं कि यह कम्पार्टमेंट रिज़र्व्ड है। कृपया क्षमा कीजियेगा। अगले स्टेशन पर हम उतर जायँगे।

'नहीं नहीं ! आप शौक से बम्बई तक इस पर चल सकती हैं, क्योंकि मैं वहीं चल रहा हूँ'—कुन्दन कुमार ने कहा।

'धन्यवाद ! मगर आप ठहरेंगे कहाँ ?' अम्बू ने पूछा।

'किसी होटल में'—

'तब तो हमारा आपका कुछ दिनों तक अवश्य साथ रहेगा'—अम्बु ने कहा।

इस प्रकार बातचीत होती रही। एक-दूसरे का परिचय भी प्राप्त कर लिया गया। धीरे-धीरे 'विक्टोरिया टर्मिनस' स्टेशन निकट आने लगा।

गाड़ी से उतरने पर बम्बई की भीड़-भाड़ देखकर कुन्दन कुमार अतीव प्रसन्न हुए। वे एक ओर को बढ़े, अम्बु और उसकी माँ भी उनके साथ चलीं। भिन्न-भिन्न होटलों के 'रिप्रेज़ेन्टेटिव्ज' उनके सामने आने लगे। कोई कहता—'बाम्बे होटल सर, कोई कहता—'न्यूग्रैण्ड सर'

परन्तु कुमार ने इनमें से किसी में भी जाना निश्चय न किया।

× × ×

अपने सजे हुए आफिस में 'ब्यूटी होटल' का मैनेजर बैठा है। बम्बई शहर में उन दिनों यही होटल सबसे भारी एवं सुव्यवस्थित समझा जाता था। होटल का प्रबन्ध बहुत ही अच्छा था और यहाँ सदैव अमीर, उमराव ही आया करते थे। मैनेजर के आफिस में एक बेयरा, दो 'विज़िटिंग कार्ड्स' लिए हुए घुसा और उसने दोनों कार्ड्स मैनेजर के सामने, टेबल पर रख दिए। मैनेजर ने पूछा—'कौन है ?'

'एक जेन्टिलमैन अपने लिए फर्स्ट क्लास का रूम चाहते हैं और उन्हीं के साथ एक मिस भी हैं, जो अपने और अपनी माँ के लिए एक फर्स्ट क्लास का···'

'ठीक है'—कहकर मैनेजर ने उन विजिटिंग कार्ड्स पर नज़र डाली। एक पर लिखा था—'कुन्दनकुमार आफ राजापुर'—दूसरे पर लिखा था—'कुमारी अम्बु आफ बैरहना'—नाम पढ़कर मैनेजर के मुख पर प्रसन्नता झलक उठी। उसने बेयरा से कहा—'उन लोगों को सम्मानपूर्वक लाओ।'

बेयरा चला गया और थोड़ी ही देर में कुन्दनकुमार, अम्बु तथा उनकी माँ को लिए हुए आ पहुँचा। मैनेजर ने कुमार से हाथ मिलाया और नम्रतापूर्वक बोला—'सर ! फर्स्ट क्लास के रूम्स तो खाली नहीं हैं। ऊपर की मंज़िल में दो 'प्राइवेट रूम्स' खाली हैं। उन्हीं में आप लोगों का प्रबन्ध हो जायेगा। चार्जेज़ माडरेट हैं। फर्स्ट क्लास से कुछ ही ज़्यादा लगेगा।'

'कोई हर्ज़ नहीं'—कुन्दनकुमार ने कहा।

मैनेजर बेयरा से बोला—'आप लोगों को थर्ड स्टोरी के रूम नम्बर सिक्स और सेविन में रहने का प्रबन्ध कर दो। किसी बात की तकलीफ न हो।'

बेयरा ने कुन्दनकुमार के सामने झुककर कहा—'हुज़ूर ! आप लोग हमारे साथ तशरीफ लावें।' कुन्दनकुमार, अम्बु और उसकी माँ बेयरा के साथ चले गए। उनके जाते ही मैनेजर एक क्रूर हँसी हँसा। तत्पश्चात् अपने-आप ही बोला—'माल तो दोनों अच्छे हैं। कुन्दन-कुमार के पास रुपया है, तो अम्बु के पास रूप। दोनों को हाथ से निकल जाने देना ठीक न होगा।'

इतने में ही कुन्दनकुमार आदि के ठहरने का प्रबन्ध करके बेयरा लौट आया और मैनेजर को सलाम कर खड़ा हो गया। मैनेजर ने उससे पूछा—'उनके ठहरने का प्रबन्ध हो गया ?'

'जी हुजूर ! कुन्दनकुमार को रूम नम्बर सिक्स में और अम्बु एवं उनकी माँ को रूम नम्बर सेविन में ठहरा दिया है।'—बेयरा ने उत्तर दिया।

मैनेजर कहने लगा—'देखना ! दोनों शिकार अच्छे हैं, उन पर कड़ी नजर रखना।'

'जो हुक्म हजूर !' कहकर बेयरा चला गया।

'ब्यूटी होटल' का मैनेजर देखने में बड़ा ही सज्जन एवं मिलनसार प्रतीत होता था, परन्तु वास्तव में वह था एक भयानक नर-पिशाच। होटल में किसी मालदार आदमी या किसी रूपवान युवती को आया हुआ देखकर वह उन्हें होटल की तीसरी मंजिल पर बने हुए 'प्राइवेट-रूम' में ठहराया करता था, और अवसर पाते ही उन्हें लूटकर नष्ट कर देता था। उसके इस कार्य में होटल के मालिक जान गिलबर्ट का भी हाथ रहता था। तीसरी मंज़िल पर केवल दो ही कमरे थे, जिनमें एक में इस समय कुन्दनकुमार विराज रहे हैं और दूसरे में अम्बु अपनी माँ के साथ ठहरी हुई है। दोनों कमरे अगल-बगल में ही हैं।

कुन्दनकुमार अथवा अम्बु—दोनों में से किसी को भी सन्देह न हुआ कि मैनेजर की वक्रदृष्टि उन पर पड़ चुकी है। उन दोनों ने तो सब प्रकार के आराम की वस्तुएँ पाकर मैनेजर की प्रशंसा ही की।

मैनेजर अब भी अपने आफिस में बैठा हुआ, अम्बु के रूप की चिन्तना कर रहा था, इतने में ही बेयरा ने आकर होटल के मालिक जॉन गिलबर्ट के आने का सन्देश सुनाया। दूसरे ही क्षण मैनेजर के कमरे में एक लम्बे-चौड़े अंग्रेज़ ने प्रवेश किया। यही हैं जॉन गिलबर्ट 'ब्यूटी होटल' के मालिक। मैनेजर ने खड़े होकर जान गिलबर्ट से हाथ मिलाया और उन्हें सम्मानपूर्वक एक कुर्सी पर बैठाकर बोला—'गुड लक सर ! आज आप अच्छी सायत से आये हैं।'

'क्या कोई नया शिकार आया है?' जॉन गिलबर्ट ने पूछा। यद्यपि वे अंग्रेज़ थे, फिर भी हिन्दुस्तानी अच्छी तरह बोल लेते थे।

'यस सर !' मैनेजर कहने लगा 'आज आपके सामने मैं एक ऐसा शिकार पेश करूँगा, जैसा आपने अब तक देखा न होगा। उसका

नाम है अम्बु, आज ही अपनी माँ के साथ आई है।'

'ठीक है मैनेजर! मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। तुम मेरी दिलबस्ती के लिए जो कुछ करते हो, उससे मैं…'

'यह सब आपकी इनायत है हुजूर!'

जॉन गिलबर्ट 'ब्यूटी होटल' के मालिक थे। होटल की आलीशान बिल्डिंग एवं साज-सजावटके सब सामान उन्हींकी सम्पत्ति थी। वे बम्बई के प्रसिद्ध लोगों में से थे। उनका डेरा 'ब्यूटी होटल' से दो फर्लांग की दूरी पर एक दूसरे आलीशान मकान में था। वह मकान भी स्वयं उन्हीं का था। वे बम्बई में बहुत दिनों से रहते आ रहे थे। सब कुछ था, फिर भी उनका चाल-चलन बहुत खराब था। 'ब्यूटी होटल में आने वाली युवतियों पर बहुधा छिपे तौर से जो अत्याचार होता था, उसमें जॉन गिलबर्ट का सबसे बड़ा हाथ रहता था। लेकिन जनता उनके इस दुराचार से सर्वथा अनभिज्ञ थी। क्योंकि जिन-जिन युवतियों के साथ उनका व्यभिचार होता था, वे बहुधा उच्चकुल की होती थीं और जनता में जॉन गिलबर्ट की शिकायत कर, वे अपनी बदनामी करना नहीं चाहती थीं। उनकी इस कमज़ोरी से लाभ उठाकर, जॉन गिलबर्ट, अपनी इन्द्रियों की तुष्टि के लिए, भोली-भाली युवतियों का सुहाग लूटते थे। भ्रष्ट करते थे। और वे ललनाएँ? …वे ललनाएँ उनके द्वारा अपना सर्वस्व अपहरण कराकर चुपचाप चली जाती थीं। इसके सिवा वे कर ही क्या सकती थीं? एक अंग्रेज़ के सामने उनकी कौन सुनता?

पाँच

'ब्यूटी होटल' के 'डाइनिंग हाल' (भोजन का कमरा) का दृश्य भी अतीव सुन्दर है। दीवालों पर बढ़िया चित्रकारी की हुई है। चारों ओर सुन्दर 'आयल पेन्ट्स' टँगे हैं। बीच में लटकते हुए कई झाड़ हाल की शोभा को और बढ़ाये हैं। जिधर ही दृष्टि जाती है, उधर ही सुन्दरता की उत्कृष्ट सीमा दृष्टिगोचर होती है। 'हाल' भर में सैकड़ों संगमरमर की मेज़ें लगी हैं और सामने ही नर्तकियों के लिए बहुमूल्य रंगमंच सजाया गया है।

इस समय 'हॉल' भोजनार्थियों से पूरा भरा हुआ है। संगमरमर की मेज़ों के पास बैठे हुए नाना प्रकार के यात्रीगण भोजन करने में

निमग्न हैं। कहीं-कहीं शराब का दौर चल रहा है। रंगमंच पर खड़ी हुई तीन नर्तकियाँ अपनी मनोहर नृत्यकला द्वारा दर्शकों का मनोरंजन कर रही हैं। दर्शकों के मुँह से अनायास ही वाह-वाह निकल रहा है। तीनों नर्तकियाँ सौन्दर्य में अद्वितीय हैं, फिर भी बीच वाली नर्तकी, जिसकी अवस्था अभी मुश्किल से 'स्वीट सिक्सटीन' होगी, असीम सुन्दरी है। उसकी बल खाती हुई पतली कमर, उठे हुए पुष्ट वक्षःस्थल, एवं बड़े-बड़े मदभरे नैन— यह सब देखकर दर्शकों के शरीर में विद्युत-रेखा-सी दौड़ रही है। वह नर्तकी भी सुमधुर कटाक्षों द्वारा सभी पर अपना वार चला रही है। तीनों नर्तकियों ने बहुत ही महीन जालीदार पोशाक पहन रखी है जिसके भीतर से उनके शरीर का अनुपम सौन्दर्य छन-छनकर बाहर निकल रहा है।'

रंगमंच के पास ही एक सुन्दर मेज पर कुन्दन कुमार तथा अम्बु आदि भोजन करने में तल्लीन थे! कुन्दन कुमार कभी-कभी आँख उठाकर उन नर्तकियों की ओर देख लेते थे। वे नर्तकियाँ भी अधिक उन्हीं की ओर आकृष्ट थीं। क्योंकि उनकी सुन्दरता ऐसी थी जैसे प्रायः पुरुष जाति को दुर्लभ है। सुन्दर राजसी वस्त्रों में वे उस समय साक्षात् कामदेव (God of Love) सदृश लग रहे थे। 'हॉल' में प्रायः जितनी भी स्त्रियाँ थीं, सभी कुन्दन कुमार की ओर भर नेत्र से देख रही थीं और अम्बु के भाग्य पर ईर्ष्या कर रही थीं, जो कुमार के बगल में ही बैठी हुई भोजन कर रही थीं। कुमार की सुन्दरता एवं व्यक्तित्व में कुछ ऐसा प्रभाव था, जो लोगों को शीघ्र ही अपने प्रति आकृष्ट कर लेता था।

थोड़ी देर के लिए बीचवाली नर्तकी की आँखें कुन्दन कुमार की आँखों से जा मिलीं। नर्तकी की आँखें प्रकाशमय हो उठीं। उसे कुन्दन कुमार में कुछ ऐसा आकर्षण दृष्टिगोचर हुआ कि वह अपने को संभाल न सकी। उसका दिल न जाने क्यों तड़फड़ा उठा। उसे बेचैनी मालूम पड़ने लगी। उसने कुन्दन कुमार की ओर दीनतापूर्वक देखा, और कलेजे पर हाथ रखकर अपने दर्दे दिल की उन्हें सूचना दे दी, परन्तु कुन्दन कुमार ने घृणापूर्वक अपनी दृष्टि उस ओर से फेर ली। वे नर्तकियों से घृणा करते थे। अपनी सुन्दर रूपराशि में भोले-भाले युवकों को फँसाकर कुत्सित जीवन व्यतीत करना—यह उनकी समझ में एक ऐसा पाप था, जिसका प्रतिकार ही नहीं।

'हॉल' के एक कोने में खड़े होटल के मैनेजर एवं जॉन गिलबर्ट

आपस में कुछ काना-फूसी कर रहे थे। मैनेजर कह रहा था—'देखिये सर! स्टेज के नजदीक मेज के पास जो बैठी है, वही अम्बु है और उसकी दाहिनी बगल में उसकी माँ है और बायीं बगल में कुन्दन कुमार हैं।

'ओह! मोस्ट ब्यूटीफुल मैनेजर!' जॉन गिलबर्ट ने अपना हाथ मलते हुए कहा।

मैनेजर कहने लगा—'मैं शाम को पूरा इन्तज़ाम कर रखूँगा सर। आप जरूर आइएगा; तब देखियेगा कि इण्डियन ब्यूटीज, वैस्टर्न ब्यूटीज़ से किसी बात में कम नहीं।'

'अच्छा! अच्छा! मैं ज़रूर आऊँगा'—जॉन गिलबर्ट ने कहा। वे अम्बु की सुन्दर रूपराशि देखकर ठगे-से रह गए थे। वे सोच रहे थे कि कहाँ आधुनिक विज्ञान की सहायता से अपना रूप सँवारे हुए अंग्रेज़ युवतियाँ और कहाँ प्रकृति के कोमल करों द्वारा निर्मित यह अनुपम रूपराशि।

मैनेजर और जॉन गिलबर्ट हॉल से बाहर चले गए। स्टेज पर की दो नर्तकियाँ भी चली गईं, केवल बीच वाली नर्तकी रह गई। वह रंगमंच पर से उतरकर दर्शकों के बीच में आकर खड़ी हो गई और इधर से उधर मेज़ों के पास जाकर दर्शकों का मनोरंजन करने लगी, वह कभी किसी के हाथ की मधुप्याली लेकर अपने होठों से लगाकर उसे दे देती, कभी किसी के गाल छूकर उस पर हल्की चपत जमा देती। यही उसका नित्य का धन्धा था। परन्तु इस प्रकार का विलास-पूर्ण जीवन व्यतीत करती हुई भी, वह पूर्णतया प्रसन्न नहीं थी। उसके मुँह पर सदैव एक प्रकार की खिन्नता विराजमान रहती थी। जब वह हँसती थी, तो उसके साथ करुणा का एक अविरल स्रोत प्रवाहित हो उठता था। परन्तु उसके जीवन में क्या वैचित्र्य था, इसे अभी कोई न जान सका था।

दर्शकों को पूर्ण रूप से लुभाती हुई वह नर्तकी उस जगह आ पहुँची, जहाँ कुन्दन कुमार आदि बैठे हुए थे। नर्तकी ने आगे बढ़कर कुन्दन कुमार का हाथ पकड़ दिया और उसके सुन्दर मुख पर अपने मदभरे नैन गढ़ा दिए। कुन्दन कुमार ने अपना मुँह ऊपर उठाया। उन्होंने देखा कि नर्तकी के सुन्दर मुख पर एक अद्‌भुत रूपछटा विराजमान है। परन्तु यह क्या? यह उनकी आँखों का भ्रम है या उस नर्तकी के नेत्रों के कोरों पर दो बूंद आंसू दिखाई पड़ रहे हैं। कुमार को महान्

आश्चर्य हुआ। क्या इस प्रकार का घृणित जीवन व्यतीत करना उसके मनोकूल नहीं है ?

कुमार ने अपने हाथों को छुड़ाने की कोशिश न की। नर्तकी के आँसुओं ने उन्हें पिघला दिया। नर्तकी आकर उनकी बगल की कुर्सी पर बैठ गई। कुछ देर तक दोनों मौन बैठे रहे। तत्पश्चात् नर्तकी ने कहा, 'आप शायद यहाँ पहले-पहल आए हैं ?'

'हाँ ! यह मेरा पहला ही मौका है।'

'आपका मकान कहाँ है ?' नर्तकी ने पूछा।

'मिर्जापुर शहर से नौ मील पूरब राजापुर ग्राम में। मैं वहाँ के जमींदार का पुत्र हूँ। मेरा नाम कुन्दन कुमार है।'

'कुन्दन कुमार', नर्तकी ने पूछा।

नर्तकी बोली, 'मुझे लोग अदा के नाम से पुकारते हैं।'

'नाम तो प्यारा है', कुन्दन कुमार ने मुस्कराकर कहा। उसी समय नर्तकी के नेत्रों से आँसू टपककर कुन्दन कुमार के हाथों पर गिर पड़े। कुमार चौंक उठे।

× × ×

अपने प्राइवेट आफिस में ब्यूटी होटल का मैनेजर बैठा है। सामने ही वह नर्तकी भी बैठी है, जिसे हम 'अदा' के नाम से पाठकों को परिचित करा चुके हैं। मैनेजर कह रहा है, 'अदा तुम होटल की सबसे खूबसूरत नाज़नीन हो। आज मैं तुम्हें एक कठिन काम सौंपना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम कुन्दन कुमार को अपनी रूपराशि का शिकार बनाकर उसे अपने ऊपर आशिक कर लो और उस पर अपना जादू फेरकर उसका धन हड़प लो। मेरी यही आज्ञा है। इससे अक्षरशः पालन करने से तुम्हें बहुत कुछ पुरस्कार मिलेगा और इन्कार करने पर तुम निर्दयतापूर्वक मसल दी जाओगी। समझीं।'

मैनेजर एक क्रूर हँसी हँसकर पुनः कहने लगा, 'मैं जानता हूँ कि कुन्दन कुमार बड़े घर का लड़का है और उसके पास इस समय कई हज़ार रुपया मौजूद है। अगर तुम उसे अपनी भरी देह का मजा चखाकर उसे अपने वश में कर सको और उसकी सम्पत्ति अपने कब्जे में करके मुझे दे सको तो मैं तुम पर अतीव प्रसन्न रहूँगा।'

'मगर मैं ऐसा काम नहीं कर सकती मैनेजर साहब !' अदा दीनतापूर्बक बोली।

'तुम्हें ऐसा करना ही होगा अदा।' मैनेजर बोला, 'वरना मैं फूल

की तरह तुम्हें कुचल दूंगा। यौवन-मद से परिपूर्ण तुम्हारे इस ललितांग शरीर को कामी कुत्तों से नुचवा कर नष्ट-भ्रष्ट कर दूंगा।'

'अगर मैं अब भी इन्कार करूँ तो ?' अदा ने हठपूर्वक कहा।

'नादान लड़की !' मैनेजर कहने लगा—'तब तेरे लिए यह होगा।'

मैनेजर ने जेब से एक भयानक रिवाल्वर निकालकर अदा को दिखाया। अदा काँप उठी। मैनेजर चला गया। अदा वहीं ज़मीन पर बैठ गई। उसकी आँखें छलछला आईं। वह आप-ही-आप बड़बड़ाने लगी—'कुन्दन कुमार को मैं चाहती हूँ हृदय से। मैं उन पर मैनेजर का चक्र कदापि न चलने दूंगी। मैं उन्हें बचाऊँगी।'

यही सब अदा सोच रही थी। अदा की अवस्था अभी केवल पंद्रह वर्ष की थी। विधाता ने इसे अद्‌भुत रूपराशि प्रदान की थी। उसकी आँखों में जादू था, होंठों में आक्रमण था, मुस्कराहट में बिजली थी और उसकी उठी हुई छातियों में भरा था एक अद्‌भुत शक्तिशाली हलाहल, जिसे पान करते ही मनुष्य पागल हो जाता है। ऐसी थी उसकी सुन्दरता।

छः

एक महीन कपड़े की बनी हुई चोली, जिससे वक्षःस्थल का केवल अग्रभाग ढँका हुआ है; और एक अन्डरवीयर तथा ऊपर से महीन जालीदार कपड़े का ढीला लहँगा पहने हुए अदा 'ब्यूटी होटल' के मैनेजर के सामने खड़ी है। उसके हाथ में शराब का एक खूबसूरत प्याला है, जो लबालब शराब से भरा है। मैनेजर एक आराम कुर्सी पर बैठा हुआ लोलुप दृष्टि से अदा की रूपराशि का अवलोकन कर रहा है। इस समय अदा का नग्न रूप गज़ब ढा रहा है। उसकी छाती का उभार बिजली गिरा रहा है।

अदा ने शराब का प्याला मैनेजर के होंठों से लगा दिया, मैनेजर गट-गट कर उसे पी गया और जोश के साथ बोला, 'और···और दो।' अदा ने दूसरा प्याला भर कर उसके होंठों पर रख दिया। इस प्रकार कई प्याले खाली हो गए। मैनेजर पर शराब ने पूर्ण रूप से अधिकार जमा लिया। वह लड़खड़ाता हुआ उठा! उसने अदा को पकड़कर

अपने पास खींच लिया और उसे लिए-लिए आराम कुर्सी पर गिर पड़ा। अदा के मुँह से 'सी' की आवाज निकल पड़ी, परन्तु उसने अपने को छुड़ाने का प्रयत्न किया। आज से पहले पचासों बार उसे इस प्रकार मैनेजर की घृणित-वासना-पूर्ति करनी पड़ी थी और वह भली प्रकार जानती थी कि मैनेजर की इच्छाओं से इन्कार करना कितना भयंकर होता है।'

परन्तु अदा कुछ न बोली। वह मैनेजर की गोद में निश्चेष्ट पड़ी हुई थी, मानो वह कोई पत्थर की पुतली हो। इसी समय कमरे का दरवाज़ा खुला और झूमते हुए जॉन गिलबर्ट ने प्रवेश किया। अदा और मैनेजर उठ खड़े हुए। जॉन गिलबर्ट कुर्सी पर बैठ गए। उस समय उन्होंने बेहद शराब पी थी, जिससे उनकी आँखें अंगार-जैसी लाल थीं। मैनेजर की आज्ञा से अदा ने एक प्याला भरकर जॉन गिलबर्ट के आगे कर दिया। जॉन गिलबर्ट उसे गले के नीचे उतार कर बोले, 'अदा! इधर आ!'

अदा जाकर उनके सामने खड़ी हो गई। उस समय उसका हृदय धड़क रहा था। वह सोच रही थी कि हे भगवान्! इन दो शराबी शैतानों के बीच में आज उसकी क्या दशा होगी? जॉन गिलबर्ट ने अदा से कहा, 'आज तुझे भी शराब पीनी होगी!'

'मैं शराब नहीं पीती साहब।' अदा ने कहा।

'तुझे पीनी पड़ेगी,' कहकर जान गिलबर्ट ने एक प्याला शराब भर कर अदा के होंठों से लगाया। अदा ने पीने से सख्त इन्कार किया। इस पर जॉन गिलबर्ट के क्रोध का पारावार न रहा। ओह! एक नाचने वाली छोकरी उनकी आज्ञा की अवहेलना करे? यह उन्हें असह्य हो उठा।

अब तक मैनेजर एक किनारे खड़ा हुआ यह सब दृश्य देख रहा था। अब अदा को तकलीफ होती जानकर वह आगे बढ़ा और जॉन गिलबर्ट से बोला—'सर! छोड़ दीजिए इसे। यह छोकरी शराब नहीं पीती। उसे तंग न कीजिये? आज आपके लिए तो दूसरा ही शिकार है, क्या आप भूल गये?'

जान गिलबर्ट अदा को छोड़कर उठ खड़े हुए और बोले 'ओह! वह बात तो मैं भूल ही गया था। अच्छा! उसका सब इन्तज़ाम तो ठीक है न?'

'यस सर! अभी सब ठीक हुआ जाता है'—इतना कहकर मैनेजर

ने अदा से कहा—'अदा तुम जाओ और कुन्दन कुमार पर जादू चलाओ। याद रखो ! मेरी आज्ञा का अक्षरशः पालन हो।'

अदा ने अपने वस्त्र ठीक किये, और कमरे के बाहर हो गई ! उसके जाते ही मैनेजर ने बेयरा को बुलाया। बेयरा आकर अदब के साथ खड़ा हो गया। मैनेजर ने उससे पूछा, 'क्या समाचार है ?'

'कुन्दन कुमार सो गये हैं। अम्बु और उसकी माँ अभी तक अपने कमरे में जाग रहीं हैं। अब जो हुक्म हो किया जाय,' बेयरा ने कहा।

'तुम जाकर अम्बु की माँ को वहाँ से किसी बहाने हटा देने का प्रबन्ध करो। सब काम सावधानी से करना, ताकि कुन्दन कुमार को ज़रा भी शक न हो। 'वायलेट पहलवान' को कह देना कि वह कुन्दन कुमार के दरवाज़े पर रिवाल्वर लेकर पहरा दे।' मैनेजर ने कहा।

'जो हुक्म,' कहकर बेयरा चला गया।

अपने कमरे में कोच पर बैठी हुई अम्बु और उसकी माँ कुछ बात-चीत कर रही थीं कि बेयरा आ पहुँचा। उसने झुककर अदब के साथ अम्बु की माँ से कहा, 'आपको मैनेजर साहब ने इसी वक्त याद किया है।'

'क्या कोई ज़रूरी काम है ?' अम्बु की माँ ने पूछा।

'हाँ,' काम ज़रूरी है। आप इसी वक्त मेरे साथ चलने की मेहरबानी करें,' बेयरा ने कहा। अम्बु की माँ उसके साथ चली। कुछ ही दूर जाने पर बेयरा एक कोठरी के सामने पहुँचा। और अंबु की माँ से बोला, 'आप भीतर चली जायें। मैनेजर साहब इसी कमरे में हैं।'

उस कमरे के दरवाज़े भिड़काए हुए थे, केवल थोड़ी-सी दरार दीख रही थी, जिससे बिजली की रोशनी छनकर बाहर आ रही थी। अम्बु की माँ ने दरवाज़ा खोला और भीतर चली गई। उसके भीतर प्रवेश करते ही बेयरा ने बाहर से दरवाज़ा बन्द कर सांकल लगा दी। उसके बाद मैनेजर के पास आकर बोला, 'सब काम ठीक हो गया हजूर ! अम्बु की माँ को कोने वाली कोठरी में बन्द कर आया हूँ।'

'अच्छी बात है। अब तुम जा सकते हो,' मैनेजर ने कहा। बेयरा चला गया।

× × ×

अपनी माँ के चले जाने पर अम्बु कमरे में अकेली रह गई। वह कुछ देर तक एक छोटी-सी पुस्तक पढ़ती रही, परन्तु एकाएक उसका जी बेचैन होने लगा। उसकी छाती ज़ोरों से धड़क उठी। उसे न जाने क्यों कुछ-कुछ भय-सा लगने लगा। वह उठी, और भीतर से किवाड़ बन्द कर लेने के लिए दरवाज़े की ओर बढ़ी, परन्तु एकाएक वह प्रसन्न हो गई। बीच दरवाज़े में जान गिलबर्ट खड़े थे। उनकी आँखें लाल थीं, शरीर शिथिल था, पैर लड़खड़ा रहे थे। अम्बु ठक-सी रह गई। जान गिलबर्ट ने भीतर आकर किवाड़ बन्द कर दिए और अम्बु की ओर बढ़ते हुए बोले, 'अम्बु ! डरो नहीं। जिसके पास भरी जवानी है, परी-सा हुस्न है, भोला चेहरा है···उसे किसी से डरने की ज़रूरत नहीं। अम्बु ! आ जाओ। मेरी आगोश में बैठकर इस भरी जवानी का मज़ा लूटो।'

जान गिलबर्ट ने बढ़कर अम्बु की कलाई पकड़ ली। अम्बु ने अपने को छुड़ाने की कोशिश की, परन्तु उस अंग्रेज़ के सामने उसकी एक न चली। बेचारी अम्बु विवश थी। वह अबला थी। और पुरुष की शक्ति का मुकाबला करना उसके लिए असम्भव था। अन्त में जान गिलबर्ट ने उसे उठाकर कोच पर पटक दिया। अम्बु के मुख से ज़ोरों की एक चीख निकल पड़ी।

× × ×

बगल के कमरे से आती हुई चीख की आवाज़ सुनकर कुन्दन कुमार की नींद उचट गई। वे उठकर बैठ गए। उसी समय उनके कमरे के दरवाज़े पर किसी ने बाहर से थपकी दी। कुन्दन कुमार ने दरवाज़ा खोलने के लिए पास ही लगी हुई बिजली का बटन दबा दिया। दरवाज़ा अपने-आप खुल गया और एक अत्यन्त महीन पोशाक पहने हुए अदा ने वहाँ प्रवेश किया। वह आकर कुमार के सामने खड़ी हो गई।

'तुम यहाँ क्यों आई हो !' कुमार ने पूछा।

'बाहर दिल नहीं लगा, इसलिए···' अदा ने हिचकिचाते हुए कहा।

कुन्दन कुमार कहने लगे, 'क्या यहाँ तुम्हारा दिल लग जायेगा ? अदा ! पत्थर से तुम्हारा दिल नहीं लग सकता। मैं पत्थर का बना हूँ। मुझे पिघलाना व्यर्थ है। वह जो तुम अपना अर्द्धनग्न रूप लेकर मेरे पास आई हो, वह मुझे पागल नहीं बना सकता। मैं देख रहा हूँ—

तुम्हारा रूप सुन्दर है, तुम्हारी आँखें रसीली हैं और तुम्हारे उरोज गजब ढा रहे हैं। इसके अतिरिक्त मैं एक चीज़ और देख रहा हूँ, वह है तुम्हारा 'काला दिल' वेश्याओं का दिल काला होता है…उसी से वे सैकड़ों युवक की जवानी नष्ट कर देती हैं। अदा ! अपनी इस छोटी-सी अवस्था में मैंने दुख-ही-दुख का अनुभव किया है। मैं जानता हूँ कि यह संसार सृष्टि-रचयिता का मायाजाल…'

'आप मुझे वेश्या समझ रहे हैं कुमार !'—अदा बोली, 'वास्तव में मैं वेश्या ही हूँ । लेकिन अपने मन से वेश्या नहीं बनी हूँ। मुझे विवश होकर यह कार्य करना पड़ता है। मेरा इतिहास एक करुणाजनक गाथा है, उसे सुनकर आपकी आँखें छलछला आयेंगी। यदि आप जानते होते कि कैसी विकट परिस्थिति में पड़कर, कैसी अवहेलना तथा कष्ट झेल-कर एवं किस प्रकार समाज के फौलादी पंजों में अपने को जकड़ी पाकर मैंने यह पेशा अख्तियार किया है…तो आप कभी मुझ पर लाँछन न लगाते। जब से घर से निकली हूँ, तभी से व्यभिचारियों द्वारा सताई जा रही हूँ। हृदय सदैव हाहाकार करता रहता है। फिर भी अब मैं असहाय हूँ। लाचार होकर यह घृणित जीवन व्यतीत कर रही हूं। मेरे साथ सहानुभूति प्रदर्शित करने वाला कोई नहीं। मेरा दिल छटपटा-छटपटा कर ऐसी जगह ढूँढ़ रहा है, जहाँ उसे थोड़ा-सा आराम मिले। वह जगह अब मुझे मिल गई है, वह है तुम्हारा दिल। कुमार ! मेरे दिल को अपने दिल में जगह दो।'

'अदा !'

'कुमार ! अगर दिल की भाषा समझ सकते हो तो इधर देखो ! यह दिल किस घबराहट के साथ धक-धक कर रहा है। यह छाती वर्षों से किसी को अपने से लगा लेने के लिए तड़प रही है। ये आँखें कटोरों-भर आँसू गिरा करके भी अभी नहीं सूखी हैं। यह सब किस लिए हैं कुमार ? यह सब प्रेम की जलन है। वर्षों से हृदय किसी व्यक्ति की खोज में था, जो उसे पूर्ण रूप से शान्ति पहुँचा सके। आज वह व्यक्ति मिल गया है। कुमार! अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती। तुम…' कहती हुई अदा ने आगे बढ़कर कुमार को अपने नाजुक बाजुओं मे जकड़ लिया। उसी समय बगल के कमरे से पुनः ज़ोरों की चीख सुनाई पड़ी। कुन्दन कुमार चौंक पड़े—'हैं ! अम्बु के कमरे से चीख की आवाज़ें कैसे आ रही हैं ? क्या उस पर कोई आफत आई है ? ज़रा देखूँ तो सही।'

इतना कहते हुए कुन्दन कुमार दरवाजे की ओर बढ़े, परन्तु अदा ने उनका हाथ पकड़ लिया और बोली, 'तुम कहाँ जा रहे हो कुमार? अब तुम अम्बु को नहीं बचा सकते।'

'आखिर बात क्या है अदा?' कुमार ने पूछा।

'इस समय अम्बु पर दुराचार हो रहा है कुमार! जैसा कि एक दिन मुझ पर भी हुआ था। इस होटल का मालिक जान गिलबर्ट बड़ा ही दुष्ट है। यहाँ कोई भी युवती ऐसी नहीं आती, जो उसके हाथ से बचकर निकल जाय।' अदा ने कहा।

'लेकिन तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते कुमार!' अदा पुनः बोली।

सुनते ही कुमार पर वज्र गिर पड़ा। संसार की एक सभ्य कहाने वाली जाति क्या इतनी नीच हो सकती है? अंग्रेजों का क्या इतना नैतिक पतन हो गया है कि वह पराई बहू-बेटियों पर कुदृष्टि डालकर उन्हें नष्ट-भ्रष्ट करें। शासन का सेहरा बाँधे हुए जो हम पर हकूमत करते हैं, क्या रात्रि के सघन अंधकार में इसी प्रकार का व्यभिचार किया करते हैं?

'वह चाहे कोई भी हो, मैं उस शैतान की गरदन मरोड़ दूंगा!' कहते हुए कुन्दन कुमार दरवाज़े की ओर बढ़े, और दरवाज़ा खोलकर बाहर आ गए। ज्यों ही उन्होंने कमरे के बाहर पैर रखा, उनके कानों में एक गम्भीर आवाज़ सुनाई पड़ी, 'नादान युवक! होटल के कामों में दखल न दे। अपनी जान का ग्राहक न बन! जा! अपने कमरे में ऐशकर।'

'अगर मैं ऐसा न करूँ तो?' कुमार के मुँह से निकला।

'तो भेजा-भेजा उड़ जायेगा,' अँधेरे में से आवाज़ आई और उसके साथ ही कोई ठंडी-सी काली चीज कुमार के माथे से जा लगी। कुमार ने अन्दाज़ा लगाया कि वह रिवाल्वर की नली है। कुमार काँप उठे। वे कुछ क्षण तक कुछ सोचते हुए खड़े रहे। तत्पश्चात विद्युत-वेग से उस रिवाल्वर वाले मनुष्य पर टूट पड़े। परन्तु वे कुछ न कर सके, क्योंकि उसी समय पीछे से किसी ने सर पर किसी कठोर वस्तु से आघात किया और तुरन्त ही उनका शरीर चेतनाहीन होकर भूमि पर गिर पड़ा। आघात करने वाले ने उन्हें उठाकर उनकी कोठरी के भीतर कर दिया और अदा से कहा, 'इनकी देखभाल करो।' अदा कुमार के पास बैठ गई और उनके मस्तष्क को पानी से तर करने लगी। धीरे-

धीरे कुमार ने अपनी आँखें खोलीं।

'क्या हुआ ?' अदा ने पूछा।

'कुछ नहीं हो सकता। बाहर कोई रिवाल्वर लिए खड़ा है।' कुमार ने कहा, और धीरे से उठकर बैठ गये। अदा भी उनकी बगल में उनसे सटकर जा बैठी। बगल के कमरे से अम्बु की चीख की आवाज़ें अभी तक ज़ोरों से आ रही थीं। कुन्दन कुमार का मन रह-रहकर उद्विग्न हो उठता था।

जिस ओर अम्बु का कमरा था, उस ओर की दीवार में ऊँचे पर एक चौड़ा मोखा दिखाई पड़ रहा था। कुमार ने कोच पर खड़े होकर उस मोखे में सर डाल दिया और इधर का दृश्य देखने लगे। उन्होंने देखा, सारा बिस्तर रक्त से लाल हो उठा है।

भयानक दुराचार देखकर कुमार के मुख से एक चीख निकल गई और वे चेतनाहीन होकर कोच पर गिर पड़े। अदा घबड़ा उठी। उसने सुराही से पानी डालकर पुनः कुमार के मुख पर छींटा देना शुरू किया। थोड़ी देर बाद कुमार ने अपनी आँखें खोलीं। अदा ने एक गिलास में थोड़ी-सी शराब डालकर उनके आगे कर दी।

'यह क्या, शराब ?'

अदा बोली, 'पी लो कुमार। शराब रंज व गम को भुलाने वाली चीज़ है। इसे पीने से तुम्हारी तबीयत ठीक हो जायगी। इस समय तुम्हारा मन उद्विग्न है…'

'फिर भी मैं शराब नहीं पी सकता !' कुमार ने कहा।

'तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है कुमार।'

'सो तो मैं भी देख रहा हूँ। भला भीषण दुष्कृत देखकर कौन पागल न हो जायगा। मेरे देखते-ही-देखते एक कोमल कलिका कुचल दी गई, मेरे नेत्रों के सामने ही मानवता पर कलंक लगाने वाले उस अंग्रेज ने उसका सतीत्व लूटा, फिर भी मैं कुछ न कर सका। उफ ! इस समय मानसिक उद्वेग से मैं पागल हुआ जा रहा हूँ। अगर यही हाल रहा तो मैं सचमुच पागल हो जाऊँगा। यदि तुम्हारे पास कोई दवा हो तो मुझे कुछ देर के लिए बेहोश कर दो। मैं कुछ देर के लिए…' कुन्दन कुमार हाँफते-हाँफते बोले।

अदा ने उन्हें कोच पर लिटा दिया और उनके सर को अपनी गोद में लेकर बोली, 'सो जाओ कुमार ! सब बातों की याद अपने दिल से निकाल दो।'

अदा कुमार का मन एकाग्र करने के लिए एक गाना गुनगुनाने लगी। उसके मधुर कंठ से निकले हुए गानों को कुमार दत्तचित्त से सुनने लगे। अदा गा रही थी—

यूँ ही मुझे बरबाद करोगे, गैरों का दिल शाद करोगे।
फिर न मिलेगा चाहने वाला, तब किसको तुम याद करोगे ?

'अदा ! यह तुम...' कुन्दन कुमार बोले।

'चुप रहो कुमार ! दिल जले की आह सुनते जाओ। इतना कहकर अदा पुनः गाने लगी।

कब से खड़ा है चाहने वाला, बोलो कुछ खैरात करोगे।
जीते जी अब भूल गये हो, मरने पै क्या याद करोगे ?
यूँ ही मुझे बरबाद करोगे।

अदा के गले में वह जादू था, जिसने कुमार को शीघ्र ही मदहोश बना दिया। उनकी आँखें ढँप गईं और शीघ्र ही वे प्रगाढ़ निद्रा के वशीभूत हो गये। जब उनका आँखें खुलीं, उस समय भी अदा उनके सर को अपनी गोद में रखे हुए बैठी थी। कुमार ने घड़ी पर दृष्टि डाली, देखा सुबह के चार बज चुके थे। तो क्या वे छह घण्टे तक सोते रहे ?

'अदा ! तुम अभी तक जाग रही हो ? मुझ अभागे के प्रति तुम्हारा प्रेम क्यों ?' कुमार ने कहा और धीरे से उठकर चारपाई पर बैठ गये। अदा कुछ न बोली। उसने सर नीचा कर लिया। कुमार ने ठुड्डी पकड़कर अदा का चेहरा ऊपर उठाया और बोले, 'अदा ! तुमने मुझे जीत लिया। तुम मेरी हो।' कहकर कुमार ने उसे अपने पास खींच लिया। अदा प्रेम से विह्वल हो गई। उसकी आँखों से आँसू बह चले।

'आँसू ?'—कुमार बोले, 'अदा ! जब से मैं यहाँ आया हूँ, मैंने तुम्हारे नेत्रों में आँसू ही देखे। क्या इन अश्रुबिन्दुओं में तुम्हारी कोई करुणाजनक गाथा छिपी है ?'

'ये आँसू नहीं हैं कुमार ! ये हैं मेरे जिगर के टुकड़े। भयानक विभीषिका में दिन-रात जलते रहने के कारण मेरे कलेजे का खून नेत्रों द्वारा बह रहा है। मानव-जाति की दुर्दान्त पैशाचिकता का अनुभव करके, मैं दिन-रात रोया करती हूँ। जो मानव-समाज इतना घृणित है; जो नन्ही बालिकाओं का सुहाग केवल अपने क्षणिक सुख के लिए नष्ट-भ्रष्ट कर देता है; जो अपने मायाजाल में भोली-भाली कुमारियों को फंसाकर उन्हें व्यभिचार-मार्ग पर अग्रसर होने के लिए छोड़ देता है—

ऐसे समाज का नष्ट हो जाना ही अच्छा है। परन्तु हम करें क्या ? इस प्रबल पिशाचरूपी समाज को नष्ट करने के लिए हमारे पास कोई साधन नहीं। हम अबला हैं, हम प्रतिदिन दुख की असीम ज्वाला से दग्ध होती रहती हैं, हम पर पैशाचिक अत्याचारों की दिन-रात वर्षा होती रहती है और हमारे पास है ही क्या ? केवल आँसू हैं, जो हमें अपनी पीड़ा शान्त करने में सहायता देते हैं !'

'अदा ! तुम इतनी स्वच्छ विचार की हो, यह मैं न जानता था ! तुम ज़माने के हाथों से सताई हुई हो। तुम्हारे आँसुओं को देखकर मैं पहले ही समझ गया था कि तुम्हारे हृदय में चिन्तानल की भीषण ज्वाला धधक रही है। लेकिन अदा ! मैं तुम्हारी उस भीषण ज्वाला को शान्त कर दूंगा।'—कहकर कुमार ने अदा को अपने वक्ष के पास खींच लिया और उसके होठों पर अपने होंठ रख दिये। दो प्राण और दो शरीर मिलकर एक हो गये।

'अदा ! जिस कष्टमय जीवन से ऊबकर मैं यहाँ आया था, उसकी याद अब जाती रही। तुम्हारे हृदय की ज्वाला और मेरे दिल की आह मिलकर एक हो गई और अब हमारे सन्तप्त हृदय में असीम आनन्द का अनुभव हो रहा है। अदा ! तुम अपनी बीती सुना जाओ।'

'वह एक दुख-भरी गाथा है साजन ! फिर भी मैं तुमसे कहूँगी। सुनो—एक दुखिया का दुख-दर्द सुनकर तुम भी आँसू बहाओ और देखो कि समाज में अपनी उच्चता की डींग मारने वाले नरपिशाचों ने मुझ पर क्या-क्या जुल्म ढाये हैं,' अदा अपनी कहानी कहने लगी। कुमार ध्यानपूर्वक सुनने लगे।

सात

गाँव के एक किनारे पर साफ-सुथरा कच्चा मकान था, जिसमें केवल तीन प्राणी अपना जीवन यापन कर रहे थे—ब्राह्मण, ब्राह्मणी एवं उनकी त्रयोदश-वर्षीया कन्या। यह ब्राह्मण-परिवार यद्यपि धन-हीनता के कारण दुखी था, फिर भी उसकी धर्मनिष्ठा पूर्ववत बनी थी। प्रातःकाल उठते ही भजन, ईश्वर पाठ आदि करना उनका नित्य का कर्म था। धर्म-चर्चा तथा भगवद्गाथा गाने में ही उन्हें महत् आनन्द आता था। उनकी एक अलग ही दुनिया थी, जो छल-कपट तथा व्यभि-

वार की दुनिया से बहुत दूर थी। उनके घर के पास ही, कुछ दूरी पर एक छोटा-सा शिवजी का मन्दिर था, जिसमें एक पुजारी रहा करते थे। ब्राह्मण-परिवार पुजारी की सदैव सहायता किया करता था। ब्राह्मण नित्य सवेरे जाकर शिवजी की मूर्ति को स्नान करा देता, पूजा के लिए पत्र-पुष्प आदि रख देता एवं घृतदीप आदि बालकर ध्यानमग्न होकर पुजारी का पूजन देखता। जिस दिन ब्राह्मण न पहुँच सकता, उस दिन ब्राह्मणी ही जाती। इस प्रकार धर्माचरण में उनके दिवस व्यतीत हो रहे थे।

ब्राह्मण की कन्या का नाम था 'धारा'। धारा की अवस्था केवल १३ वर्ष की थी। सुन्दर सुशीलता से परिपूर्ण मुख एवं लज्जाभार से अवनत आँखें—जो भी देखता, उसे देवी जानकर नमस्कार करता। दिन-रात धर्मचरिता में ही संलग्न रहने एवं संसार के दूषित वातावरण से एकदम असम्बद्ध होने के कारण धारा को सांसारिक सुखों का कुछ भी ज्ञान न था। केवल भोली-भाली बालिका थी। कभी-कभी रामायण की पोथी अपने आगे रखकर वह अपने पिता और माता को सुनाया करती।

इधर कुछ दिनों से ब्राह्मण की तबीयत खराब थी, अतः शिवजी की आराधना के लिए ब्राह्मणी ही मन्दिर में जाया करती थी, परन्तु आज ब्राह्मण की तबीयत अधिक चिन्ताजनक होने के कारण वह मन्दिर में न जा सकी; उसने धारा को जाने के लिए कह दिया। धारा उठी और पूजा की आवश्यक सामग्री लेकर मन्दिर को चल पड़ी। मन्दिर में पहुँचकर उसने विधिवत पूजन किया, तत्पश्चात् पुजारी की पूजा देखने बैठ गई। इस प्रकार वह लगातार प्रातः एवं सायंकाल मन्दिर में जाती और पूजा-अर्चना करके लौट आती। मन्दिर में बाहरी पूजनार्थी बहुत कम आते थे। कभी-कभी प्रातःकाल कोई आ जाता था, परन्तु सायंकाल को तो कोई न आता था; केवल धारा और पुजारी शिवजी के सामने हाथ जोड़कर बैठते और शिव-महिम्न का पाठ करते।

उस दिन सायंकाल को जब कि धारा और पुजारी शिव-महिम्न का पाठ समाप्त करके उठे, तो देखा कि बाहर वर्षा का ताण्डव हो रहा था। बिजली की गड़गड़ाहट एवं मेघों की गरज ज़ोरों पर थी। पुजारी बोला, 'धारा! कुछ देर तक बैठ जाओ। पानी कम हो जाय तो तुम्हें घर तक पहुँचा दूँ।'

धारा बैठ गई। पुजारी पुनः कहने लगा, 'धारा! तुम्हें इतने दिन

मन्दिर में आते हो गये, परन्तु तुमने अभी तक दीक्षा नहीं ली। बिना दीक्षा के पूजा-वन्दनादि का फल नहीं प्राप्त होता। इसलिये तुम्हें दीक्षा ले लेना अत्यन्त आवश्यक है।'

'मैं हर समय दीक्षा लेने को तैयार हूँ पुजारी जी!'

'यदि आप अभी कहें, तो मैं अभी...' धारा ने भोलेपन से कहा।

पुजारी बोला, 'मैं भी यही चाहता हूँ कि आज तुम्हें दीक्षा दे दूँ परन्तु दीक्षा की क्रिया ज़रा कठिन है। फिर भी तुम उसे भली प्रकार पूर्ण कर लोगी, ऐसी मुझे आशा है। अच्छा उठो! और जाकर शिवजी के सामने का वह दीपक बुझा दो।'

'तब तो अँधेरा हो जायगा, पुजारी जी!' धारा बोली!

'कोई हर्ज नहीं धारा! दीक्षा की क्रिया अंधकार में ही सम्पन्न होती है। तुम डरो नहीं। मैं तो तुम्हारे पास में ही हूँ। जाकर शीघ्र उस दीपक को बुझा दो, पुजारी ने कहा। भोली-भाली धारा पुजारी की कुवासना न समझ सकी। वह तो यह सब जानती ही न थी। उसने आगे बढ़कर दीपक बुझा दिया। सूचीभेद्य अन्धकार छा गया।

'धारा! उस दीवाल के साथ सटकर खड़ी हो जाओ'—अँधेरे में से पुजारी की आवाज़ आई। धारा दीवाल से सटकर खड़ी हो गई। पुजारी की पुनः आवाज़ सुनाई पड़ी—'अब मैं मन्त्रोच्चारण करता हूँ। तुम अपनी आँखें दृढ़ता से मूँद लो और तब तक न खोलना, जब तक सारी क्रिया सम्पूर्ण न हो जाए। मेरे मन्त्रोच्चारण करने के कुछ देर बाद दिवंगत-आत्मा आकर तुम्हें दीक्षा देगी। तुम उससे ज़रा भी न डरना और न आँखें ही खोलना।

× × ×

धीरे-धीरे धारा भी सब कुछ समझने लगी। पुजारी ने उसे किस प्रकार भ्रष्ट किया था, यह उससे छिपा न रहा। फिर भी वह नित्य पुजारी के पास जाया करती और सन्ध्या की उस सुन्दर वेला में, शिव-जी की मूर्ति के सामने ही दोनों अपनी वासना की तृप्ति करते। धारा समझती थी कि जिस रास्ते से वह जा रही है वह कंटकाकीर्ण है, फिर भी वह अपने को रोक न सकती थी। उसे आजकल जो आनन्द मिल रहा था, वह उसे कदापि छोड़ना नहीं चाहती थी। उस आनन्द के पीछे जो भयंकर दुष्परिणाम की विभीषिका मुँह बाये खड़ी थी, उसकी ओर उसका ध्यान न था। भोली बालिका एक बार यौवन रस चखकर वासना की दासी बन गई थी।

उसके इस परिवर्तन पर तुरन्त ही गाँव वालों की दृष्टि जा पड़ी। कितनों ने ही उसे प्रतिदिन मन्दिर में जाकर घन्टों के बाद लौटते देखा था, यही कारण था कि लोगों में शीघ्र ही काना-फूसी होने लगी। धारा और पुजारी पर उनका शक बढ़ता ही गया और एक दिन लोगों ने आश्चर्य-विस्फारित नेत्रों से देखा कि पुजारी और धारा गाँव से गायब थे। बूढ़े ब्राह्मण दम्पती पर वज्र गिर पड़ा।

× × ×

एक सुन्दर सुसज्जित कमरे में एक खूबसूरत कोच पर १४ वर्ष की एक लड़की बेहोशी की अवस्था में लिटाई हुई है। उसके माथे पर खून के कुछ छींटे पड़े हैं, जिससे मालूम होता है कि अवश्य ही यह बालिका किसी दुर्घटना का शिकार हुई है। सामने ही एक अंगरेज़ सज्जन एक कुरसी पर बैठे हैं और एक डाक्टर भी स्टेथिसकोप कानों से लगाये खड़ा है।

'बात यह हुई डाक्टर!'—वे अंगरेज़ साफ हिन्दुस्तानी में कहने लगे—'ज्यों ही मेरी मोटर चोर बाज़ार के पास पहुँची, यह लड़की, जो वहीं खड़ी हुई भीख माँग रही थी, मेरी मोटर के नीचे आ गई। खैरियत यही हुई कि इसकी जान न गई। अब इसकी तवज्जह का भार मैं आप पर देता हूँ। आप इसे जहाँ तक हो सके जल्द अच्छा कर दें।

'इसे चोट तो बहुत मामूली लगी है साहब! मगर खतरे की बात तो यह है कि इसके पेट का हमल (गर्भ) अब ठहर नहीं सकता। चोट लग जाने के कारण हमल बच्चेदानी से अलग हो गया है। आप किसी चतुर नर्स के बुलवाने का प्रबन्ध करें' डाक्टर ने कहा।

उन अंगरेज़ सज्जन ने जो कि वास्तव में 'ब्यूटी होटल' के मालिक जान गिलबर्ट ही थे पुकारा, 'बेयरा!'

'यस सर!' कहकर बेयरा उनके सामने आकर खड़ा हो गया।

'नर्स को बुलाओ! बहुत जल्दी,' वे हाँफते-हाँफते बोले।

× × ×

'क्या हुआ नर्स!', जान गिलबर्ट ने पूछा।

'हमल गिर गया साहब! मगर उसकी तबीयत ठीक है', नर्स ने कहा।

'कितने दिनों का हमल था?'

'पाँच महीने का।'

एक महीने बाद—

वह लड़की अब पूर्णतया स्वस्थ हो गई थी। उसके शरीर की शिथिलता अब दूर हो गई थी और उस पर यौवन-रश्मि खेल रही थी। उसकी बिजली-सी मुस्कराहट, शोखी-भरे मस्त नयन, बल खाती हुई पतली कमर एवं गज़ब ढाने वाले उन्नत उरोजसब, कुछ ऐसे थे कि हाँ!

'जब से तुम आई हो, मैंने तुम्हारी सेवा का पूरा प्रबन्ध कर रखा है, परन्तु अभी तक मुझे यह न मालूम हुआ कि तुम हो कौन ?' एक दिन जान गिलबर्ट ने उस लड़की से पूछा।

लड़की कहने लगी, 'साहब ! मैं कौन हूँ, इसका मैं क्या उत्तर दूँ, सिवा इसके कि मैं दुख की मारी हुईएक अभागिन हूँ। दुष्टों द्वारा सताई हुई एक सकबे दुखिया हूँ। नाम मेरा धारा है। एक दुष्ट पुजारी मुझे बहका कर यहाँ लाया था और मुझे बरबाद करके, आप न जाने कहाँ गायब हो गया। मैं निराश्रिता होकर भीख माँगने लगी, परन्तु भीख कौन देता साहब ? जिसके पास रूप तथा यौवन होता है उससे तो लोग, स्वयं भीख माँगते हैं। कोई कहता, 'कोठे पर चलोगी ?' कोई कहता, 'सदके जाऊँमेरी जान !', और बगल में हाथ डालकर...और इन्ही सब अत्याचारों से मैं ऊब गई थी। ज्यों ही आपकी मोटर मेरे सामने आई, मैंने चाहा कि अपनी ज़िन्दगी का अन्त कर दूँ, परन्तु ईश्वर को यह भी मंजूर न था और मैं बचा ली गई। यह मेरी कहानी है साहब ?'

जान गिलबर्ट उसे सान्त्वना देकर चले गये।

एक दिन जान गिलबर्ट होटल के अपने प्राइवेट आफिस में प्याले-पर-प्याले ढाल रहे थे। नशे में उनकी आँखें लाल थीं। पैरों में लड़खड़ाहट थी। अन्त में उन्होंने बेयरा को बुलाकर उससे कहा, 'बेयरा ! उस लड़की को यहाँ घसीट ला।'

बेयरा गया और धारा को घसीटता हुआ लाकर उस कमरे में ढकेल दिया ग्रौर बाहर से दरवाज़ा बन्द कर दिया। जान गिलबर्ट ने आगे बढ़कर धारा का हाथ पकड़ लिया और उसे उठाकर एक कोच पर पटक दिया। बोले, 'छोकरी ! इस गज़ब की खूबसूरती को लेकर बरबाद न कर। इस होटल में रहकर मेरी और मुसाफिरों की दिल-बस्तगी किया कर, फिर तेरे समान दुनिया में कोई न दीख पड़ेगी।

कहकर जान गिलबर्ट ने उसे कोच पर पटक दिया। इसके बाद वासना की पूर्ति सारी रात तक होती रही। धारा ने भी अपने को निराश्रित देखकर और यह समझकर कि जान गिलबर्ट ने उस पर बड़ी

कृपा प्रदर्शित की है—कृतघ्न होना अनुचित समझा। और अपने मद-भरे यौवन का रस छक-छक कर उन्हें पिलाया। सारी रात दोनों उस दुनिया की सैर करते रहे जो, 'बहिश्त' कहा जाता है।

प्रातःकाल ही होटल के मैनेजर ने धारा से कहा, 'धारा ! अब तुम्हें कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। अब हमारे मालिक जान गिलबर्ट साहब की तुम पर कृपा हो गई है। अब तुम खूब चैन से रहो !'

'मगर मेरे माता-पिता ?'—धारा ने एक प्रश्नसूचक दृष्टि से मैनेजर की ओर देखते हुए कहा।

'तुम्हारे माता-पिता अब तुम्हें फूटी आँखों से भी देखना पसन्द नहीं करेंगे धारा !'—मैनेजर बोला, 'वे समाज के शिकंजों में जकड़े हुए असहाय जीव हैं। समाज तुम्हें हेय समझता है, अब तुममें इतना आत्म-बल कहाँ कि वे तुम्हें अपना सकें। अब तुम निस्सहाय हो। सहारा केवल हमारे मालिक का है। तुम होटल में रहकर यात्रियों का मनो-रंजन करना, शरीर से नहीं वरन् केवल नाचने-गाने से। तुम्हें नाचना-गाना सिखाने के लिये कल से एक लेडी रख दी जायगी। आज से तुम्हारा नाम धारा नहीं रहा। अब तुम 'ब्यूटी होटल' की 'डान्सिङ्ग गर्ल' हो। तुम्हारा नाम 'अदा' है। वह शोखी-भरी 'अदा' जो देखने वाले पर कटारी का वार करती है।

और उसी दिन से धारा 'अदा' के नाम से पुकारी जाने लगी।

आठ

अदा ने ज्यों ही अपनी आत्म-कथा समाप्त की, कुन्दन कुमार के मुख से एक दीर्घ निःश्वास निकल पड़ा। उसकी करुणापूर्ण कहानी सुनकर उन्हें महान् दुःख हुआ। उफ ! अबोध बालिकाएँ किस प्रकार दुष्टों द्वारा कुत्सित जीवन व्यतीत करने को बाध्य की जाती हैं, इस बात का अदा एक प्रत्यक्ष प्रमाण थी। कुमार ने एक आह भर कर कहा, 'वास्तव में तुम जमाने के क्रूर हाथों द्वारा बहुत सताई गई हो, फिर भी तुम्हारा हृदय अभी तक निर्मल है—यह देखकर मुझे आश्चर्य होता है।'

'आश्चर्य की बात नहीं है कुमार !'—अदा बोली, 'जिस विकट परिस्थिति में पड़कर मैं पथभ्रष्ट हुई, उसके लिये मुझे पूर्ण पश्चात्ताप

है। अब…'

'अब प्रातःकाल होने में कुछ ही देर है अदा ? चलो, कहीं की सैर कर आयी जाय, ताकि दिल का बोझ कुछ हल्का हो। इस समय मेरी मानसिक अवस्था शोचनीय है।' कुमार बोले।

अदा कहने लगी, 'कुछ देर तक समुद्र-तट की सैर करें। मैं अभी बेयरा से कहकर एक टैक्सी बुलवाती हूँ।

टैक्सी शीघ्र आ गई। अदा और कुन्दन कुमार उसमें जा बैठे। इतने में ही बेयरा कुमार के नाम का टेलीग्राम लिये आ पहुंचा। कुमार ने टेलीग्राम जेब में रखकर ड्राइवर से कहा, 'सी शोर'—और तब सीट से उठंग कर बैठ गये। मोटर स्टार्ट हो गई।

सुनसान समुद्र के किनारे आकर मोटर रुकी और कुमार एवं अदा उतर पड़े। ड्राइवर मोटर लेकर कुछ दूर पर चला, ताकि दो युगल प्रेमियों के प्रेम-सम्पादन में विघ्न न पड़े। दोनों समुद्र के किनारे बैठकर प्रकृति की सुन्दरता का अनुपम आनन्द लूटने लगे। उस समय सुबह होने में दो घण्टे की देर थी। समुद्र-तट एकदम सूना था। केवल ये ही दो सन्तप्त हृदय वहाँ बैठे हुए अपने दिल की जलन बुझा रहे थे।

कुमार बोले, 'अदा ! अब हम और तुम एक हो चुके हैं। हमारे प्राण और शरीर अब पूर्णतया प्रेम-बन्धन में बँध चुके हैं।'

'परन्तु हम लोगों का यह प्रेम निरापद नहीं है कुमार ! मैनेजर एवं जान गिलबर्ट को ज्यों ही इसकी खबर लगेगी, वे हम दोनों को बरबाद कर देंगे। इसलिए हमें जल्दी ही यहाँ से निकल चलना चाहिये,' अदा ने कहा।

'निकल चलना चाहिये ? हाँ ! यही ठीक है। अब मेरा मन भी यहाँ से ऊब चुका है और घर से तार भी आया है कि जल्द चले आओ, अतः मैं तुम्हें लेकर जल्दी ही चल देना चाहता हूँ,' कुमार बोले।

'परन्तु हमें बहुत गुप्त रीति से चलना चाहिये।'

कुमार बोले, 'मैं सब काम गुप्त रीति से ठीक किये रहूँगा ! होटल में पहुँचते ही 'आस्टिन मोटर कम्पनी' को टेलीफोन से एक फर्स्ट क्लास मोटर का आर्डर दे देता हूँ। मोटर खरीदने के लिये मेरे पास काफी रुपया है। सब ठीक कर हम लोग दिन के चार बजे एक टैक्सी में सवार होकर 'आस्टिन मोटर कम्पनी' के स्टोर-रूम तक चलेंगे; वहाँ से अपनी खरीदी हुई मोटर पर भाग निकलेंगे और तब हमारा पता कोई न पा सकेगा। अपने घर पहुँचकर, तुम्हें सिटी में एक सुन्दर मकान

ले दूँगा, तुम उसी में रहा करना।'

'परन्तु तुम मेरा साथ छोड़ तो नहीं दोगे ? तुम मुझे भूल तो नहीं जाओगे कुमार ?'

'यह तुम क्या कह रही हो अदा !' कहकर कुमार ने अदा का कोमल हाथ अपने हाथों में लेकर प्रेमपूर्वक दबाया। अदा की आँखों में आँसू छलछला आये। कुमार बोले, 'यह क्या ? फिर आँसू ? अदा ! तुम्हारी आँखों में आँसू देखकर मैं पागल-सा हो जाता हूँ। तुम...'

'ये प्रेम के आँसू हैं कुमार ! दुःख के आँसू अब नहीं रहे, अब तो मेरी उजड़ी हुई दुनिया आबाद हो गई। जिस साजन के लिये वर्षों से तड़प रही थी, वे आज मिल गये। अब इन नयन-कोटरों से हर्ष के आँसू प्रवाहित होंगे साजन ?' अदा ने कुमार के वक्ष पर अपना सिर रख दिया। कुमार ने उसे भरजोर अपने बाहुपाश में आबद्ध कर लिया। दूर पर बाल-सूर्य खिलखिला उठा।

समुद्र-तट से लौटकर अदा और कुन्दन कुमार होटल में आये और अपने कमरे में चले गये। अदा अभी-अभी एक कुर्सी पर बैठकर कुछ सोच रही थी कि बेयरा ने आकर उसे मैनेजर के पास चलने का आदेश दिया। अदा तुरन्त मैनेजर के पास गई। मैनेजर ने उससे पूछा, 'अदा ! काम हो गया ? कुन्दन कुमार का सारा धन तुम्हारे कब्जे में आ गया कि नहीं ?'

'नहीं साहब ! अभी तक मैं सफल नहीं हुई हूँ,' अदा कहने लगी, 'क्योंकि वह बड़ा चालाक है। फिर भी आज रात को मैं अवश्य ही सफलता प्राप्त करूँगी।'

'क्या तुम सच कह रही हो ?'

'बिल्कुल सच साहब !' अदा ने उत्तर दिया।

'मगर तुम्हारी सूरत तो दूसरी ही बात कह रही है। अदा ! मैं सब जानता हूँ। मुझसे छिपाने की कोशिश न करो। मुझे खूब मालूम है कि तुम उसे जी-जान से चाहने लगी हो। परन्तु याद रखो ! उसे चाहना तुम्हारे हक में अच्छा न होगा। अगर आज रात के १२ बजे तक उसका सारा धन मेरे पास न पहुँच गया, तो याद रखना !' कहकर मैनेजर ने दाँत पीसा और अदा को चले जाने का इशारा किया। अदा चली गई। मैनेजर ने बेयरा से कहा, 'बेयरा। अम्बु और उसकी माँ को बुला लाओ।'

बेयरा चला गया और कुछ ही देर में अम्बु और उसकी माँ को लिए हुए लौट आया। इस समय अम्बु की अवस्था ठीक नहीं थी। उसके बाल बिखरे थे, कमरे में प्रवेश करते ही अम्बु की माँ बोली, 'निशाचर ! अब तू क्या चाहता है ? मेरी इज्जत लूटकर मुझे बरबाद कर, अब तू किस बात की इच्छा रखता है ?'

मैनेजर एक क्रूर हँसी हँसकर बोला, 'अम्बु की माँ ! अब जो कुछ होना था, हो गया। अब उस बारे में माथापच्ची करने से कुछ काम नहीं। आप ध्यानपूर्वक मेरी बात सुनें। मैं जानता हूँ कि आप लोग बड़े घराने की हैं और जहाँ तक मैं समझता हूँ आप लोग पुलिस के पास जाकर और उससे उस मामले की रिपोर्ट कर, अपनी बदनामी कराना गँवारा न करेंगी। पुलिस में रिपोर्ट करने से आपकी इज़्ज़त में बट्टा लग जाएगा और इस मामले को, जिसे अभी सिर्फ हमीं तीन-चार आदमी जानते हैं, सारी दुनिया जान जायेगी। इस तरह आपकी इज़्ज़त व शोहरत मिट्टी में मिल जायेगी और तब आप लोगों के पाक दामन पर बदनामी का काला धब्बा लग जायेगा, जो कभी न छूट सकेगा। अगर आप मेरी बात न मानकर, पुलिस में रिपोर्ट कर देना चाहें तो शौक से कर सकती हैं, मगर इसका परिणाम कुछ भी न होगा, क्योंकि स्वयं पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब हमारे तरफदार व दोस्त हैं।'

उसी समय अम्बु आदि ने एक लम्बे-चौड़े अंग्रेज़ जवान को उस कमरे में प्रवेश करते देखा। वे जान गिलबर्ट थे। वे आकर कुर्सी पर बैठ गये। अम्बु की माँ रोती हुई बोली, 'ओह, दुराचारियो ! तुमने हमें कहीं का भी न रखा। अब हमें कहाँ ठिकाना मिलेगा ? तुम लोगों ने हमें बरबाद कर दिया।'

'अभी आप लोग बरबाद नहीं हुई हैं, बरबाद तो उस समय होंगी, जब आप इस मामले की शोहरत जनता और पुलिस में करेंगी। और यदि आप मेरा कहना मानकर चुपचाप अपने घर चली जायेंगी तो यह मामला कोई भी न जान सकेगा और आप लोग भली प्रकार अपनी ज़िन्दगी गुजार देंगी,' मैनेजर ने मुस्कराहट के साथ कहा।

अम्बु की माँ बोली, 'बदनामी का टोकरा सिर पर लादने से तो मुँह बन्द रखना ही अच्छा है। कोई भी यह न जान सकेगा कि इस मनहूस 'ब्यूटी होटल' में आकर हम पर क्या-क्या गुज़री। मगर शैतानो ! याद रखो, दुखियों की आह का बदला ईश्वर लेता है। आज मैंने समझा कि शराफत का चोगा पहने हुए, अपने को सभ्य कहने

वाले, अंग्रेजों में कितना चरित्रगठन है। पश्चिमी सभ्यता में रंगकर भारतीय भी कैसे नरपिशाच हो जो जाते हैं, यह मैंने आज ही जाना। मैनेजर! तुम भारतीय हो। यदि कोई विजातीय किसी भारतीय रमणीय पर दुराचार करता हो, तो उसकी मान-रक्षा करना तुम्हारा धर्म है। परन्तु तुम मनुष्य के रूप में शैतान हो, तुम बात नहीं समझ सकते और इसे सफेद शैतान की प्रसन्नता के लिये भोली रमणियों का सुहाग लूटते हो। विदेशियों द्वारा अपने देश की मर्यादा नष्ट कराते हो। यदि तुम जैसे कपूत भारत माँ की गोद में न पैदा हुए होते, तो भारत आज परतन्त्रता की बेढ़ियों में जकड़ा न होता। ये फिरंगी इस प्रकार हम पर जुल्म न ढाते।'

'बस-बस, अम्बु की माँ! ज़्यादा न बढ़ो। अगर खैर चाहती हो तो हमारे कहने के मुताबिक काम करो।'

अम्बु आदि चली गईं। मैनेजर जान गिलबर्ट से बोला, 'सर! हमारे एजेन्टों ने कुछ 'परदेशी परियों' को फाँसकर यहाँ भेजा है। आप चलें और उन्हें एक बार देख लें। क्योंकि ये जल्द ही पंजाब भेज दी जायेंगी—वहाँ उनके भेजने का पहले से ही इन्तज़ाम हो चुका है।'

'चलो, चलकर देख लूँ', जान गिलबर्ट ने कहा। मैनेजर उन्हें साथ लेकर एक दरवाज़े की ओर बढ़ा और उसे खोलकर अन्दर चला गया। एक लम्बे-चौड़े कमरे में पाँच सुन्दरियाँ बैठी थीं, जो जान गिलबर्ट और मैनेजर को आते देखकर आश्चर्यचकित-सी दीख पड़ती थीं। मैनेजर उनके पास तक चला गया और जान गिलबर्ट से बोला, 'यही हैं सर! आप इन्हें देख लें।'

'मैग्नीफिशेन्ट'—कहकर जान गिलबर्ट सुन्दरियों की ओर बढ़े।

× × ×

'हलो!'

'हलो!'

'हूँ कुन्दन कुमार आफ राजापुर। 'ब्यूटी होटल' से बोल रहा हूँ। मुझे एक फर्स्ट क्लास 'आस्टिन' चाहिये। चार घण्टे के भीतर पूरी फिटिंग हो जाय। मैं तीन बजे स्टोर में आकर, मोटर का दाम देकर उसे ले आऊँगा।'

'आल राइट।'

× × ×

'हलो!'

'हलो !'

'मैं हूँ आपके होटल का मैनेजर !'

'मैं हूँ जान गिलबर्ट । रेजीडेन्सी से बोल रहा हूँ ।'

'अच्छा सर ! सुनिये ! होटल में बड़ी गड़बड़ी हो गई है। आप तुरन्त रेजीडेन्सी से यहाँ तशरीफ लावें। कुन्दन कुमार अदा को लेकर न जाने कहाँ गायब हो गया है। बेयरा का कहना है कि वे दोनों 'आस्टिन मोटर कम्पनी' से मोटर खरीद कर उसी पर भागे हैं। मैंने 'आस्टिन मोटर कम्पनी' से फोन करके पूछा था। बात एकदम सही है ओह उन्हें रवाना हुए ४५ मिनट से ऊपर गुज़र चुके हैं।'

'फिर तुम चाहते क्या हो ?'

'चाहता हूँ उनको कब्ज़े में करना। अदा के भाग जाने से सारा कारोबार बरबाद हो जायगा और कुन्दन कुमार के निकल जाने से एक मोटी रकम हाथ से जाती रहेगी।'

'अच्छा ! मैं अभी आताहूँ। तुम कुछ आदमियों को तैयार रखना। मैं उन दोनों का पीछा करूँगा।'

इसके बाद रिसीवर रख दिया गया।

नौ

इस समय सड़क एक निर्जन स्थान से गुज़र रही थी। मोटर पर बैठे हुए कुन्दन कुमार और अदा प्रकृति की सुन्दरता देखते हुए, तेज़ी के साथ रास्ता तय कर रहे थे। स्वयं कुन्दन कुमार व्हील के पास बैठे हुए मोटर चला रहे थे और अदा उनकी बगल में बैठी थी। उस समय मोटर ६० मील प्रति घण्टा की रफ्तार से जा रही थी। आसपास के वृक्ष मोटर के साथ ही तेज़ी के साथ दौड़ रहे थे। सड़क के दोनों ओर सुहावना जंगल था, जो कि यद्यपि घना न था, फिर भी रंग-ढंग से यही मालूम होता था कि आगे चलकर अवश्य ही घना जंगल मिलेगा। और वास्तव में वह सड़क घनघोर जंगल के बीच से होकर गई थी। दाहिनी ओर ऊँची-ऊँची पर्वत-श्रेणियाँ दिखाई पड़ रही थीं।

कुन्दन कुमार अदा से बोले 'अदा ! अब हम लोग बम्बई से बहुत दूर चले आये हैं। अब वे हमारा पता हरगिज नहीं पा सकते। ज़रा तुम दूरबीन से पीछे की ओर देखो, कोई हमारा पीछा तो नहीं कर

रहा है ?'

अदा के पास ही पड़ी दूरबीन उठाकर आँखों से लगाया और पीछे देखने लगी। सड़क एकदम सीधी थी और दूर-दूर तक पीछे का दृश्य दिखाई पड़ रहा था। एकाएक अदा कोई वस्तु देखकर चौंक पड़ी। बोली, 'कुमार ! दूर पर कोई काली-सी चीज़ दिखाई पड़ रही है जो तेज़ी के साथ इधर ही को बढ़ी आ रही है। ज़रा तुम भी देखो।'

कुमार ने दूरबीन को अदा के हाथों से ले लिया और पीछे देखने लगे। देखकर गम्भीरता के साथ बोले—'उन्हीं की मोटर मालूम पड़ती है अदा ! और जहाँ तक मेरा खयाल है कई आदमी उस मोटर पर हैं और एक लम्बा-सा व्यक्ति उस मोटर पर खड़ा होकर आँखों से दूरबीन लगाये हमारी ही ओर देख रहा है। मालूम होता है कि उसने भी हम लोगों को देख लिया है।'

'अब क्या होगा ?' अदा ने हँसते हुए कहा।

'घबराओ नहीं अदा ?' कहकर कुमार ने मोटर की स्पीड तेज़ कर दी। इनकी मोटर ८० मील की तेज़ी से जाने लगी। पीछे वाली मोटर इस समय केवल चार फर्लांग पीछे रह गई थी।

पीछे वाली मोटर वास्तव में जान गिलबर्ट की ही थी, जो 'ब्यूटी होटल' के मैनेजर को साथ लेकर कुन्दन कुमार का पीछा कर रहे थे। जान गिलबर्ट इस समय बीच मोटर में खड़े होकर अगली मोटर की ओर दूरबीन से देख रहे थे। एकाएक उनके मुख से प्रसन्नता की एक आवाज़ निकली। वे बोले—'वही हैं। बेशक वही दोनों हैं। वे भी हमारी तरफ दूरबीन से देख रहे हैं।

'मगर…हैं ! यह क्या ?'

एकाएक जान गिलबर्ट के मुख से ताज्जुब की एक आवाज निकल पड़ी, जब कि उन्होंने अगली मोटर की स्पीड तेज होते देखी और वह तीर की तरह आगे को दौड़ पड़ी। जान गिलबर्ट बोले—'हैं ! ये शैतान इतनी स्पीड से मोटर चला रहे हैं। मर जाना चाहते हैं क्या ?… ड्राइवर ! ८० मील की रफ्तार कर दो। देखो ! वह मोटर भागने न पाये।'

ड्राइवर ने तुरन्त ही चाल तेज़ कर दी। दोनों मोटरें पूरी तेज़ी से जाने लगीं। पीछे की मोटर धीरे-धीरे कुमार की मोटर के पास आने लगी। कुमार ने भी इस बात पर गौर किया, तब अदा से बोले—'अदा ! भाग सकना असम्भव है। पीछे की मोटरकेवल ४०० गज़ पीछे

है। फिर भी मैं कोशिश करता हूँ। अब यह सड़क की राह छोड़कर जंगल-ही-जंगल मोटर ले चलूँगा। देखूँ क्या होता है।'

'मर जाना अच्छा है साजन! मगर उन दुष्टों के हाथों पड़ना नहीं—कहकर अदा कुन्दन कुमार के कलेजे से चिपट गई। इस समय उसकी छाती ज़ोरों से धड़क रही थी। कुमार ने उसे सान्त्वना दी और एकाएक मोटर दाहिनी ओर को मोड़ दी। मोटर सड़क की राह छोड़ जंगल-ही-जंगल भागने लगी।

परन्तु पीछे की मोटर का ड्राइवर कम चतुर नहीं था। कुमार की मोटर को जंगल में घुसते देखकर वह जान गिलबर्ट से बोला—'वे लोग जंगल में भाग रहे हैं हुजूर!'

'तुम उनका पीछा न छोड़ो।' जान गिलबर्ट ने कहा।

जान गिलबर्ट की मोटर भी जंगल-ही-जंगल कुमार की मोटर का पीछा करने लगी। दोनों मोटरें जंगल में इधर से उधर घूमती हुई आगे बढ़ने लगीं। कुन्दन कुमार ने कहा—'अदा! उन सबों ने अब भी हमारा पीछा नहीं छोड़ा है। अब तो ईश्वर का ही सहारा है।'

जान गिलबर्ट ने अपने ड्राइवर से कहा—'और तेज़! अब हम उनके सर पर हैं। अब वे दोनों कहाँ जा सकते हैं।'

यद्यपि पथरीली ज़मीन के कारण मोटरें पूरी गति से नहीं चल रही थीं, फिर भी दोनों के ड्राइवर जहाँ तक हो सकता था, मोटरों को पूरी तेज़ी से ले जाने का प्रयत्न कर रहे थे।

जब गिलबर्ट ने मैनेजर से कहा—'तुम फायर करके आगे वाली मोटर के पीछे के दोनों पहियों को पंचर कर दो। जल्दी करो।' मैनेजर फायर करने के लिए उठ खड़ा हुआ, परन्तु तुरन्त ही बोला—'उसका 'मडगार्ड' बहुत नीचे तक झुका हुआ है सर! फायर का कुछ असर न होगा!'

'अच्छा तब कुन्दन कुमार पर फायर करो। मगर देखना, अदा का ज़रा भी बाल बाँका न हो'—जान गिलबर्ट ने कहा।

एकाएक कुन्दन कुमार के कान के पास से कोई गरम चीज़ सर्राती हुई निकल गई। वह चौंक पड़े, बोले—'हैं! यह क्या! अदा! वे अब हम पर फायर कर रहे हैं। अब शायद ही हम लोग बच सकें।'

एक पतली-सी पगडण्डी जंगल में दीख पड़ी। कुमार ने वही पगडण्डी पकड़ ली और उनकी मोटर तेज़ी के साथ उस पगडण्डी के रास्ते से दौड़ने लगी। पीछे से बराबर गोलियाँ आ रही थीं, परन्तु भाग्यवश

कुन्दन कुमार बचते जा रहे थे।

अब वह पगडण्डी उस जंगल के एक भयानक भाग से गुज़र रही थी। दाहिनी ओर पगडण्डी से एकदम सटकर, एक ऊँची पर्वत-श्रेणी दूर तक फैली थी और बायीं ओर केवल सात फुट पर एक हज़ारों फुट गहरा खड्ड था, जिसके नीचे नर्वदा का पानी तेज़ी से प्रवाहित हो रहा था। यही खड्ड बहुत दूर तक पगडण्डी के साथ-साथ चला गया था। अगर कुमार का हाथ ज़रा भी बहक जाता तो उनकी मोटर हज़ारों फुट गहरे खड्डे में जा पड़ती और नर्बदा की पतित पावनी धारा में विलीन हो जाती।

'हम बहुत ही भयंकर स्थान में आ फँसे हैं, अदा!'—कुमार बोले—'सामने की ओर भागने में खतरा है, क्योंकि शत्रु सिर पर हैं और अगर हम सामने की ओर भागते गये तो शीघ्र ही पकड़ लिये जायेंगे; परन्तु अब दूसरी ओर भागने का रास्ता ही यही है। देखो! दाहिनी ओर पर्वत श्रेणी है और बायीं ओर पगडंडी के बगल में ही कैसी भयानक खड्ड है। अगर ज़रा-सा भी हाथ चूका तो!'

अदा ने अपनी दृष्टि उस भयानक खड्ड की ओर डाली और साथ ही उसके मुख से भय की एक चीख निकल पड़ी। फिर भी वह कलेजा कड़ा करके बोली—'उन दुष्टों के हाथों पड़ने से तो अच्छा यही है कि तुम अपनी मोटर इसी खड्ड में गिरा दो और हम दोनों...'

'अगर मौका आयेगा, तो यही करूँगा अदा!' कुमार ने कहा। अदा कुमार से कसकर लिपट गई। एकाएक पीछे वाली मोटर से एक गोली आकर कुमार के बाज़ुओं में घुस गई। कुमार ज़ोरों से चीख उठे। साथ ही मोटर का 'ह्वील' बहककर बायीं ओर को घूम गया। मोटर तेज़ी के साथ उस भयानक खड्ड की ओर दौड़ पड़ी। कुमार ने अपने ज़ख्मी हाथ से, पतन की ओर जाती हुई मोटर को, बहुत सम्भालने की कोशिश की, परन्तु उसकी चाल बहुत तेज थी। पलक मारते भर में वह मोटर अदा और कुमार को लिये हुए हज़ारों फुट नीचे, नर्वदा की धारा में जाकर विलीन हो गई।

'इनकी मौत उन्हें खुद खींच ले गई। अब मोटर लौटा दो।'—जान गिलबर्ट ने कहा। पीछा करने वाली मोटर लौटकर बम्बई की ओर रवाना हो गई।

× × ×

एक मामूली-सी चारपाई पर एक बेहोश युवक लिटाया हुआ है।

पास ही एक सज्जन खड़े हैं और एक डाक्टर भी हैं, जो युवक के बाजू पर का जख्म धो रहे हैं। एकाएक युवक के मुँह से एक आह की आवाज निकली। वह कराहते हुए बोला, 'हाय अदा। तुम कहाँ हो ?'

'मैं यहीं हूँ साजन !' चारपाई के सिरहाने खड़ी हुई लड़की ने कहा। उसकी आवाज़ सुनते ही उस युवक ने अपनी आँखें खोल दीं और कहा 'अदा ! डार्लिंग ! तुम ज़िन्दा हो ?'

'हाँ कुमार ! मैं अच्छी हूँ और तुम भी अच्छे हो जाओगे। घबराओ मत, 'अदा ने कहा और कुमार का सिर अपनी गोद में रख लिया।

'मगर हम लोग बचे कैसे अदा !' कुमार ने पूछा।

'यह सब इन सज्जन की कृपा का फल है कुमार !' अदा ने उन सज्जन की ओर संकेत करते हुए कहा।। कुमार धीरे-धीरे उठकर चारपाई पर बैठ गये। डाक्टर बोला, 'आप लेटे रहिये। आपको तकलीफ...'

'मैं कालिका फिल्म कम्पनी का मैनेजिंग डाइरेक्टर हूँ। कल हम लोग उस खड्ड के नीचे, अपने एक 'डेयर डेबिल' प्रोडक्शन के लिये एक स्टेट सीन ले रहे थे, जब कि हमने आपकी मोटर को खड्ड से नीचे की ओर गिरते देखा। हम लोगों का पूरा स्टाफ शूटिंग छोड़कर आप लोगों को बचाने के लिये दौड़ा और ईश्वर की कृपा से हम अपने कार्य में सफल हुए। आपकी मोटर में खराबी आ गई थी, जिसे हमारे मिकेनिक ने दूर कर दिया है। पानी में गिरने के कारण उसमें ज्यादा खराबी नहीं आई थी।' उन सज्जन ने कहा।

'धन्यवाद ! आपने मेरी प्राण रक्षा करके...'

'मैंने नहीं, ईश्वर ने आपकी रक्षा की।'

दस दिन बाद—

कुन्दन कुमार अदा को लेकर अपने शहर (मिर्ज़ापुर) लौट आये और उसे शहर में एक मकान खरीद दिया। अदा उसी में रहने लगी। उसकी सेवा के लिये कई नौकर रख दिये। सारा काम गुप्त रीति से हुआ। कुन्दन कुमार के पिता आदि को इस बात की कुछ भी खबर न थी। कुन्दन कुमार बहुधा अदा के पास जाया करते। अदा भी कुमार का प्रेम पाकर अतीव प्रसन्न थी। उसके हृदय की अतृप्त आकांक्षाएँ कुमार को पाकर तृप्त हो गई थीं। कुमार भी अदा के प्रेम में खूब डूबे थे। उन्हें अदा में कुछ ऐसा आकर्षण मिला था, जो उन्हें सदैव अपनी

ओर खींचता रहता था। दोनों युगल प्रेमियों के दिन सुखपूर्वक कटने लगे।

दस

रसना के कमरे में आज हम रसना और बीरन को एक-दूसरे के सामने बैठे हुए देख रहे हैं। रसना एक सुन्दर पलंग पर, तकिये का ढासना लगाये बैठी है और उसके सामने ही ज़मीन पर बीरन बैठा है।

'बहूरानी !' बीरन कहने लगा, मैं नीच हूँ, पद-दलित हूँ, अधम हूँ। आपका मेरे प्रति प्रेम-प्रदर्शन शोभा नहीं देता। मैं तो आपकी जूती हू, आपके पैरों की धूल हूँ, कहाँ आप क्षत्रिय कुल की उज्ज्वल तारिका और कहाँ मैं अछूत जाति का अधम प्राणी। मुझमें और आपमें ज़मीन-आसमान का अन्तर है, बहूरानी।'

'परन्तु प्रेम ऊँच-नीच नहीं देखता बीरन !' रसना ने कहा।

'मगर यह सच्चा प्रेम नहीं है, बहूरानी ! यह है वासना की प्रज्ज्वलित अग्नि, क्षणिक सुख की भीषण विभीषणता और पाप की काली निशा ! लेकिन मैं इतना पतित नहीं हूँ कि अपने अन्नदाता की इज़्ज़त पर धब्बा लगाऊँ। जिनकी छत्र-छाया में इतने दिनों से आनन्द-पूर्वक जीवन-यापन कर रहा हूँ, उनकी पाक इज़्ज़त में काला धब्बा लगाना मंजूर नहीं।'

'बीरन ! ज़रा मेरी ओर तो देख।'

'मैं देख रहा हूँ बहूरानी ! मैं देख रहा हूँ कि आपके नेत्रों में वासना की उद्दीप्त ज्योति है, आपके हृदय में पिपासाग्नि का विकट दाह है और आपके उज्ज्वल चरित्राकाश में एक काला चाँद है। मैं सब कुछ देख रहा हूँ, फिर भी मैं आपकी अभिलाषा पूरी करने में सर्वथा असमर्थ हूँ। आप किसी अन्य…'

'क्या कहा ? मैं किसी अन्य से अपना हृदय लगाऊँगी ? क्या तुमने मुझे इतनी अधम समझ लिया है कि मैं जिस किसी के सामने अपना हृदय बिछाती फिरूँ ?'

'हो सकता है कि मेरी बात आपको रुचिकर न हो, मगर मैं जो बात कर रहा हूँ उसमें ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं है बहूरानी ! जो स्त्री अपने पति देवता को छोड़कर, दूसरों से नेह लगाए, जो अपने

कुल की मान-मर्यादा पर लात मारकर अपनी कलुषित वासनाओं की पूर्ति करना चाहे, क्या वह अधम नहीं है ? बहूरानी ! आजकल मेरे हृदय में आपके प्रति जो श्रद्धा का भाव था, वह सर्वदा के लिए नष्ट हो गया ! मैंने देवी समझकर आपकी अभ्यर्थना की थी, परन्तु शोक ! मैं भूल पर था। आज तक मैं अछूतों को ही अधम समझता था, परन्तु आज देखता हूँ तो समाज में उच्च कहलाने वाली जातियों में भी अधम प्राणी उपस्थित हैं।'

'बीरन ! तुम चाहे जो कुछ कहो, परन्तु आज तुम्हें मेरी आकांक्षाओं की पूर्ति करनी ही होगी। आज तुम यहाँ से नहीं जा सकते। मैं तुम्हें अभी-अभी अपना बनाऊँगी', कहकर रसना ने बीरन को अपनी फूल-सी बाँहों में लपेट लिया। बीरन ने रसना को अपने से दूर करना चाहा, परन्तु रसना ने उसे खूब मज़बूती से पकड़ा था। इसी खींचातानी में रसना की चोली फट गई, उसकी साड़ी भी जगह-जगह से फट गई, मगर उसने बीरन को न छोड़ा। इसी समय बाहर से किसी के आने की आहट मिली और दूसरे ही क्षण उस कमरे के दरवाज़े पर कुन्दन कुमार खड़े दिखाई पड़े। कुमार को देखते ही रसना एवं बीरन दोनों पर वज्र गिर पड़ा। बीरन थर-थर काँपता हुआ खड़ा रहा। उसके नेत्रों के सामने अँधेरा छा गया। उधर रसना भय से विह्वल थी। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह इन बातों का कुन्दन कुमार को क्या कारण बतायेगी। परन्तु उसने शीघ्र ही कोई बात सोच डाली और जाकर कुन्दन कुमार के गले में बाँह डालकर, भयभीत स्वर में बोली, 'मुझे बचाओ प्राण ! यह निशाचर मुझे बेइज़्ज़त करना चाहता है। यह मेरी दशा देखो, यह दुर्दशा इसी कारण हुई है। यह अपनी कुवासना की पूर्ति के लिए मुझ पर जुल्म···'

कुमार की आँखों में खून उतर आया। वे आगे बढ़े और बीरन के आगे आकर खड़े हो गए। एक क्षण के लिए दोनों की आँखें आपस में जा मिलीं, परन्तु तत्क्षण ही बीरन ने अपनी आँखें नीची कर लीं। उस समय कुमार की आँखें अंगारे-जैसी जल रही थीं। कुमार कड़ककर बोले, 'यह क्या हो रहा था दगाबाज़ ! अपने मालिक की इज़्ज़त पर धब्बा। अपने अन्नदाता के कुल पर कलंक का टीका ?'

बीरन के मुख से आवाज़ ही न निकली। कुमार कहते गये—'कृतघ्न ! जिसने तेरे साथ इतनी भलाई की, जिसने तुझ अछूत को अपने गले से लगाया, जिसने तुझ नीच अधम को भाई-सा प्यार किया,

उसी के प्रति तेरा यह कुठाराघात ? तूने मेरी जान बचाई थी, क्या तू उसी का यह बदला ले रहा था ?'

'कुमार ! स्वामी !' बीरन लड़खड़ाई ज़बान से बोला।

'चुप रह दोज़खी कुत्ते ! अगर अपनी खैर चाहता है तो चुप रह नहीं तो मैं तेरी गर्दन पकड़कर मरोड़ दूंगा। तू अपने को निरपराध साबित करना चाहता है, परन्तु क्या मैं अपनी आँखों पर अविश्वास कर लूं ? जिस बात को स्वयं मेरे ये नेत्र देख चुके हैं, उस पर से दृष्टि-विक्षेप कर लूँ ? मैं देख रहा हूँ कि मेरी स्त्री की दशा शोचनीय है, और यह भी देख रहा हूँ कि इसी कमरे में तू शैतान भी उपस्थित है, फिर भी क्या मैं यह न समझूँ कि तू इस पर बलात्कार कर रहा था ?' कुमार गरजते हुए बोले।

'प्राण !' रसना पुनः कहने लगी, 'यह कुछ रुपये की मदद माँगने के लिए मेरे पास आया था, परन्तु यहाँ आकर इसका···'

'मैं समझ गया। नीचों का हृदय नीचता से परिपूर्ण रहता है। उनके हृदय में उच्च भावों का समावेश कहाँ ? जिस दूषित वातावरण में वे रात-दिन रहते हैं, उसमें नित्य ही ऐसे व्यभिचार होते हैं। पिताजी ठीक ही कहते थे कि नीचों से सम्पर्क रखना ठीक नहीं, परन्तु मैंने उनकी बात न मानी, और इस काले नाग से अपना सम्बन्ध रखा, इस ज़हर के प्याले को अपने होंठों से लगाया।

इस समय बीरन को भय तथा आवेग ने पागल बना दिया था। वह नहीं जानता था कि एक क्षण में ही क्या से क्या हो जायेगा। उसकी ज़बान कुछ बोलते हुए लड़खड़ा रही थी, फिर भी उसने अपने को संयत करके कहा, 'कुमार अन्नदाता ! मैं निरपराध हूँ। मैंने कोई अपराध नहीं किया है।'

'तू मेरी आँखों को अन्धी बनाना चाहता है ? अधम ! नीच !' कहकर कुमार ने बीरन के मुँह पर कई तमाचे जड़ दिये। बीरन भूमि पर गिर पड़ा। कुमार पुनः बोले, 'जा ! चला जा यहाँ से, नहीं तो खाल खींच लूंगा, चमड़ी उधेड़ दूंगा।'

बीरन धीरे-धीरे कमरे के बाहर चला गया। कुमार आकर धम्म से पलंग पर बैठ गए। इस समय आवेग से उनका शरीर थर्रा उठा था। उनकी आँखों से अग्नि-वर्षा हो रही थी। कुछ देर के बाद कुमार का हृदय शांत हुआ।

उस रात कुमार को नींद नहीं आई। भयानक चिन्ताओं ने उन्हें

सन्तप्त कर दिया था। वे बिस्तरे पर छटपटाते हुए पड़े थे। उनके हृदय में एक दारुण संघर्ष मचा हुआ था। शान्ति उनसे कोसों दूर थी। ठीक बारह बजे कुमार का जी घबराने लगा। वे उठकर बैठ गए। रसना जो उनके पास ही लेटी थी, बोली, 'तबीयत ठीक नहीं है क्या ?'

'नहीं,' कहकर कुमार उठे और बिना कहे हुए कमरे से बाहर निकल गये। गैरेज में उनकी मोटर खड़ी थी। उन्होंने मोटर बाहर निकाली और उसे स्टार्ट कर शहर की ओर प्रस्थान किया। एक बजने में कुछ मिनट बाकी थे, जबकि उनकी मोटर उस मकान के सामने रुकी, जिसमें अदा रहती थी। कुमार के पुकारने पर नौकरानी ने दरवाज़ा खोला। थोड़ी देर में अदा भी आ पहुँची। बोली, 'हैं ! साजन तुम ?'

'अदा ! जब मनुष्य का हृदय चिन्ता के आवेश से पागल होने लगता है तो एक स्थान खोजता है, जहाँ उसके सन्तप्त हृदय को शान्ति प्राप्त हो सके।' कुमार ने कहा। दोनों एक सजे हुए कमरे में आकर बैठ गए। अदा ने कुमार के गले में हाथ डाल दिये। कुमार ने उसे अपने वक्ष से कस लिया और बोले, 'अदा ! मेरा हृदय चिन्तानल से दग्ध हो रहा है, तुम उस पर प्रेमवारि डालकर ठण्डा कर दो।'

अदा ने कहा, 'मेरे साजन !' और उसने अपना मुँह ऊपर उठाकर कुमार का मुँह··· ।'

वह दिल ही नहीं, जिसमें न हो चाह किसी की।
वह आँख नहीं, जो न तके राह किसी की ।।

ग्यारह

उस दिन रात को जब बीरन बिस्तरे पर लेटा, तो उसका मन उद्विग्न था। उसे आज की विचित्र घटनाओं का रह-रहकर स्मरण हो आता था और उस पर क्षण-भर के लिए बेचैनी-सी छा जाती थी। बीरन के हृदय की व्यथा तिल्लो से छिपी न थी। कुछ देर बाद वह बोली, 'तुम्हारा मन स्थिर नहीं है क्या ?'

'मेरे मन को न जाने क्या हो गया है तिल्लो ?' बीरन बोला, 'जी बड़ा बेचैन है। कल चैत्र-नवमी होगी न। चलो माँ विन्ध्येश्वरी के दर्शन कर आवें।'

'परन्तु हम तो अछूत हैं। माँ के दर्शन हमारे भाग्य में कहाँ?' तिल्लो ने दबती जबान से कहा।

'पागल! माँ के दरबार में छूत-अछूत की पूछ कहाँ? यहाँ तो सब एक समान हैं। जो भी साफ-सुथरे कपड़े पहनकर माँ की शरण में जायगा, वही उनके दर्शन पाकर कृतार्थ होगा,' बीरन बोला।

'तो चलोगे कैसे?' तिल्लो ने पूछा।

'सिर के बल,' बीरन अट्टहास करते हुए बोला, 'अरी पगली! माँ का धाम कोई दूर तो है नहीं। यहाँ से केवल सात मील का रास्ता है। प्रातःकाल चार बजे उठकर पैदल चल देंगे। आठ-नौ बजे तक पहुँच जायेंगे, फिर संध्या को दर्शन करके लौट भी आयेंगे! तुम उतना पैदल चल तो सकोगी न!'

'क्यों नहीं,' तिल्लो ने कहा। बीरन बोला, 'अच्छा तो जाकर अभी सब तैयार कर रखो। प्रातःकाल ही चलना है।'

तिल्लो ने रात-ही-रात सब प्रबन्ध कर लिया। प्रातःकाल ही बीरन और तिल्लो सब आवश्यकीय सामान लेकर विन्ध्याचल को चल पड़े। दोनों ने उज्ज्वल वस्त्र धारण किए हुए थे। आगे-आगे बीरन और उसके पीछे तिल्लो, दोनों चले जा रहे थे। आज तिल्लो की सुन्दरता दर्शनीय थी। उज्ज्वल वस्त्रों में आज वह साक्षात् परी-सी लग रही थी।

लगभग नौ बजे दोनों माँ के धाम पर पहुँच गए। उस दिन माँ के दर्शनों के लिए अगाध जन-स्रोत उमड़ पड़ा था। कहीं पर तिल रखने की जगह न थी। शरीर से शरीर छिल रहा था। सुदूर देशों के यात्रियों से सारा मण्डप भर गया था। विन्ध्यधाम की सँकरी गलियों में भीड़ का समाना कठिन हो गया था। फिर भी धक्कम-धक्का खाते-खाते बीरन और तिल्लो किसी प्रकार मंडप तक पहुँच ही गए। मण्डप के पास पहुँचते ही एक मोटा-सा पंडा बीरन के सामने आकर खड़ा हो गया और उससे इस प्रकार बोला, मानो बीरन का उससे बहुत पहले का परिचय हो।

'अरे कब आये जजमान!' पंडा बोला, 'इतने दिनों तक कहाँ रहे थे? वही परियार साल के आए हो। कहो! घर पर सब कुशल हैं न!'

'सब कुशल हैं', बीरन ने एक छोटा-सा उत्तर दे दिया।

'मैं तुम्हारा पुश्तैनी पंडा हूँ भैया!' पंडा बोला, 'लोग मुझे अद्रिज

पंडा कहते हैं। अभी मंडप में अधिक भीड़ नहीं है। चलो न, दर्शन कर लो।'

'तुम इन्हें ले जाने वाले कौन ? ये हमारे जजमान हैं', कहते हुए दो अन्य पंडों ने आकर बीरन को घेर लिया। एक उसे अपनी ओर खींचता, तो दूसरा अपनी ओर। इसी प्रकार खब चख-चख मची। अन्त में अद्रिज पंडा ने कहा, 'भाई ! क्यों गड़बड़ करते हो ? जो कुछ जजमान से मिलेगा, वही हम तीनों आपस में बाँट लेंगे। इसमें झगड़े की कौन-सी बात है ?'

'ठीक है, ठीक है' दोनों पंडों ने कहा। तत्पश्चात् अद्रिज बीरन से बोला, 'चलो जजमान ! माला फूल लेकर मंडप में चलो। चलो बहू ! तुम भी चलो।' कहकर अद्रिज ने तिल्लो का हाथ पकड़ लिया और अपने दोनों साथियों को न जाने क्या आँख का इशारा किया। इशारा पाते ही वे दोनों पंडे पीछे हो गए और इनके पीछे-पीछे चलने लगे। आगे-आगे बीरन, उसके पीछे तिल्लो का हाथ पकड़े हुए अद्रिज और उसके पीछे वे दोनों पंडे मंडप में घुसे। भीतर अत्यन्त भीड़ थी। माँ के दर्शनार्थ असंख्य यात्री उमड़ पड़ रहे थे। उसी भीड़ में धक्का खाते-खाते बीरन तथा तिल्लो आदि माँ के मंदिर में आ पहुँचे। मंदिर में पहुँचकर अद्रिज ने तिल्लो और बीरन का माला-फूल लेकर माँ को चढ़ाया और माँ का प्रसाद देने के लिए तिल्लो की ओर हाथ बढ़ाया। तिल्लो ने अपना हाथ उठाकर ज्योंही लेना चाहा एकाएक भीड़ का एक प्रबल झोंका आया, जिससे तिल्लो का हाथ अद्रिज के हाथों से छूट गया और वह भीड़ के रेले में आकर न जाने कहाँ जा पड़ी।

जब बीरन आदि मंदिर से बाहर आये, तो तिल्लो को न देखकर बीरन ने पंडे से पूछा, 'तिल्लो कहाँ है ?'

भीड़ में बहू का हाथ छूट गया। मैंने अपने दोनों साथियों को उसकी खोज करने को भेज दिया है। घबराओ नहीं जजमान ! वह अभी तुम्हारे पास आ जायगी। चलो। हम लोग भी चलकर खोजें।' कहकर पंडा बीरन को लिए हुए एक ओर को रवाना हुआ।

भीड़ के भीषण धक्कम-धक्के से तिल्लो दूर जा पड़ी। जिस समय धक्कम-धक्का कम हो गया, उस समय यह देखकर तिल्लो को महान् आश्चर्य हुआ कि वह अपने साथियों से छंटकर उस जगह आ पहुँची है, जहाँ पशु-बलि दी जाती है। उस विस्तृत आँगन में चारों ओर खून-ही-खून फैला हुआ था। बकरों की चिल्लाहट से वातावरण गूंज रहा

था। मातेश्वरी की पूजा के लिए उतावले हुए जन-समुदाय को यह ध्यान कहाँ था, कि वे एक निरीह प्राणी की बलि देकर स्वयं मातेश्वरी को भी रुष्ट कर रहे हैं। तिल्लो पशु-बलि का यह भीषण दुष्कृत्य खड़ी-खड़ी देख रही थी। उसने देखा एक पूजनार्थी की तीखी कटार ऊपर उठी और घप्प से बेचारे बकरे के सर पर जा पड़ी। बकरे का सर छटककर दूर जा गिरा। भय तथा घृणा से तिल्लो ने अपनी आँखें मूँद लीं। जो मानव समाज इतना नीच एवं घृणित है कि निर्बल प्राणियों के जान की उसे कुछ परवाह ही नहीं है, उसके प्रति तिल्लो के हृदय में घृणा क्यों न उत्पन्न हो?

'हैं! तुम यहाँ खड़ी हो? और तुम्हारे पति तुम्हारे लिए बहुत परेशान हैं,' एकाएक दो पंडों ने तिल्लो के सामने आकर कहा। तिल्लो ने उन्हें पहचाना, ये दोनों अद्रिज पंडे के साथी थे।

'तुम मेरे साथ चलो। तुम्हारे पति तुम्हें इधर-उधर खोज रहे हैं,' एक पंडे ने कहा।

'परन्तु वे हैं कहाँ?' तिल्लो ने पूछा। पंडे ने उत्तर दिया, 'वे अद्रिज के घर पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। चलो, जल्द चलो।'

तिल्लो उन दोनों संड-मुसंड पंडों के साथ जाते हुए हिचकी, परन्तु अन्त में उसे जाना ही पड़ा। एक पंडा आगे और एक पंडा पीछे चला। बीच में तिल्लो सशंकित हृदय से चलने लगी। अपार भीड़ में इधर-उधर धक्के खाते हुए लगभग एक घंटे में भीड़ से बाहर निकले और एक ऐसी गली में जा पहुँचे, जो बहुत सँकरी थी और एक भी मनुष्य वहाँ दृष्टिगोचर न होता था। इस निर्जन एवं सँकरी गली में आकर आगे वाला पंडा एकाएक रुककर खड़ा हो गया और उसने लपककर तिल्लो का हाथ पकड़ लिया। तिल्लो चीख उठी। अब उसे ध्यान आया कि उसने इन दोनों शैतान पंडों के साथ आकर कितनी बड़ी गलती की है। परन्तु अब हो ही क्या सकता था? कराल काल के समान वे दोनों कामुक पंडे उसके सतीत्व को ग्रसने के लिए तैयार थे। तिल्लो सोचने लगी, क्या यहाँ पंडों का यही व्यापार है? क्या भोली-भाली कुल-कामिनियों का सतीत्व नष्ट करना ही इन नर-राक्षसों का कार्य है? मातेश्वरी के पवित्र धाम में क्या इसी प्रकार का पापाचार होता है?

एक पंडे ने झुककर तिल्लो को अपनी गोद में उठा लिया और पास ही घर में घुसकर भीतर से किवाड़ बन्द कर लिए। दूसरा पंडा

भी उसके साथ था। भीतर ले जाकर तिल्लो एक चारपाई पर पटक दी गई। इतने में ही दरवाजे पर थपकी की आवाज़ सुन पड़ी। एक पंडे ने आगे बढ़कर किवाड़ खोला और मुस्कराते हुए अद्रिज ने वहाँ प्रवेश किया। अद्रिज को देखकर पहले पंडे ने कहा, 'लीजिए गुरुजी ? हम लोगों ने अपना काम पूरा कर दिया। अब लाइये इनाम।'

'शाबाश बेटा ! तुम दोनों पर मैं बहुत प्रसन्न हूँ,' अद्रिज ने कहा, 'अब आओ ज़रा इन रति-रानी का मज़ा लूट लें, फिर इनाम लेते रहना।'

'परन्तु आपके जजमान कहाँ हैं ?' दूसरे ने पूछा।

अद्रिज कहने लगा, 'उसे मैं अपने घर बैठाकर और उससे यह कहकर कि मैं तुम्हारी स्त्री की खोज में जाता हूँ, यहाँ चला आया हूँ।' अब इस कली का मज़ा लूटकर, तब इसे ले जाकर उसे सौंप दूँगा।' इतना कहकर अद्रिज तिल्लो के पास आकर खड़ा हो गया और बोला, 'देखो नाज़नीं ! हमारी इच्छाओं की पूर्ति करने में ही तुम्हारी कुशल है। अब तुम हमसे बचकर नहीं जा सकतीं। कोई तुम्हें बचाने भी नहीं आ सकता। अतः मातेश्वेरी में पवित्र धाम में पुण्य लूटती हुई तुम हमारी आगोश में खेलो। महीने, दो महीने तक सुख लूटने के बाद मैं तुम्हें किसी पण्डे के यहाँ रख दूँगा, जहाँ उसकी रखेल के रूप में रहकर तुम सदैव आनन्द में मग्न रह सकोगी। यहाँ प्रत्येक पण्डे के घर में जो कई औरतें हैं, वे तुम जैसी फँसाई गई ललनाएँ हैं, जो इस पवित्र धाम में पुण्य लूटने के लालच में पण्डों के धक्के खाने के लिए आती हैं।'

'राक्षसो !' तिल्लो कहने लगी, 'माँ के पवित्र नाम पर कलंक लगाने वाले नरपिशाचो ! भोले-भाले यात्रियों की पत्नियों पर दुराचार करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती ? जिससे तुम्हारी रोज़ी चलती है, जिनके दिये हुए दो पैसों पर तुम्हारा पेट निर्भर है, जिनके द्वारा दी गई उत्तमोत्तम पकवानों को खाकर तुम इतने मोटे हो गये हो, उन्हीं यात्रियों पर कुठाराघात करते हुए तुम्हें ज़रा भी हिचक नहीं होती ? माँ का प्रभाव सुनकर दूर के यात्री माँ के चरणों में आते हैं, परन्तु यहाँ आकर जब राक्षस पण्डों द्वारा उनका सर्वस्व, धन, मान, मर्यादा-अपहरण कर लिया जाता है; तब वे समझते हैं कि यह पवित्र भूमि नहीं, दुराचार का कलुषित वातावरण है, यह मन्दिर नहीं, व्यभिचार का अड्डा है, तुम दुराचार के अवतार हो।'

अद्रिज पण्डा का घर एक गली के मुहाने पर पड़ता था। घर न तो बहुत बड़ा था और न बहुत छोटा ही। इस समय अद्रिज के घर के सामने वाली कोठरी में बैठा हुआ बीरन अनेक प्रकार की चिन्ताओं में निमग्न हो रहा था। एक घंटे से ऊपर हुआ, जबकि अद्रिज उसे यहाँ पहुँचा गया था और उससे यह कह गया था कि जजमान! तुम यहीं बैठो, मैं उसे खोजकर अभी लाता हूँ। तुम मेरे साथ रहने से व्यर्थ परेशान होगे। परन्तु बहुत देर बीत जाने पर भी अभी तक वह न लौटा। बीरन रह-रहकर तिल्लो के लिए घबरा उठता। उस पर न जाने क्या बीत रही होगी। यही सोचकर बीरन परेशान था।

धीरे-धीरे पास वाले दरवाजे के किवाड़ खुले और एक रमणीय रमणी-मूर्ति ने सर निकालकर अन्दर झाँका। वहाँ परबीरन को अकेला बैठा हुआ देखकर वह रमणी धीरे धीरे कमरे में प्रविष्ट हुई और इठलाती हुई आकर बीरन के सामने खड़ी हो गई! एक अद्वितीय सौंदर्य प्रतिमा को अपने सामने देखकर बीरन अवाक् रह गया। उसे ऐसा लगा, मानो मद वाली मदिरा साक्षात् उसके सामने खड़ी हो। बीरन को अपना दिल उड़ता हुआ-सा जान पड़ा, फिर भी उसने यथाशक्ति अपने मन को संयत किया।

'मैं तुम्हारी पंडाइन हूँ।' वह रमणी निस्संकोच भाव से कहने लगी, 'तुम्हारे पंडे की स्त्री हूँ। लेकिन घबड़ाओ नहीं जजमान! मैं तो तुम्हें प्रसन्न करने आई हूँ।'

इतना कहकर पंडाइन वीरन से एकदम सटकर चारपाई पर जा बैठी और...परन्तु दूसरे ही क्षण बीरन झटककर उठ खड़ा हुआ और गरजकर बोला, 'पापिष्ठा!'

'इतने से ही घबड़ा गए जजमान!' पंडाइन मुस्कराती हुई कहने लगी, 'अगर तुम्हें यहाँ की कुल बातें विदित होतीं, तो तुम और भी घबड़ाते। सुनो! यहाँ पर पुरुष यात्रियों से पंडाइनों का काम चलता है और स्त्री यात्रियों से पंडों का। यह बात सब पर विदित है। यहाँ पर आकर पुरुष पंडाइनों की प्यास बुझाते हैं और स्त्री पंडों की। समझे!'

'इतना व्यभिचार! इतना पापाचार!' बीरन हाँफते-हाँफते बोला।

'व्यर्थ का समय न खोकर जीवन का आनन्द लूटो जजमान! आओ! मेरी प्यास बुझाकर अपनी भी आग ठंडी कर लो। वासना

की अग्नि कैसी भयानक होती है, इसे तो तुम जानते ही होगे। अतः आकर अपने और मेरे सीने में धधकती हुई विषयाग्नि की भीषण विभीषिका बुझा दो।' पंडाइन ने कहा और लपककर बीरन से लिपट गई। परन्तु इतने पर भी बीरन का मन विचलित न हुआ और उसने पंडाइन को निर्दयतापूर्वक धकेलकर कहा, 'दूर रह पापिष्ठा ! मुझे न मालूम था कि इस पवित्र स्थान में इस प्रकार का पापाचार होता है। मैं नहीं जानता था कि मातेश्वरी की नगरी में ऐसा अनर्थ होता है, नहीं तो मैं कभी इधर पैर न रखता।'

कुछ रुककर वह पुनः कहने लगा, 'क्या तिल्लो पर भी ऐसा ही कोई दुराचार कर रहा होगा ! नहीं-नहीं यह नहीं हो सकता। मैं उसे बचाऊँगा। उसके लिए सारा विन्ध्य-धाम खोज डालूंगा।'

इतना कहता हुआ बीरन कमरे के बाहर आ गया और दौड़ता हुआ गली-गली में चक्कर लगाने लगा।

एक सुनसान गली में आकर वह रुक गया। पास ही के मकान से एक दर्दनाक चीख सुनाई पड़ी थी। बीरन चौंककर बोला, 'तिल्लो। ज़रूर यह उसी की आवाज़ है ?' वह उस मकान के बन्द दरवाज़े पर टूट पड़ा। बीरन के प्रबल वेग को वह पुराना दरवाज़ा न सम्भाल सका और चर्राता हुआ अलग हो गया। बीरन भीतर प्रविष्ट हुआ। उसने देखा—अद्रिज एवं उसके दोनों साथी तिल्लो पर दुराचार करने को प्रस्तुत हैं और तिल्लो चारपाई पर निस्सहाय पड़ी है। यह देखते ही बीरन की आँखों में खून उतर आया। उसने लपककर एक पंडे की गर्दन पकड़ उसे ज़मीन पर दे मारा और पास ही पड़े हुए पत्थर के टुकड़े को उठाकर ज़ोरों से उसकी गर्दन पर आघात किया। ताकतवर बीरन को देखते ही तीनों पंडे अपनी जान बचाकर भाग निकले। बीरन भी तिल्लो को लेकर कमरे से बाहर निकला और एक ओर को रवाना हुआ। बीरन और तिल्लो दोनों जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाये जा रहे थे, ताकि उन पर फिर कोई विपत्ति न आ जाय। अब वे दोनों शीघ्राति-शीघ्र इस व्यभिचार के अड्डे से बाहर हो जाना चाहते थे।

कुछ दूर जाने पर दोनों ने देखा कि आद्रिज पंडा रास्ते पर खड़े हुए दो सिपाहियों से न जाने क्या-क्या बातें कर रहा है। बीरन के मन में शंका हुई। वह बोला, 'यह शैतान पंडा उन सिपाहियों से अवश्य ही हमारे विषय में कोई बात कर रहा है। कदाचित हमें फँसाना ही उसका उद्देश्य है। खैर ! बढ़े चलो, देखा जायगा।'

जब बीरन और तिल्लो दोनों सिपाहियों के सामने पहुँचे तो एक सिपाही ने कहा, 'ओ आदमी ! तू इस औरत को भगाकर कहाँ ले जाना चाहता है ! इन पंडाजी ने अभी हमसे कहा है कि यह औरत भगाई हुई है।'

'नहीं सरकार ! यह तो मेरी स्त्री है', बीरन गिड़गिड़ाकर बोला।

'झूठा, पाजी कहीं का।' सिपाही कहने लगा, 'तू जरूर इसऔरत को भगाये ले जा रहा है। तेरी सूरत ही इस बात की गवाही दे रही है। चल ! तुझे थाने में चलना होगा।'

बीरन बहुत गिड़गिड़ाया, मगर सिपाहियों को जरा भी दया न आई। लाचार बीरन और तिल्लो को थाने पर आना पड़ा। दोनों दरोगा के सामने लाये गये।

'यह तुम्हारी औरत हरगिज़ नहीं।' दरोगा ने कहा।

'नहीं सरकार ! यह मेरी स्त्री है। हम दोनों आज प्रातःकाल ही 'धाम' में आये थे', बीरन बोला।

'मुझे तुम्हारी बातों का विश्वास नहीं। जब तक तुम्हारी बेकसूरी का पूरा सबूत नहीं मिल जाता, तब तक तुम दोनों को हिरासत में रखा जायगा।' दरोगा कहता गया, 'जमादार ! इन दोनों को अलग-अलग कमरों में रखो।'

'जो हुक्म सरकार !' जमादार ने कहा।

बीरन और तिल्लो अलग-अलग कमरों में बन्द कर दिये गये। भाग्य की बिडम्बना ने, उन्हें जिस प्रकार पद-दलित किया, यह आश्चर्य की बात नहीं है। भवितव्यता की डोर में बँधे हुए प्राणीमात्र को अपनी इच्छानुसार चलने का अधिकार ही कहाँ !

बारह

उन दिनों मिर्ज़ापुर के गोल्डन टाकीज में 'मिनर्वा मूवीटोन' का 'पुकार' नामक चित्र चल रहा था। श्रेष्ठ कलाकारों द्वारा प्रस्तुत इस चित्र ने जनता में एक तूफान-सा मचा रखा था। 'ब्यूटी क्वीन' नसीम को देखकर सभी पागल हो उठे थे। डायरेक्टर सोहराब मोदी की अप्रतिम प्रतिभा देखकर सभी आश्चर्य से वाह-वाह कर रहे थे। सन्ध्या होते ही 'गोल्डन टाकीज' के गेट पर हज़ारों की भीड़ एकत्रित हो

जाती थी और पुलिस भी भीड़ को कन्ट्रोल न कर सकती थी। जिसे सिनेमा के राम से चिढ़ थी, उसने भी यह फिलम देखी और दाँतों तले उंगली दबा ली। स्कूल के विद्यार्थी कहते, Excellent, टीचर्स कहते है, Marvelous और जनता कहती, वाह-वाह !

उस दिन भी अपार भीड़ थी। टिकट मिलना असम्भव था। मनुष्य पर मनुष्य गिरे पड़ रहे थे। कहीं नाजायज़ टिकट बेचने वाले 'दो आने वाला, दस पैसे में' चिल्ला रहे थे। भीतर-बाहर सभी जगह जन-समुदाय उमड़ पड़ा था।

एक चमचमाती हुई मोटर गोल्डन टाकीज के गेट पर आकर रुकी और उस पर से उतरे हमारे चिर-परिचित नायक कुन्दन कुमार एवं उनकी धर्मपत्नी रसना। मोटर से उतरते ही गोल्डन टाकीज के मैनेजर ने कुमार और रसना का स्वागत किया। मैनेजर के साथ एक सज्जन और थे, जिन पर दृष्टि पड़ते ही कुमार बोल उठे, 'हलो जनरंजन, तुम यहाँ कैसे ?'

'यों ही घूमता-घामता इधर आ निकला था। मैनेजर साहब से सुना कि आज आप सिनेमा देखने आने वाले हैं, सोचा मिलता चलूं। आज कई वर्षों में हमारा मिलन हो रहा है,' वे सज्जन बोले।

'मिर्जापुर कब आये ?' कुमार ने पूछा।

'कल शाम को,' जनरंजन ने कहा, 'परन्तु आप तो इधर इतने बदल गये हैं कि पहचाने ही नहीं जाते। और यह कौन ? भाभी हैं क्या ?'

'हाँ ! यह तुम्हारी भाभी ही हैं, इतना कहकर कुमार रसना से बोले, 'रसना ! ये मेरे क्लासफ़ेलो हैं। बी० ए० में हम दोनों साथ थे। इसका मकान आसाम में है। नाम है इनका जनरंजन गोविन्द कौशल्य।'

कहना न होगा कि रसना ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। जिस प्रकार कुमार पर पश्चिमीय सभ्यता का रंग चढ़ चुका था, उसी प्रकार रसना पर भी। वह बहुधा कुमार के साथ मोटर पर घूमने जाती थी। नाच, तमाशे एवं सिनेमाघरों में दोनों पति-पत्नी साथ रहा करते थे। कुमार द्वारा परिचय पा जाने पर रसना ने जनरंजन का अभिवादन किया, साथ ही जनरंजन ने भी उद्दण्ड मुस्कराहट के साथ उसका उत्तर दिया।

'खेल बिगिन होना चाहता है।' आप लोग बाक्स में चले चलें, मैनेजर ने नम्रतापूर्वक शब्दों में कहा।

'हाँ हाँ ! चलो जनरंजन वहीं बैठकर बातें होंगी', कुमार बोले।
'जी नहीं,' जनरंजन कहने लगा, 'मुझे तो माफ कीजिए, मैं आपका साथ नहीं दे सकूँगा। मुझे कई आवश्यक कार्य करने हैं।'

'आवश्यक कार्य पीछे होंगे। अभी चलो हमारे साथ,' कहकर कुमार जनरंजन को घसीट ले चले। सब एक सुसज्जित बाक्स में आकर बैठ गये। बाक्स के आगे रेशमी पर्दा खिंचा हुआ था। इनके बैठते ही एक ब्वाय आकर तीन गिलास और दो सोडे की बोतलें एक छोटी-सी मेज़ पर रख गया। एक बड़े ज़मींदार के फैशनेबुल बेटे के स्वागत के लिए सिनेमा के मैनेजर ने सभी प्रबन्ध कर रखा था। ऐसे बड़े आदमी को भला कौन न प्रसन्न करना चाहेगा ?

'एक अद्धा ह्वाइट हार्स ब्वाय !' जनरंजन ने ब्वाय से कहा।

'आल राइट सर !' कहकर ब्वाय चला गया और तुरन्त ही विलायती शराब का एक अद्धा लाकर मेज पर रख दिया।

'यह शराब क्यों मँगाई है तुमने !' कुमार ने पूछा।

कुमार ! यह 'वेस्टर्न सिविलाइज़ेशन की पहली निशानी है।' कहते-कहते जनरंजन ने बोतल का कार्क खोला और दो गिलासों में थोड़ी-थोड़ी सी शराब उँडेल कर उनमें सोडा मिलाया और एक कुमार की ओर बढ़ाकर कहा, 'लीजिये कुमार ! बिछड़े हुए दोस्त की याद में...'

कुमार तड़पकर उठ खड़े हुए और बोले, 'जनरंजन ! ...' इसके बाद वे कोई कड़ी बात कहने ही जा रहे थे कि एकाएक रुक गए। उन्हें वे दिन याद हो आए, जब वे और जनरंजन एक ही कालेज में पढ़ते थे। किस प्रकार जनरंजन और उनमें भिन्न-भिन्न विषयों पर बहस होती थी, और किस प्रकार वह बहस बढ़ते-बढ़ते झगड़े तथा मार-पीट का रूप धारण कर लेती थी एवं किस प्रकार वह आवेश शान्त हो जाने पर दोनों मित्र पुनः 'एक जान दो शरीर' हो जाते थे, यह सोचकर कुमार ने अपना क्रोध सम्भाला और पुनः कोच पर बैठ गये।

'ले लो न ! जब, इतना आग्रह कर रहे हैं', रसना ने कहा।

'देखो न भाभी ! जनरंजन ने रसना पर एक वासनापूर्ण कटाक्ष करते हुए कहा, 'इतने दिनों के बाद आज तो भेंट हुई है फिर भी कुमार को इसका कुछ ध्यान ही नहीं। लो, तुम्हीं इन्हें दे दो भाभी !'

जनरंजन ने गिलास रसना के हाथ में दे दिया और देते समय

उसकी सुकोमल कलाई पर धीमे से चुटकी भी काट ली। रसना अजीब अन्दाज से मुस्करा उठी। कुमार ने, रसना के यह कहने पर कि तुम भी दोस्त की कद्र करना नहीं जानते, उसके हाथ से गिलास थाम लिया और दूसरी ओर मुँह फेरकर गिलास का पदार्थ गले के नीचे उतारने लगे। इधर कुमार का मुँह दूसरी ओर होते ही रसना का व्यापार वहाँ भी चालू हो गया।

जनरंजन ने अपना गिलास भी खाली कर दिया। शराब गले के नीचे उतरते ही कुमार के बदन में कंपकंपी दौड़ गई। शराब इतनी तेज थी कि तुरन्त ही उन पर उसका भारी असर हुआ, और खेल शुरू होने के साथ ही कुमार नशे से बेहोश होकर कोच की एक ओर लुढ़क पड़े।

'अब हम लोग स्वतन्त्र हैं,' जनरंजन ने कहा। रसना, वासना की प्रतिमूर्ति रसना, वह चाहती थी भिन्न-भिन्न भ्रमरों को अपना रस चखाना और यहाँ उसे ऐसा ही भ्रमर मिल गया था, जो उससे भी बढ़कर रसिक उससे भी अधिक वासना का दास एवं उससे भी ज्यादा इन्द्रियलोलुप था। उस शैतान दोस्त ने दोस्त के साथ दगाबाज़ी की। जिस कुमार ने उसे अपना अत्यन्त मित्र समझा था, जिसने उसकी प्रसन्नता के कारण उस अपवित्र मद्य को भी होंठों से लगाया था, हाय! उसी आस्तीन के साँप ने उसे डस लिया और उनकी पत्नी, जिसने अग्नि को साक्षी देकर केवल उन्हीं को अपना सर्वस्व दान करने का वचन दिया था, वह भी···।

एकाएक कुमार ने अँगड़ाई लेकर आँखें खोल दीं और पुकारा रसना! रसना!!'

रसना जाकर उससे लिपट गई और बोली, 'क्या है प्राण?'

एकाएक कुमार का बदन सिहर उठा। उसकी साँस ज़ोरों से चलने लगी। उसने रसना को ज़ोरों से ढकेल दिया और काँपते स्वर में बोले, 'दूर रहो! पिशाचिनी!'

रसना धम्म-से पृथ्वी पर गिर पड़ी, परन्तु तुरन्त ही उठकर बोली, 'तुम्हें क्या हो गया है प्राण?'

शीघ्र ही कुमार का उद्वेग शान्त हो गया। वे बोले, 'रसना। प्रिये मुझे क्षमा करना। नशे के कारण मेरी तबीयत खराब होती जा रही है। मुझे उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रह गया है। अब मैं घर जाना चाहता हूँ। तुम पूरा खेल देखकर तब आना।'

'मगर अकेले ही···' रसना हिचकिचाती हुई बोली।

'जनरंजन तो साथ में है ही, वह तुम्हें पहुँचा देगा। मोटर तुम्हारे लिये छोड़े जा रहा हूँ। मैं किसी मामूली तांगे में चला जाऊँगा!' कहकर लड़खड़ाते हुए कुमार बाक्स के बाहर चले गये। इधर वासना की तृप्ति का खूब ही दौरदौरा था। रसना और जनरंजन बिस्मृत से हो उठे। उन्हें पाप-पुण्य का, कर्म-अकर्म का कुछ भी ज्ञान न रह गया। वे तो वासना की प्रचण्ड अग्नि को इन्द्रिय तुष्टिरूपी वारि से शीतल कर रहे थे।

खेल समाप्ति पर आ गया, परन्तु इन दोनों को पता नहीं। जब परदे पर लिखा गया 'गुडनाइट' और इसके बाद ही बत्तियाँ एकाएक जल उठीं, तब इनकी तन्द्रा भंग हुई और बाहर आये। बाहर ही मोटर खड़ी थी। शोफर ने कुमार को न देखकर रसना से पूछा, 'छोटे सरकार कहाँ हैं बहूरानी?'

'वे पहले ही चले गये हैं,' रसना ने कहा।

जनरंजन और रसना आकर मोटर में बैठ गये। मोटर राजापुर की ओर रवाना हुई। रसना ने जनरंजन से कहा, 'कल दिन में हमारे घर आओगे न?'

'अवश्य,' जनरंजन ने कहा।

घर पहुँचकर रसना ने देखा कुमार अभी तक घर नहीं आये हैं। रसना सोचने लगी, 'वे अभी तक नहीं आये। नशे की झोंक में बद-हवास होकर कहीं गिर तो नहीं पड़े?' उसने शोफर से कहा, 'वे अभी तक घर नहीं लौटे हैं, तुम जाकर उनका पता लगाओ। और ये जनरंजन भी तुम्हारे साथ जा रहे हैं, ये जहाँ कहें उन्हें उतार देना।'

'बहुत अच्छा!' कहकर शोफर ने मोटर स्टॉर्ट कर दी। जन-रंजन मोटर पर जा बैठा और अपनी दो उंगलियाँ होंठों पर रखकर Sing of Love प्रदर्शित किया। रसना ने भी वैसा ही किया। तत्पश्चात् मोटर आगे बढ़ गई। उसकी रोशनी दूर अति दूर हो गई, यहाँ तक कि आँखों की ओट में जाकर विलीन हो गई। इसी प्रकार मनुष्य के प्राण भी सांसारिक मायाबन्धन से दूर होते-होते अनन्त की ओर जाकर विलीन हो जाते हैं। यही तो ईश्वर का चक्र है।

× × ×

अदा ने कुन्दन कुमार की ओर देखा। उस समय कुमार की अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी। आँखें गड्ढों में धँसी हुई मालूम पड़ती

थीं। रक्तवर्ण कपोल शुष्क हो गए थे। अदा बोली, यह तुम्हारी दशा क्या है साजन !'

'अदा !' कुमार लड़खड़ाते हुए आकर एक कुर्सी पर बैठ गये और कहने लगे—'अदा ! मैंने आज शराब पी है।'

'शराब ?' अदा ने आश्चर्य से कहा।

'हाँ ! मैंने सिनेमा में आज जी भरकर शराब पी है।'

अदा को महान आश्चर्य हुआ। वह विश्वास ही न कर सकी, कुमार कभी शराब पी सकते हैं। वह ध्यानपूर्वक कुमार की गति-देखने लगी, परन्तु उनमें शराबी के कोई लक्षण वर्तमान न थे। उनकी आँखें स्थिर थीं और भाव-भंगिमा सरल थी। उनके मुख पर दुःखातिरेक की एक स्पष्ट छाप विद्यमान थी। उनकी मुखाकृति पर करुणा की ऐसी दाहक छाया उपस्थित थी, जिस पर दृष्टि पड़ते ही यह स्पष्ट मालूम हो जाता था कि इस मनुष्य ने मानसिक उद्वेगों के साथ भयानक युद्ध किया है।

'तुममें शराबी के कोई भी लक्षण नहीं पाये जाते कुमार ! अदा ने कहा।

'अदा ! मैंने सचमुच शराब पी है। सचमुच···'

'परन्तु तुम तो ऐसे लग रहे हो, मानो अगाध दुःख-सागर तुम्हारे चारों ओर लहरें मार रहा हो। तुम्हारी दशा ठीक उस मनुष्य की तरह है, जो अपनी अमूल्य निधि अपनी ही आँखों द्वारा लुटते हुए देख चुका हो।' अदा ने कहा।

'अदा·· !' और इसके आगे कुमार कुछ न कह सके। उनके नेत्रों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित हो चली। अदा बोली, 'रोते हो साजन! ···एक दिन वह था, जबकि तुम मेरे आँसुओं को देखकर मेरी हँसी उड़ाया करते थे—और एक दिन आज है कि तुम स्वयं ही आँसू बहा रहे हो।

'आज से पहले मैं लोगों के आँसुओं को देखकर हँसता था अदा ! सोचता था, दुनिया में ऐसी कौन-सी चीज़ है जिसके लिये लोग आँसू बहाते हैं। लेकिन आज मुझे मालूम हो गया कि मेरा वह खयाल गलत था। माया के मद में दीवाना होकर मैं दूसरों के दुःख पर हँसता था, परन्तु आज···'

सड़क पर से जाता हुआ कोई मनुष्य गा रहा था।

माया मद में हँसता था, माया के दीवाने।
गली गली ठोकर खायेगा, माया के मस्ताने।।

कुमार कहते गये, 'परन्तु आज मुझे अपनी गलती स्पष्ट दृष्टि-गोचर हो रही है। आज मैंने जाना है कि ये अश्रुकण मनुष्य के हृदय में छिपी हुई भयानक वेदना के प्रतिरूप हैं।'

'साजन', अदा कहने लगी, 'हृदय के आवेश को शान्त करो,' अदा ने कुमार को अपने बाहुओं से कस लिया। दोनों युगल प्रेमी अपनी सुध-बुध खो बैठे। सड़क पर गाने वाला वह मनुष्य अभी तक अलाप रहा था—

हिलमिल करके प्यास बुझा ले, जीवन सफल बना ले।
चार दिनों में चला जायगा, प्रीति की रीति निभा ले।।

'तुममें कोई जादू है अदा!' कुमार बोले।

'और तुममें साजन!' अदा ने कहा और कुमार के होंठों पर अपने होंठ रख दिये।

तेरह

रसना ने एक अँगड़ाई ली, और चारपाई पर उठकर बैठ गई। इस समय कल रात की उच्छृंखलता के कारण उसके शरीर में मीठा-मीठा दर्द हो रहा था। उसकी कोठरी का दरवाज़ा अभी तक बन्द ही था, और यह देखकर उसे कुछ आश्चर्य भी हुआ क्योंकि दासी उसके कमरे का दरवाज़ा पाँच बजे प्रातः ही खोल दिया करती थी और इस समय कम से कम साढ़े सात बज गये थे। रसना चारपाई पर से उठकर दर-वाजे के पास आई और दरवाजे को खींचकर देखा, परन्तु दरवाजा न खुला। वह बाहर से मज़बूती के साथ बन्द था। रसना ने ज़ोरों से पुकारा, 'दासी! ओ दासी! कहाँ मर गईं सब?'

दासी की आवाज़ बाहर से सुनाई पड़ी, 'चुपचाप पड़ी रहें बहू रानी। आपको बाहर निकलने की आज्ञा नहीं है?', रसना गरज पड़ी, 'दासी! यह तू कैसी बेहूदी बातें कर रही है? किसकी आज्ञा से मेरा दरवाजा बन्द किया गया है?'

'स्वयं छोटे सरकार की आज्ञा से', दासी ने कहा।

रसना धम्म से पृथ्वी पर बैठ गई। तो क्या उसके पति उसकी

सारी गाथा जान गये ? उसने उस कमरे में दृष्टि फेरी। कहीं कुछ भी परिवर्तन न हुआ था। सब शृंगार की वस्तुएँ ज्यों-की-त्यों थीं।

इतने में ही बाहर से कुन्दन कुमार की आवाज सुनाई पड़ी, 'दासी ! दरवाजा खोल दो।' इसके बाद दरवाज़े की साँकल खोलने का शब्द हुआ और दूसरे ही क्षण वह खूबसूरत दरवाज़ा धीरे-धीरे पूरा खुल गया। रसना ने उधर दृष्टि फेरी, देखा, प्रसन्न वदन कुमार दरवाज़े के बीच में खड़े हैं। कुमार ने धीरे-धीरे कमरे में पैर रखा और रसना के आगे आकर खड़े हो गये। उनके मुख पर एक क्रूर मुस्कान थी, ऐसी मुस्कान, जैसी भयानक सिंह के मुँह पर उस समय होती है, जब कि वह अपने भक्ष्य को सामने देखता है। रसना काँप उठी। उसके पैर लड़खड़ाने लगे। फिर भी उसने अपना चित्त स्थिर किया और कुमार से बोली, 'प्राण ! तुम बड़े ही भयानक लग रहे हो आज।'

कुमार उसकी बात का कुछ भी उत्तर न देकर, एक दूसरी ही बात पूछ बैठे, 'कल खेल कैसा था ?'

'अच्छा ही था,' रसना बोली, मगर मैं अच्छी तरह समझ न सकी प्राण ! क्योंकि मेरे सर में भयानक दर्द था।'

'और इस दर्द की दवा मैं खूब जानता हूँ दगाबाज !' एकाएक कुमार गरज उठे 'मैं अब अन्धा नहीं रहा। मेरे कोमल कलेजे पर किस प्रकार दाल दली जा रही थी, वह मैं खूब जान गया। स्वच्छाकाश पर किस प्रकार काले बादल घिर आते हैं, धवल चन्द्र को राहु किस प्रकार ग्रस लेता है। काली साँपिन किस प्रकार विष उगलती है, यह मैंने समझ लिया है।'

'प्राण ! यह तुम क्या कह रहे हो ?', रसना भय-जर्जरित शब्दों में बोली।

'मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह तुम बखूबी समझ रही हो, फिर भी मेरे सामने अनजान बनना चाहती हो। मैं अब भी कहता हूँ, तुम्हें अब कुन्दन कुमार नहीं; जनरंजन चाहिये, वीरन और कारिन्दा चाहिये। मैं अब सब जान गया हूँ रसना ! तुम ऐसी कली हो, जो भ्रमरों को अपना पराग लुटाना चाहती हो; तुम ऐसी रसना हो, जो योग्य पुरुषों को भी कुपथ्य पर घसीट ले जाने की शक्ति रखती हो। रसना ! तुम वेश्या हो ! फ़ाहशा हो ! !'

'प्राण ! बस करो, बस करो,' रसना हाँफते हुए बोली और धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ी। कुमार क्रुद्ध सिंह की भाँति कहते गये, 'जिसने

तुम्हें सदैव अपने शरीर का एक अंग समझा, जिसने सदा तुमसे 'दूध-पानी' सा व्यवहार किया और जिसने सदा तुमको अपने कलेजे से सटा रखा, उसी को, उसी निष्कपट को, उसी सरल हृदय को, उसी गरीब-दुखिया को डस लिया; तुमने मेरी सरलता के साथ विश्वासघात किया। परन्तु जैसा तुम सोचती थीं, वैसा मैं तुम्हारी ओर से असावधान नहीं था। तुम लोगों ने मुझे शराब पिलाकर सोचा, मनमाना रास रचें; परन्तु वह शराब मेरे गले के नीचे न उतरी। उसे मैंने मुँह फेर-कर पास ही रखे हुए पीकदान में डाल दिया और ऐसा बन गया मानो मुझे बेहद नशा चढ़ा हो। उसी बनावटी नशे में मैंने तुम्हारा वास्तविक रूप देखा। मैंने देखा कि किस प्रकार कुल-ललनाएँ वासना के चंगुल में फँसकर वेश्या बन जाती हैं। मैंने देखा किस प्रकार शैतान दोस्ती के नाम पर धब्बा लगाकर समाज में अपना सर ऊपर उठाये चलते हैं। मैंने सब कुछ देखा और सन्न रह गया। मेरी तन्द्रा भंग हो गई। मेरी मोह निद्रा टूटी, मैंने देखा कि जिसे मैं अपनी पत्नी समझ रहा था, वह है काले दिल वाली एक भयानक डायन। यदि मैंने उससे अधिक सम्पर्क रखा, तो बरबाद हो जाऊँगा। इसीलिये मैंने तुम्हें सारी दुनिया से अलग करके इस कोठरी में बन्द कर देने की ठानी। लेकिन रसना! तुमने मेरे साथ दगा की। तुमने मुझे धोखा दिया मैं नहीं जानता था कि इस सुन्दर आवरण के भीतर ज़हर छिपा है। यदि मैं यह जानता होता, तो इस ज़हर के प्याले को कभी अपने होंठों से न लगाता। आह! तुम्हारे ही कारण उस दिन बेचारे बीरन को मैंने बुरा-भला कहा और···'

'प्राण!' रसना कुछ कहने ही जा रही थी कि कुमार गरज उठे, 'चुप रहो! मैं एक शब्द भी सुनना नहीं चाहता।'

रसना सन्न हो गई। जिस प्रकार उद्दंड सिंह के आगे मृगी का खून सूख जाता है, ठीक वही हाल रसना का था। वह न्याय के एक भयानक पुतले के सामने खड़ी थी, वह पुतला जो मोम से मुलायम हृदय वाला था, परन्तु अन्याय देखकर मनुष्य-भक्षी राक्षस तक हो सकता था।

'क्या है?' कुन्दन कुमार ने दासी से पूछा, जो अभी-अभी दरवाज़े के पास आकर खड़ी हुई थी।

'एक सज्जन आपसे मिलने आये हैं। अपना नाम जनरंजन गोविन्द बतलाते हैं।'

'वह शैतान भी आ गया?' कुमार बोले, 'अच्छा! उसे ही भेज

दो।'

दासी चली गई। कुमार ने रसना से कहा, 'अपने को जल्द स्थिर कर लो। जनरंजन को यह न मालूम होने पावे कि यहाँ पर क्या हो रहा था। जल्द करो।

रसना उठकर खड़ी हो गई। उसने अपनी अस्त-व्यस्त चीज़ें ठीक कर लीं। इसी समय उस कमरे में हँसते हुए जनरंजन ने प्रवेश किया। उसे अभी तक यह न मालूम कि कुमार उसकी सारी करतूतें जान गये हैं। वह आकर एक कुर्सी पर बैठ गया और कुमार से बोला, 'आज सुबह ही आपकी याद आ गई कुमार! इसी से सोचा, भेंट करता आऊँ। और भाभी! यह क्या! तुम बहुत सुस्त दीख रही हो?'

'नहीं नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूँ,' रसना ने कहा।

'रसना!' कुमार रसना से इस प्रकार बोले, 'मानो अब तक कोई नई बात न ही हो, जनरंजन के लिए जरा जलपान तो लाओ।'

जलपान आया। जलपान कर लेने के पश्चात् जनरंजन ने कहा, 'कुमार! चलिये न कहीं घूम आया जाय।'

"मैं तो इस समय बहुत बिज़ी हूँ भाई! स्टेट के कई काम देखने हैं। तुम रसना को ले जा सकते हो,' कहकर कुमार ने रसना की ओर व्यंगात्मक दृष्टि से देखा। रसना सिहर उठी। बोली, 'नहीं नहीं! मैं नहीं जाना चाहती। मैं नहीं जाऊँगी।'

'तुम्हें जाना ही होगा रसना!' कुमार कठोर स्वर में बोले, 'मेरे दोस्त की खातिर तुम क्या इतना भी नहीं कर सकतीं? मैं जाकर मोटर को तैयार करने की आज्ञा दिये देता हूँ। तुम जल्द तैयार हो लो।'

इतना कहकर कुमार कमरे के बाहर चले गये। थोड़ी देर में रसना ने भी सब तैयारी कर ली। जनरंजन और रसना बाहर आये। सड़क पर शोफर मोटर लिये खड़ा था। रसना ने शोफर से पूछा, 'वे कहाँ हैं?'

'छोटे सरकार किसी काम से अभी-अभी बग्घी पर गये हैं,' शोफर ने उत्तर दिया। रसना और जनरंजन मोटर पर जा बैठे। मोटर 'बरघाट' की ओर चल पड़ी। बरघाट, राजापुर से सात मील की दूरी पर घनघोर जंगल के मध्य एक रमणीय प्राकृतिक स्थान है जब मोटर बरकछा बाज़ार को पार कर आगे बढ़ी, तो रसना ने जनरंजन से धीमे स्वर में कहना प्रारम्भ किया, 'वे सब जान गये हैं।'

जनरंजन इस प्रकार चौंक पड़ा, मानो उसे सैकड़ों बिच्छुओं ने डंक

मार दिया हो। वह बोला, 'क्या कहा है ? क्या कुमार सब कुछ जान गये ?'

'हाँ, उन्हें सब मालूम हो चुका है।'

'यह बात तो बहुत भयानक हुई,' जनरंजन ने कहा।

'अवश्य,' रसना ने कहा, 'अब हमारी खैर नहीं। वे बड़े ही गम्भीर प्रकृति के पुरुष हैं, परन्तु उनकी यही गम्भीरता कभी-कभी उग्रातिउग्र रूप धारण कर लेती है और तब कुछ न कुछ होकर ही रहता है। आज भी जो उन्होंने हम दोनों को इस प्रकार स्वतन्त्रतापूर्वक विचरण करने की आज्ञा दे दी है, वह मतलब से खाली नहीं है। मेरी दाईं आँख फड़ककर इस बात की सूचना दे रही है कि इसका अन्त भयंकर होगा।'

'तो क्या किया जाय ?' जनरंजन ने पूछा।

'मैं शेर के मुँह में जाना पसन्द करूँगी, परन्तु उनके सामने जाना नहीं।'

'इसके माने ?' जनरंजन बोला।

'इसके माने यही हैं प्यारे ?' रसना जनरंजन के गले में हाथ डालकर कहने लगी, 'तुम मुझे चाहते हो औरमैं तुम्हें। आओ, चलो, कहीं दूर चलकर अपनी दुनिया बसायें। हम लोग ऐसी जगह चलें, जहाँ उनकी छाया भी न जा सके।'

बात तो तुमने ठीक कही है। मैं सब तरह तैयार हूँ। परन्तु चला कब जायगा ?'

'अभी। इस जगह से। घनघोर जंगल से भागने में हमें बहुत सुविधा होगी। तुम शोफर से यहीं मोटर रोकने को कहो। मोटर रुकते ही घूमने के बहाने हम लोग जंगल ही जंगल निकल चलेंगे। फिर हमारा कौन पता पायेगा ?' रसना ने कहा।

ये सब बातें इतने धीरे-धीरे हुईं कि इनका एक शब्द भी शोफर न सुन सका। अन्त में जनरंजन ने मोटर रोक देने को कहा। मोटर रुकते ही दोनों उतर पड़े और शोफर से यह कहकर कि तुम यहीं रुको, हम लोग घूम के आते हैं, पास के घनघोर जंगल में घुस गये। थोड़ी दूर जाने पर दोनों ने खूब तेज़ी के साथ चलना शुरू किया यहाँ तक कि घंटे-भर में ही दो कोस का रास्ता तय कर डाला। परन्तु इतनी जल्दी-जल्दी चलने में दोनों हाँफने लगे। अन्त में रसना एक पहाड़ी चट्टान पर बैठती हुई बोली, 'अब तो मुझसे आगे नहीं चला जायगा। थोड़ी देर सुस्ताकर चलूँगी। अब हमें कोई नहीं पा सकता। इस समय

हम और तुम स्वतन्त्र हैं आओ, इस सुहावने जंगल में एक होकर…'

'लेकिन मुझ अभागे का खयाल तो तुम लोगों ने भुला ही दिया। क्यों जनरंजन ?'—एकाएक पीछे से यह आवाज आई। रसना और जनरंजन—दोनों ने चौंककर पीछे की ओर देखा। उनके ठीक पीछे मोटर का शोफर खड़ा था। उसके हाथ में एक भयानक रिवाल्वर दिखाई पड़ रहा था।

'शोफर ! तुम ?' रसना के मुंह से निकला।

'शोफर नहीं, आपका खादिम'…कहकर शोफर ने अपनी नकली दाढ़ी और मूँछें अलग कर दीं। रसना देखते ही चीख उठी। जनरंजन के मुँह से केवल इतना निकला, 'कुमार आप ?'

कुमार दाँत पीसकर बोले, 'दोस्त के साथ दगा करने वाले नर-पिशाच ! और पति से धोखा करने वाली अधम कुलटा ! अब तुम दोनों मौत के समीप हो। यह मेरे हाथ का रिवाल्वर, तुम दोनों के कलेजे को एक क्षण में छलनी कर और तुम दोनों इसी निर्जन स्थान में सदैव के लिए सो जाओगे।'

इस समय कुमार की आँखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं। वे क्रोध से पागल हो उठे थे। पत्नी को वेश्या और दोस्त को दगाबाज जानकर वे अपने-आपको भूल गये थे। वे चाहते थे उन दोनों से बदला लेना। ऐसा बदला, जिससे वायु काँप उठे, आकाश थर्रा जाय, और मेघाछन्न नभमंडल चीत्कार कर उठे।

कुमार ने अपना रिवाल्वर ऊँचा किया और बोले, 'तुम दोनों ने समझा था कि चलकर स्वतन्त्रता का जीवन व्यतीत करेंगे, परन्तु यह न समझा कि जिस सरल हृदय व्यक्ति के मुँह पर काली कालिख पोतकर तुम लोग भाग रहे हो, वह तुम्हें यों ही—सूखा-सूखा ही—छोड़ देगा या नहीं। अब मैं तुम दोनों से भरपूर बदला लूँगा। तुम लोगों ने मुझे सताया है, मैं भी तुम्हें सताऊँगा। तुमने मुझे उजाड़ा है, मैं भी तुम्हें उजाड़ दूँगा। मृत्यु के ग्रास ! तैयार हो जाओ तुम लोग !'

एकाएक कुमार की अँगुली रिवाल्वर के घोड़े पर जा पड़ी और निकट ही था कि उसका वह शक्तिशाली रिवाल्वर रसना और जन-रंजन के शरीर को छिन्न-भिन्न कर देता कि कुमार के हृदय को एक झटका लगा। उनका हृदय न जाने क्यों विचलित हो गया। उनके अन्त:करण से एक अमर गीत प्रारम्भ हुआ। कोई उनके अन्त:करण में बैठा हुआ मधुर स्वर से गा रहा था—

क्यों रंगता है हाथ खून से, पागल ! जीवन रंग ले।
रंग ले अपने मन की नगरिया, मद माया मत संग ले।।

कुमार के हाथ का रिवाल्वर छूटकर भूमि पर गिर पड़ा। उनके अन्त:करण में बैठा हुआ देवता उन्हें धिक्कार रहा था। उन्होंने मन में सोचा कि भाग्य स्वयं अपराधियों को दण्ड देगा। वे बोले, 'मैं कलुषित रक्त से अपने हाथ रंगना नहीं चाहता। मैं तुम दोनों की जान छोड़ देता हूं। रसना ! तुम मेरे साथ चलो। घर पहुँचकर तुम्हें पुनः उसी प्रकार कैद में रहना पड़ेगा, जिस प्रकार आज प्रात:काल थीं। तुम जीवन-भर कैद का जीवन व्यतीत करोगी। कोई तुमसे मिलने न पायेगा, कोई तुमसे सहानुभूति प्रदर्शित न कर सकेगा। तुम इस संसार में निस्सहाय जीवन व्यतीत करती हुई रोते-रोते अपने प्राण दोगी। और जनरंजन तुम्हें मैं नियति के भरोसे छोड़ता हूँ। वही तुम्हारे अपराध का दण्ड देगी। तुमने दोस्त के साथ दगाबाजी की है, तुमने अपने मित्र की बसी-बसाई दुनिया उजाड़ी है···ईश्वर तुम्हें कभी क्षमा न करेगा। मैं तुम्हें इसी घनघोर जंगल में छोड़कर और रसना को लेकर जा रहा हूँ। यदि जंगली जानवरों से बचे रहे तो अपने घर को चले आना।

'नहीं नहीं ! मुझे इस जंगल में छोड़कर न जाइये,' जनरंजन चिल्लाकर बोला।

'जनरंजन ! वह देखो, सामने की ओर। अब तुम्हारा भाग्य स्वयं तुम्हारा निर्णय करेगा,' कुमार ने कहा।

जनरंजन ने सामने की ओर देखा और तुरन्त ही भय से अपनी आँखें मूंद लीं। वहाँ से दो सौ गज़ की दूरी पर एक कद्दावर चीता खड़ा हुआ इधर को ही देख रहा था। जिस समय जनरंजन ने पुन: अपनी आँखें खोलीं, उस समय उसने चीते को अपने से केवल सौ गज़ की दूरी पर खड़े पाया और रसना और कुमार को गायब देखा। कुमार रसना को लेकर चले गये थे। चीता मन्द गति से जनरंजन की ओर बढ़ा आ रहा था। जनरंजन का भयसे बुरा हाल था। इस समय पाप की भीषण विभीषिका उनके सन्मुख नाच रही थी। उसका पाप उसके सामने काल बनकर चला आ रहा था। दोस्त के साथ दगाबाजी करने का ऐसा भीषण परिणाम होगा, यह वह नहीं जानता था।

चीता जनरंजन से दस कदम की दूरी पर आकर खड़ा हो गया। इस समय उसकी आँखें एक अच्छा-सा शिकार पाकर प्रसन्नता से चमक रही थीं। और जनरंजन तो भय से अपनी आँखें मूंदे हुए चित्रलिखित-

सा खड़ा था ! मृत्यु के भय से उसे जर्जर बना डाला था। पापी मनुष्य मृत्यु से डरते ही हैं। एक भीषण गर्जना से सारा जंगल कम्पायमान हो उठा। इसी भीषण नरसंहारी जानवर ने एक भयानक शोर किया। दूसरे ही क्षण जनरंजन ने अपने को उस दुर्दान्त जानवर के नीचे पाया।

× × ×

बड़े से शीशे के सामने खड़ी हुई अदा अपनी अद्भुत रूपराशि देखकर स्वयं ही अपने ऊपर मोहित हो रही थी ! उसकी छाती पर की कसी हुई जरी के काम की चोली ऐसी मनलुभावनी दीख पड़ रही थी कि जिसकी गणना नहीं। उसकी बल खाती हुई नाजुक कमर को देखकर यही दिल चाहता था कि उसे पकड़कर अपनी गोद में बैठा लें और उसके मदभरे नयनों में अपने नयन गड़ाते हुए कहा—

दरिया दिल हो जी बसन्त हो, आज लुटा दे मधुशाला।
देती जा अपने हाथों से ढालूँ प्याले पर प्याला॥

अदा ने चौंककर दरवाज़े की ओर देखा। वहाँ एक अपरिचित व्यक्ति खड़ा हुआ उसे देखकर बड़े अन्दाज़ से मुस्करा रहा था। अदा को अपनी ओर देखता पाकर वह व्यक्ति आगे बढ़ता हुआ बोला, 'सुन्दर ! अति सुन्दर ! वास्तव में तुम वैसी ही सुन्दर हो, जैसा मैंने सुना था।'

वह व्यक्ति आकर एक कुर्सी पर बैठ गया। अदा ने उससे पूछा, 'आप कौन हैं ?'

वह व्यक्ति विचित्र रूप से हँस पड़ा। बोला, 'मैं हूँ कुन्दन कुमार के पिता श्री आगरजी का खास कारिन्दा और उन्हीं का भेजा तुम्हारे पास आया हूँ।'

'किस लिये ?' अदा ने पूछा।

'इसलिये,' कारिन्दा कहने लगा, 'कि तुम्हारे चंगुल से कुमार को बचायें। तुम जिस दिन से यहाँ आई हो, उस दिन से आज तक की सारी दास्तान मुझे मालूम है। मैं खूब जानता हूँ कि कुमार को तुमने पूर्णतया अपने वश में कर रखा है। तुमने अपने नाज़ का जादू फेरकर उन्हें पागल बना दिया है। वे तुम्हारे फेर में पड़कर बरबाद होते जा रहे हैं। तुमने उन्हें ऐसा रस चखाया है कि वे तुम्हें कदापि छोड़ नहीं सकते। परन्तु कुमार की भलाई के लिये मुझे तुम दोनों में विच्छेद करना ही होगा। जानती हो—कुमार हैं एक उज्ज्वल वंश के अनमोल हीरे और तुम हो होटल में नाचने वाली एक अधम नर्तकी। कुमार हैं

एक विशाल जमींदार के माने हुए अधीश्वर और तुम हो चाँदी के चन्द टुकड़ों पर अपना जीवन लुटाने वाली एक मामूली वेश्या। तुम और उनमें जमीन-आसमान का फर्क है। तुम अपना भला चाहती हो तो कुमार पर से अपना चक्र हटा लो, वर्ना मेरा क्रोध बुरा होता है। मैं तुम्हें बरबाद करके छोड़ूँगा। यदि तुम मेरा कहना मानकर कुन्दन कुमार पर से अपना दिल हटा लोगी, तो मैं तुम्हें अपने एक गुप्त जुए के अड्डे में रख दूँगा। वहाँ रहकर तुम जुआरियों को गाना सुनाकर, उनका जी बहलाना और मनमानी बहार लूटना! मैं जा रहा हूँ, मगर याद रखो! मेरी बात मान लेने में ही तुम्हारी भलाई है।'

कारिन्दा एक ही साँस से यह सब कह गया और तब बाहर जाने के लिये दरवाज़े की ओर बढ़ा। अभी वह दरवाज़े तक पहुँचा भी न था, कि एकाएक वह दरवाज़ा पूरा खुल गया और वहाँ कुन्दन कुमार खड़े दिखाई पड़े। कारिन्दा पर दृष्टि पड़ते ही कुमार चौंक पड़े। वे गरजकर बोले, 'तू यहाँ क्या करने आया था शैतान?'

'आपको बदनामी के गड्ढे से निकालने के लिये। छोटे सरकार! आप जिस प्रकार कुपथगामी होते जा रहे हैं, उसे देखते हुए मुझे कहना पड़ता है कि आप चन्द दिनों में ही अपनी मान-मर्यादा मिट्टी में मिला देंगे।' कारिन्दा ने कुमार से इस ढंग से कहा, मानो वह उनका कोई आत्मीय ही हो और उनसे बहुत गहरी सहानुभूति रखता हो।

'चुप रह पाजी, शैतान!' कुमार चिल्लाकर उठे, 'मैं तेरी नस-नस पहचानता हूँ। तू ऐसा साँप है, जिसके काटे की कोई दवा ही नहीं। अगर अब तू फिर मेरे बीच में पड़ेगा, तो ठीक न होगा।'

'आप इस अदा के फेर में पड़कर पागल हो गये हैं छोटे सरकार!' कहता हुआ कारिन्दा तेज़ी से बाहर निकल गया। कुमार आकर कोच पर बैठ गये। अदा भी उनकी बगल में आ बैठी। बोली, 'आज बहुत सुस्त दीख पड़ते हो साजन! क्या कोई नई बात हुई है?'

'नई बात तो ऐसी हुई है कि जिसका ध्यान आते ही कलेजा टुकड़े हो जाता है। शादी की थी, सोचा था, सुन्दर पत्नी का सहारा मिलेगा, परन्तु दगाबाज़ निकली। उसने स्त्री जाति के नाम पर कलंक का टीका लगा दिया। आज प्रातःकाल वह मेरे एक दोस्त के साथ भागी जा रही थी। मैंने उसे पकड़ा और लाकर उसे एक कोठरी में बन्द कर रखा है। अब वह आजन्म उसमें रोती हुई पड़ी रहेगी। उसने मेरे कलेजे के शतशः टुकड़े कर दिये हैं। मैं भी उसे दिखा दूंगा कि वह टूटा हुआ

कलेजा किस प्रकार निर्भय बनकर उसे सता सकता है। मैं उसे सताना चाहता हूँ, शारीरिक दण्ड से नहीं वरन् वाक्य-बाणों से ! मैं वास्तव में उसे प्यार करता हूँ। उसे तकलीफ देते समय महान वेदना होती है, परन्तु अन्याय का दमन करना मनुष्य का परम कर्त्तव्य है, यही सोचकर सब कुछ करता हूँ।...अदा ! प्रारम्भ से ही विपत्ति मेरे पीछे पड़ी है। इस समय यदि संसार में मुझसे सहानुभूति रखने वाला कोई है, तो वह तुम्हारा दिल है। तुम्हारे कलेजे में जो मेरे लिए दर्द है, तुम्हारे हृदय में जो मेरे लिए प्यार है, वह मैं जानता हूँ अदा ! और मुझे इस बात की अतीव प्रसन्नता है कि इस दुख-भरे संसार में एक प्राणी ऐसा भी है, जो मेरा है और मैं उसका हूँ। तुमने मुझ अभागे के लिए जो कुछ किया, उसके लिए मेरा...।'

'यह सब तुम क्या कह रहे हो साजन ! मैं तो सदैव तुम्हारी हूँ। मेरा हृदय जिस समय अपार दुःख-सागर में गोते लगाकर हाहाकार कर रहा था, उस समय तुमने मेरी बाँह पकड़कर मुझे पार किया, मुझे सान्त्वना दी और मुझे अपने कलेजे से लगाकर प्यार किया। क्या यह कम है कुमार ? मुझ नीच वेश्या पर, मुझ अधम नर्तकी पर, जो तुमने इतनी ममता दिखाई, वह क्या अनुपम नहीं है, साजन ? लेकिन मुझे बार-बार यही भय होता है, कि तुम मुझे छोड़ तो नहीं दोगे ? तुम एक अनाथ, दुखिया को त्यागकर चले तो नहीं जाओगे ? कुमार ! मुझे तुम्हारा ही सहारा है। यदि तुमने मुझे छोड़ दिया तो...?'

'अदा ! यह तुम कैसी बातें कर रही हो ?' कहकर कुमार ने उसे कलेजे से दबा लिया। दोनों उस सुन्दर पलंग पर लेटे रहे। प्यार-भरी बातों ने उन्हें शीघ्र ही निद्रा देवी की गोद में सुला दिया।

चौदह

विपत्ति कभी अकेली नहीं आती। बीरन और तिल्लो आये थे विन्ध्येश्वरी माँ के दर्शन करने, परन्तु यहाँ आकर उन्हें जो कटु अनुभव हुआ, उससे उन्हें मालूम हो गया कि पवित्र स्थानों का वातावरण कैसा है। पंडों की शैतानी, पंडाइन का गुप्त व्यभिचार और सबसे बढ़कर पुलिस का फ़रेब, इन सब बातों को सोचकर बीरन का कलेजा मुँह को आता था। बीरन और तिल्लो अलग-अलग कोठरियों में बन्द किये गये

थे। पुलिस ने बीरन को पर-स्त्री भगाने के जुर्म में अपराधी ठहराया था। वास्तव में वह अपराधी नहीं था। पुलिस भी यही समझती थी, परन्तु गरीबों और निरपराधों को सताने में जो आनन्द आता है, अपनी वह आदत कैसे छोड़ सकते थे! बीरन गरीब, निस्सहाय था और उसके साथ थी एक अनुपम रूपराशि तिल्लो। अतः उसे फँसा लेना तो पुलिस के बायें हाथ का खेल था। पुलिस और जमादार की कुदृष्टि तिल्लो पर पड़ चुकी थी और यही कारण था कि वे बीरन और तिल्लो को निरपराध जानकर भी रोके हुए थे। अपने ही भाई, शासन की बाग-डोर हाथ में लेकर हम पर कैसा जुल्म ढाते हैं, इस बात का पुलिस प्रत्यक्ष प्रमाण है। पुलिस, दारोगा, जज, कोतवाल आदि हमारे ही भाई तो हैं। परन्तु शासन सत्ता की छत्र-छाया के नीचे आते ही वे अपने अस्तित्व को भूल जाते हैं और हम गरीबों पर मनमाना जुल्म ढाते हैं। हमारे ही भाई, हमारे खून-माँस, विषैले साँप बनकर हमें डसते हैं! साम्राज्यवाद के उपासक बनकर, अपने देश की नींव खोदना ही उनका काम हो जाता है। वे भूल जाते हैं अपने भाई को, अपनी जन्मभूमि को और अपनी प्राचीन परम्परागत रूढ़ियों को।

अंधेरी रात्रि अपना भयंकर रूप लेकर आ गई। समग्र संसार में सन्न अंधकार छा गया। ऐसे ही समय में जमादार ने दरोगा के कमरे में प्रवेश किया। दरोगा उस समय टेबल के पास बैठा हुआ कुछ लिख रहा था। जमादार को आया देखकर बोला, 'आज वाली औरत तो अच्छी है न जमादार?'

'हाँ हजूर! यह औरत निहायत अच्छी है और साथ ही हम लोगों की किस्मत भी!' जमादार ने कहा।

'इन्तज़ाम तो सब ठीक है न?' दरोगा ने पूछा।

'जी हज़ूर!' जमादार कहने लगा, 'बगल वाले कमरे में सब इन्तज़ाम कर दिया है। वह औरत भी उसमें पहुँचा दी गई है। बस अब आपके ही चलने की देर है।'

'ऐसा? तो चलो मैं अभी चलता हूँ।' कहकर आगे-आगे दरोगा पीछे-पीछे जमादार उस कोठरी से बाहर निकले। उस कोठरी के बगल में ही एक दूसरी कोठरी थी, जिसमें इस समय हल्की रोशनी हो रही थी। उस कोठरी के किवाड़ मामूली तौर पर भिड़काए हुए थे और उसके दरवाज़े पर एक सिपाही खड़ा हुआ पहरा दे रहा था।

'अन्दर सब ठीक है न?' दरोगा ने उस सिपाही से पूछा।

'जी हाँ !' सिपाही ने थोड़े में उत्तर दे दिया।

'अच्छा ! अब तुम जा सकते हो।' दरोगा ने कहा और वह सिपाही वहाँ से चला गया। दरोगा और जमादार कोठरी का दरवाजा खोलकर अन्दर घुसे। अन्दर मामूली लालटेन की रोशनी हो रही थी और उसके पास ही जमीन पर बैठी हुई गमगीन तिल्लो आँसू बहा रही थी। दक्खिन की ओर एक चारपाई बिछी थी। दरोगा जाकर उसी चारपाई पर बैठ गया और तिल्लो को सम्बोधित कर कहने लगा, 'मेरी ओर देखो और मेरी बातों का ठीक-ठीक उत्तर दो।'

तिल्लो ने अपना मुख दरोगा की ओर उठाया। तिल्लो के मुँह को देखते ही, दरोगाके शरीर में बिजली-सी दौड़ गई। वह बोला, 'तुम्हारा नाम।'

'तिल्लो !'

'रहती कहाँ हो ?'

'राजपुर गाँव में।'

'तुम्हारे साथ जो मर्द गिरफ्तार हुआ है, वह तुम्हारा कौन है ?'

'वे मेरे पति हैं।'

'झूठ ! बिलकुल झूठ !' दरोगा ठठाकर हँस पड़ा, पुनः बोला, 'मालूम होता है कि उसने तुमको भी पट्टी पढ़ा दी है। परन्तु याद रखो हम पुलिस के आदमी हैं। न्याय और अन्याय की सत्ता हम पर ही अवलम्बित है। हमसे झूठ बोलने का प्रयत्न न करो। हमारे हृदय में ज़रा भी दया नहीं होती। हम अपराधियों को दंड देने के लिए घृणित विधान कर सकते हैं।

'मगर मैं सच कहती हूँ हजूर ! वे वास्तव में मेरे पति हैं।' तिल्लो ने गिड़गिड़ाकर कहा।

'अभी तक तुमने मेरा मतलब समझा नहीं। मैं कहता हूँ कि सच-सच बता दो, नहीं तो ठीक न होगा। तुम कदापि उसकी स्त्री नहीं हो। तुम हो भगाई हुई औरत। यह आदमी तुम्हें भगाने के जुर्म में गिरफ्तार हुआ है और उसे अवश्य ही दंड मिलेगा, परन्तु तुम भी उसी की तरफदारी करके अपने को अपराधी प्रमाणित कर रही हो और न्याय के रक्षक को सहायता की बजाय उसके मार्ग में रोड़े अटका रही हो। उसका अन्जाम बुरा होगा। बोलो ! तुम क्या कहती हो !'

'मैं क्या कहूँ हजूर !' तिल्लो बोली, 'जब वे मेरे पति हैं और मैं उनकी पत्नी हूँ, तो आपके कहने से मैं कैसे दूसरी बात कह दूँ।'

'यह हरामज़ादी ऐसे नहीं मानेगी।' एकाएक दरोगा उबल पड़ा, 'जमादार दरवाज़ा बन्द कर दो।'

जमादार ने भीतर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। दरोगा ने कहा, 'इसके हाथ-पैर बाँधकर इस पलंग पर डाल दो।'

जमादार ने बलपूर्वक तिल्लो के हाथ-पैर बाँधकर उसे चारपाई पर पटक दिया। तिल्लो ने अपने बचाव की बहुत कोशिश की, परन्तु उसकी एक न चली।' दरोगा बोला, 'नादान! अब देख हमसे झूठ बोलने का मजा। तिल्लो चीख उठी। बोली, 'न्याय की डींग मारने वाले नर-पिशाचो! लाल पगड़ी वाले पशु शैतानो! सरकार ने तुम्हें न्याय की बागडोर सौंपी है, परन्तु तुम उसका दुरुपयोग करते हो। क्या तुम्हें उस ईश्वर का कुछ भी भय नहीं है?'

परन्तु तिल्लो की बात उसके कानों में गई नहीं। वह तो उस समय मदान्ध हो रहा था। तत्पश्चात···।'

जिस कोठरी में बीरन बन्द था, वह ज्यादा बड़ी न थी। उसके सामने मोटे-मोटे छड़ों का जंगला लगा हुआ था। बाहर एक सिपाही बैठा हुआ उसकी निगरानी कर रहा था। बीरन का हृदय इस समय अजीब पशोपेश में पड़ा हुआ था। पुलिस किस प्रकार उसे तंग कर रही थी, यह सोचकर बीरन क्रोध से भर जाता था। परन्तु शासन सत्ता के आगे वह बेचारा करता ही क्या? वह तिल्लो के विषय में बहुधा सशंकित हो उठता था। तिल्लो जवान थी, आकर्षक थी और सौन्दर्य की अनुपम प्रतिमा। बीरन से अलग रहने का एक-एक क्षण उसके लिए खतरनाक था। उस पर न जाने क्या बीत रही होगी बीरन इसी फिक्र में पड़ा था।

'भाई! ज़रा मुझे पेशाब लगा है। क्या तुम दरवाज़ा खोल देने की दया करोगे?'—बीरन ने उस सिपाही से कहा।

'चुपचाप बैठा रह! नहीं तो अभी तक जो हाथ-पाँव खुले हैं उनमें भी हथकड़ी-बेड़ी पड़ जायगी,' सिपाही ने कहा।

'नहीं-नहीं मेरे भाई, मुझे वास्तव में जोरों का पेशाब लगा है। अगर तुम दरवाज़ा न खोलोगे, तो मैं इसी जगह पेशाब कर दूँगा, फिर गन्दगी के तुम ज़िम्मेदार होगे।'

'अच्छा लो, मैं दरवाज़ा खोल देता हूँ, मगर भागने की कोशिश न करना,' कहकर सिपाही ने पास से कुंजी निकालकर दरवाज़ा खोला और बीरन को लेकर पेशाबघर की ओर बढ़ा। अभी बीरन चार-छः

कदम ही गया था कि उसके कानों में एक दर्दनाक चीख सुन पड़ी, जो पास ही के कमरे से आ रही थी। चीख सुनकर बीरन चौंक पड़ा। थोड़ी देर में पुनः वैसी ही एक चीख आई और तब बीरन अपने को स्थिर न रख सका। तिल्लो की चीख-पुकार सुनकर वह पागल हो उठा। इस समय वह स्वतन्त्र था। उसके हाथ-पैर खुले थे। अतः वह विद्युत्-वेग के साथ वाले सिपाही पर टूट पड़ा और क्षण-भर में ही उसे विवश कर दिया। सिपाही बीरन की मार न सह सकने के कारण, बेहोश हो गया। बीरन ने उस सिपाही की वज़नी बन्दूक उठा ली थी और तेज़ी के साथ उस दरवाज़े की ओर लपका जिसमें तिल्लो की चीख आई थी। उस दरवाज़े के पास जाकर वह कुछ क्षण तक रुका। उस समय वहाँ एक भी सिपाही नहीं था, सब मेले के प्रबन्ध में लगे हुए थे। बीरन ने दरवाज़े की दरार से झाँककर अन्दर की ओर देखा। साथ ही उस पर वज्र गिर पड़ा। उसने देखा, सुन्दरी तिल्लो पलंग पर लिटाई गई है और दारोगा उस पर अत्याचार करने को प्रस्तुत है। बल-प्रयोग किये जाने के कारण तिल्लो चीख रही थी। जमादार वहीं पास ही खड़ा हुआ हँस रहा था। दारोगा या जमादार, दोनों में से किसी को यह मालूम न था कि उनका कैदी बीरन, इस समय काल बनकर उनके सर पर उपस्थित है।

दूसरे ही क्षण बीरन कमरे के अन्दर आ गया। उसने बन्दूक का कुन्दा ऊपर उठाया, साथ ही दारोगा के मुँह से एक भयानक चीख निकल पड़ी। बीरन ने कुल्हाड़ी चलाने वाले अभ्यस्त हाथों से छूटता हुआ बन्दूक का कुन्दा दारोगा के सरपर इतनी ज़ोर से गिरा कि उसका सर फट गया, रक्त की धारा बह चली, और वह बेहोश होकर एक ओर लुढ़क गया। क्रोध में भरे हुए बीरन ने बन्दूक का कुन्दा पुनः ऊपर उठाकर बेहोश दारोगा की जाँघ पर दे मारा। ज़ोरों से 'पट्ट' का शब्द हुआ और दारोगा के जाँघ की हड्डी टूट गई।

क्रोधित बीरन को देखकर जमादार सन्न हो गया। परन्तु उसने कारतूस भरी हुई बन्दूक उठाई, उसे बीरन की ओर लक्ष्य करके कहा, 'खबरदार! अब अगर तूने ज़रा भी जुम्बिश खाई तो मैं तुझे गोली का निशाना बना दूँगा।'

बीरन को धीरे-धीरे परिस्थिति का ज्ञान हुआ। वह भय से सिहर उठा। उफ़! उसने क्रोध में आकर कितना बड़ा अपराध कर डाला था। एक सरकारी कर्मचारी पर आघात करके वह भयानक जुर्म में

फँस गया था। चाहे अपना सर्वस्व चला जाय, चाहे अपनी मान-मर्यादा सब कुछ धूल में मिल जाय, परन्तु पुलिस पर हाथ उठाना अपराध है, महान् अपराध !

घटना की खबर लगते ही पुलिस आ धमकी। बीरन कैद कर लिया गया। और उसे सख्त पहरे में रखा गया। तिल्लोखास जमादार के कमरे में उसकी निगरानी में रखी गई। दारोगा उसी समय अस्पताल भेज दिया गया। उसकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी ! उसका सर फट गया था और उसके जाँघ की हड्डी टूट गई थी ! वह अब मृत्यु के निकट था। बीरनने उसके व्यभिचार का अच्छा दंड उसे दिया था।

× × ×

पाँचवें दिन तिल्लो को, बहुत रोने गिड़गिड़ाने पर रिहाई मिली। जिस समय अपने भाग्यपर रोती-झींकती तिल्लो वहाँ से बाहर निकली, उस समय अवस्था दयनीय थी। अब वह पहले की तिल्लो नहीं रह गई थी। इस समय उसका मुँह सूखा हुआ था, गाल पिचक गए थे, शरीर मे केवल अस्थि-पंजर मात्र था। वह यहाँ आई थी पुण्य लूटने, परन्तु उसने स्वयं ही अपना सब-कुछ लुटा दिया था। उसका जीवन, उसका बीरन इस समय कैद में था और वह दर-दर की ठोकरें खाने के लिए बाहर थी।

× × ×

तोरे पइयाँ लागूँ जाग रे—
निंदिया के माते साजना।
जाग रे।।

अदा के कंठ से निकले हुए इस मधुर गाने ने कुन्दन कुमार की नींद शीघ्र ही दूर कर दी। वे एक करवट लेकर उठ बैठे और अदा से बोले, 'अदा ! क्या प्रातःकाल हो गया !'

'हाँ अब तुम्हें जाना चाहिए, नहीं तो तुम्हारे पिताजी रुष्ट होंगे,' अदा ने कहा।

कुमार ने अदा को कलेजे से लगाकर प्यार किया और पुनः अपने घर की ओर चल पड़े।

पन्द्रह

एक छोटी-सी साफ-सुथरी कोठरी में रसना बैठी हुई आँसू बहा रही है। कोठरी के सब दरवाज़े बाहर की ओर से बन्द हैं, केवल दो खिड़कियाँ खुली हैं, जिनसे कोठरी-भर में काफी उजाला है। कुन्दन कुमार ने रसना की कैद के लिए यही कोठरी नियुक्त की है। रसना के व्यभिचार की बात कुमार के पिता श्री आगर के भी कानों तक पहुँच चुकी है और वे कुन्दन कुमार से इस बात के लिए बहुत प्रसन्न हैं कि उन्होंने रसना को कैद की सज़ा दी। और सच तो यह है कि श्री आगर अपने इकलौते पुत्र कुन्दन कुमार को हृदय से चाहते थे, परन्तु इधर उनके बदमाश कारिन्दे ने अपनी जालसाज़ी द्वारा उनका मन कुमार की ओर से फिरा दिया था।

रसना बैठी हुई अपने भाग्य को कोस रही थी। आज उसे मालूम पड़ रहा था कि व्यभिचार का परिणाम कैसा भीषण होता है। अपनी दुर्दशा सोच-सोचकर रसना के आँसू रुकते नहीं थे। इसी समय कुन्दन कुमार ने वहाँ प्रवेश किया। रसना दौड़कर उनके पैरों पर गिर पड़ी और बोली, 'प्राण! अब यह दुख मुझसे नहीं सहा जाता, मुझे क्षमा करो। मैं अपराधिनी हूँ। मैंने तुम्हारे साथ दगा की है, फिर भी मुझे अपने कर्मों पर पूरा पश्चात्ताप है।'

'रसना, केवल ऊपरी मन से पश्चात्ताप करने से ही अपराध का प्रायश्चित्त नहीं हो जाता। उसके लिए तो चाहिए सच्चे दिल का पश्चात्ताप। मैं खूब जानता हूँ, कि तुम्हारा यह पश्चात्ताप सच्चे दिल से नहीं है और यदि मैंने तुम्हें स्वतन्त्र कर भी दिया, तो तुम फिर वही रास्ता पकड़ लोगी।' कुमार ने कहा।

'प्राण! तुम बड़े ही निष्ठुर हो। मैं सच कहती हूँ···।'

'चुप रहो,' कुमार तड़पकर बोले, 'दुःख का सामना करने पर पापी लोग ऐसी ही अधीरता दिखलाते हैं। तुम यह न समझना कि तुम्हारे रोने-गानेसे मेरा क्रोध दूर हो जाएगा और मैं तुम्हें पुनः विहार करने के लिए स्वतन्त्र कर दूँगा। तुम विषैली नागिन हो, तुम्हें मैंने दूध पिलाकर पाला था, परन्तु अब मुझे मालूम हो गया कि वही विषैली नागिन मुझे डसने के लिए तैयार है। मेरे कलेजे का घाव तब तक नहीं भर सकता, जब तक मैं तुम्हें पूरा दंड न दे सकूँ।'

'बस करो, बस करो प्राण! मैं तुमसे क्षमा चाहती हूँ,' रसना

बिलखती हुई बोली।

'अपराधों के लिए क्षमा मेरे पास नहीं है रसना!' कुन्दन कुमार कहने लगे, 'तुमने अपराध किया है, अब उसका दंड भी भोगो। तुमने नादानी की है अब उसका मज़ा भी चखो। तुमने जो मेरे कलेजे के सतशः टूक कर डाले हैं, उसके लिए मेरे हृदय में प्रतिशोधाग्नि की भीषण ज्वाला धधक रही है। मैं बदला चाहता हूँ, बदला! मैं तुम्हारा खून बहाऊँगा। लेकिन बूँद-बूँद। मैं तुम्हारी बोटी-बोटी काट दूँगा, लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता। मैं तुम्हारे गले पर आरा चलाऊँगा, लेकिन धीरे-धीरे। मैं तुम्हारी जान लूँगा, लेकिन तड़पा-तड़पाकर। मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता। तुमने अपने पति के साथ दगा की है, तुम्हारा अपराध अक्षम्य है···लेकिन रसना! शायद तुम यह सुनकर आश्चर्य करोगी कि इतना सब होते भी तुम्हें प्यार करता हूँ, मगर तुम···।'

'प्राण! प्राण क्या सचमुच···' कहती हुई रसना ने दौड़कर कुमार को अपनी बाँहों में जकड़ लिया, परन्तु कुमार ने उसे निर्दयतापूर्वक दूर ढकेल दिया और बोले, 'दूर हो सर्पिणी! मैं तुझसे पुनः खेल नहीं खेलना चाहता। तू आग है, तेरी ज्वाला मुझे भस्म कर देगी। मैं तुमसे अब ज़रा भी सम्पर्क नहीं रखना चाहता।'

'प्राण! मुझ पर वाक्य-बाणों की वर्षा मत करो। मैं सब कुछ सह सकती हूँ, परन्तु तुम्हारे वाक्य-बाण, तुम्हारी प्रलय-जैसी भयानक बातें नहीं सह सकती।' रसना बोली।

कुन्दन कुमार ठठाकर हँस पड़े, बोले—'बस इतनी ही बातों से तुम्हें भय लगने लगा? लेकिन रसना! मैं लाचार हूँ। जब मैं तुम्हारे पास आता हूँ, तो मेरे हृदय की असीम वेदना शब्दों के रूप में बाहर निकलने लगती है। तुम्हें मेरी बातें सुनकर भय लगता है और मुझे तुम्हें अपनी बातें सुनाकर बड़ा ही आनन्द प्राप्त होता है। अब मैं नित्य प्रति ही तुम्हारे पास आकर अपने दिल की जलन शब्दों के रूप में निकाला करूँगा। मैं तुम्हें वाक्य-बाणों से जर्जर बना दूँगा। तुम पर बातों की बौछार डालकर तुम्हें जलाते-जलाते खाक बना डालूँगा। तुम्हें जिस बात से दुःख होगा, मैं वही करूँगा। तुम वाक्य-बाण नहीं सह सकती और अब मैं नित्य प्रति ही तुम पर वाक्य-बाणों का प्रहार किया करूँगा। तुम्हारी पापपूर्ण गाथा के पृष्ठ कुछ शब्दों द्वारा उलट-उलट कर मैं तुम्हारे सामने रखता जाऊँगा, तब तुम देखोगी कि पाप की विभीषिका कैसी भयानक होती है। तब तुम रोओगी, तड़पोगी, सर

धुनोगी और मैं तुम्हें कटु शब्दों द्वारा अपमानित करता हुआ हँसूँगा, जीवन-भर हँसूँगा।

कहते हुए कुमार तेज़ी के साथ कमरे के बाहर चले गये और कोठरी का दरवाज़ा झटके के साथ बन्द हो गया। रसना सर थामकर भूमि पर बैठ गई। आज कुमार की बातों ने उसके हृदय में एक तूफान-सा मचा दिया था। उफ ! यह पुरुष भी कैसा निर्दयी है, जो केवल बातों द्वारा ही तलवार-सा घाव कर सकता है। रसना कुमार की लांछनायुक्त बातें सुनकर भय से काँप उठी थी। वास्तव में कुमार के बात करने का ढंग ही ऐसा था, जो सुनने वाले के हृदय पर उनका रोब स्थापित कर देता था उनकी बातें इतनी तीखी एवं मर्मस्थान पर चोट करने वाली होती थी कि सुनने वाला कदापि अपने को स्थिर न रख सकता था। यही हाल रसना का हुआ। वह कुमार के हाथों द्वारा मार डाला जाना पसन्द कर सकती थी, परन्तु उनके वाक्य-बाणों को सहन करना नहीं।

कुमार अपनी बाहरी बैठक में आकर एक आराम कुर्सी पर धम्म से बैठ गये। यह नहीं था कि रसना पर वाक्य-बाणों का प्रहार करके वे प्रसन्न हों। जिस समय वे रसना को दुर्वाक्यों द्वारा जलाते थे, उस समय स्वयं उनका हृदय भी धू-धू कर जलने लगता था। उन्हें रसना को बुरा-भला कहने में महान् पीड़ा होती थी, परन्तु न्याय उन्हें विवश कर देता था। ये न्याय के रक्षार्थ ही रसना को सता रहे थे। वे सोचते थे, 'अपराधी को उसके अपराध का कठोर दंड देना ही न्याय का श्रेष्ठतम विधान है। यदि वे रसना को अपनी पत्नी जानकर क्षमा कर देते हैं, तो वे न्याय का अतिक्रमण करते हैं। अतः रसना को कठोर दंड देना ही उनका ध्येय था।

वे अपनी आराम कुर्सी पर बैठे हुए सोच रहे थे रसना की बात। उफ़ ! इस छली रमणी ने उन्हें कैसा धोखा दिया। उसी के बहकावे में आकर उस दिन उन्होंने देवता जैसे बीरन का, जिसने अपनी जान पर खेलकर उनकी प्राणरक्षा की थी, बुरा-भला कहा था। उसी दिन से गाँव में न तो बीरन ही दिखाई पड़ रहा था, और न तिल्लो ही। दोनों न जाने कहाँ चले गये थे। अभी तक कुमार को यह नहीं मालूम था कि वे दोनों विन्ध्य-धाम में जाकर असीम कष्ट उठा रहे हैं। वे तो यही समझ रहे थे कि बीरन को उनकी बातों से महान् आत्मग्लानि हुई और वह सपत्नीक कहीं दूसरी जगह चला गया। इस गरीब दम्पती के प्रति

कुमार को पूरी सहानुभूति थी और उन्हें महान् पश्चात्ताप हो रहा था कि उन्होंने उस दिन क्यों उसे बुरा-भला कहा।

कुमार का ध्यान भंग हुआ, क्योंकि उनका नौकर अभी-अभी ही वहाँ आया था और उनसे कुछ कहना चाहता था। कुमार को अपनी ओर देखते हुए देखकर बोला, 'छोटे सरकार ! एक औरत आपसे मिलना चाहती है।'

'औरत ?···अच्छा ! भेज दो,' कुमार ने कहा और कुर्सी का ढासना छोड़कर सीधे बैठ गये। उसी समय वहाँ रुग्णरूप धारिणी तिल्लो ने प्रवेश किया। तिल्लो ने कुमार को देखा था, परन्तु कुमार ने अभी तक तिल्लो को न देखा था, यही कारण था कि वे तिल्लो को पहचान न सके।

'कुमार ! मेरी रक्षा कीजिये,' कहती हुई तिल्लो धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ी।

'तुम कौन हो और मुझसे क्या चाहती हो ?' कुमार ने पूछा।

'मैं अछूत हूँ सरकार ! वही अछूत, जिन्हें मानव-समाज घृणा की दृष्टि से देखता है, जो दर-दर ठोकरें खाते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हैं, जिनके लिए श्मशान में भो स्थान नहीं मिल सकता। नाम मेरा तिल्लो है। कदाचित् आपने मेरा नाम···'

'सुना है,' कुमार बोले, 'बताओ तुम्हें क्या दुःख है ? और बीरन कहाँ है ?'

'कुमार ! हम लोग चैत नवमी को विन्ध्येश्वरी माँ के दर्शन को गये थे, परन्तु वहाँ जाकर हम पर वज्र गिर पड़ा। रो-रोकर तिल्लो ने अपनी सारी दुःख-कहानी कुमार से कह दी। पंडों के व्यभिचार से लेकर के कैद होने तक का सभी समाचार एवं पुलिस का दुराचार आदि कोई बात न छोड़ी। शुरू से आखिर तक उसकी कहानी सुनकर कुमार को महान् क्रोध आया। वे दाँत पीसकर बोले, 'उफ ! पुलिस की शैतानी से सभो तंग आ गए हैं, परन्तु किया क्या जाय ? उनके दमन के लिए हमारे पास कुछ भी चारा नहीं है। अच्छा तुम धैर्य रखो। मैं बीरन को छुड़ाने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा ?'

'कुमार ! अब मुझे आप ही का सहारा है। आप ही अब मेरे मालिक हैं,' कहती हुई तिल्लो ने दौड़कर कुमार के पैर पकड़ लिये। कुमार उठकर खड़े हो गए और चाहा कि तिल्लो का हाथ पकड़कर उठा लें और उसे सान्त्वना दें, परन्तु इसी समय क्रोध में भरे हुए

श्री आगर एवं कारिन्दा ने प्रवेश किया।

श्री आगर गरज कर बोले, 'कुन्दन ! क्या अब तू अपने को निरपराध प्रमाणित कर सकता है ? मैं देख रहा हूँ कि यह हरामज़ादी तिल्लो तेरे कमरे में उपस्थित है और तू उसका हाथ पकड़कर···उफ ! कुन्दन ! तूने मेरे नाम पर धब्बा लगा दिया।'

कुन्दन कुमार कुछ न बोले। वे कारिन्दा की ओर देखकर दाँत पीस रहे थे, क्योंकि वे जानते थे कि यह अवश्य ही कारिन्दा की बदमाशी है, जो उन्हें सदैव उनके पिता की दृष्टि से गिरा देने का प्रयत्न करता आ रहा है।

'कारिन्दा !' श्री आगर ने गरजकर पुकारा।

'जी बड़े सरकार !' कारिन्दा हाथ जोड़कर बोला।

'इस हरामज़ादी को अभी यहाँ से निकाल दो,' श्री आगर बोले, 'यही सब अनर्थों की जड़ है।'

बेचारी तिल्लो धक्के मारकर निकालदी गई। अछूतों के लिए क्या दुनिया में कोई स्थान नहीं ?

'कुन्दन ! बेटा !' श्री आगर कुमार से नम्रतापूर्वक बोले, 'तू समझदार होकर भी नहीं समझता और व्यर्थ ही मेरी बुढ़ाई में मेरे नाम पर धब्बा लगा रहा है। याद कर वे दिन, जब तू नन्हा-सा बालक था और तेरी माँ तुझे बिलखता हुआ छोड़कर वहाँ चली गई थी, जहाँ जाकर कोई नहीं लौटता। उस समय तुझे, मातृहीन बालक को अपने कलेजे से लगाकर पाला। तू हँसता था, मैं तुझे हँसाता था, तू रोता था, मैं तुझे चुप कराता था। वे दिन आज सपने···'

कुमार सब सुनते रहे, परन्तु मुँह से कुछ न बोले। वे जानते थे कि बदमाश कारिन्दा द्वारा बहकाये हुए उनके पिता उनका एक शब्द भी नहीं सुनेंगे। अतः उन्होंने चुप रहना ही अच्छा समझा। हाँ ? पिता की ममतामयी वाणी सुनकर उनके नेत्र छलछला आये और दो बूँद आँसू ढुलक कर उनके गालों पर आ रहे।

सोलह

रसना का जीवन दिन-पर-दिन विभीषिकामय होता गया। कुन्दन कुमार नित्य प्रति उसके पास आकर बैठते और उस पर नाना प्रकार

के व्यंग्य-बाण छोड़ते। उनकी तीखी बातें सुनकर रसना का हृदय हाहाकार करने लगता था। उसके दिल में पश्चात्ताम की एक भयंकर जलन होती थी, उस समय उसे जो आत्मग्लानि होती थी, वह मृत्यु से भी यन्त्रणादायक हुआ करती थी। चिन्तानल में दिन-रात जलते रहने के कारण उसका शरीर सूखता गया, यहाँ तक कि एक महीना बीतते, न बीतते वह अस्थिपंजर-मात्र शेष रह गई।

उस साल होली आई और आई अतीव राग-रंग लेकर। जीव-जन्तु, पशु-प्राणी, सभी उन्माद से पूर्ण हो उठे। सभी पर एक प्रकार की मस्ती-सी छाई हुई थी। रंग, गुलाल और अबीर चारों ओर उड़ते हुए दिखाई पड़ रहे थे। रसना अपनी कैद की कोठरी में बैठी हुई पार-साल की होली से इस साल की होली की तुलना कर रही थी। पारसाल की होली उसके लिए कितनी सुखद एवं आनन्ददायिनी थी, परन्तु इस साल की होली कितनी विभीषिकापूर्ण !

धीरे-धीरे मधुर बाजे के साथ ग्रामोफोन का एक गाना शुरू हुआ। रसना ने ध्यान देकर सुना—ग्रामोफोन की आवाज कुमार के कमरे से आ रही थी। इस समय वे मग्न होकर होली का आनन्द लूट रहे थे। और रसना ? उसके लिए तो अब यह संसार सूना था। कुमार के कमरे से आती हुई ग्रामोफोन की आवाज़ तेज़ होती गई, साथ ही रसना का हृदय कम्पायमान होने लगा। ग्रामोफोन का गाना जारी था।

ओछी निगाहों के तीर मोरे कारी हैं, बच के रहो।
आँखों वाले आँख बचा लें।
दिल वाले दिल अपना सम्हालें ।।
बाँके जोबन नहीं ताको, सरकारी हैं, बच के रहो ।।

गाना सुनते-सुनते रसना का हृदय जलने लगा। उफ ! यह सब केवल उसी को जलाने के लिए किया जा रहा है। त्योहार के दिन भी उसे चैन नहीं लेने दिया जाता।

इसी समय दासी ने खिड़की की राह से अन्दर भाँका और रसना के आगे एक पुरज़ा फेंककर बोली, 'छोटे सरकार ने यह चिट्ठी आपके लिए भेजी है।' रसना ने चिट्ठी उठा ली और धड़कते हुए हृदय से उसे खोला। चिट्ठी में केवल इतना लिखा हुआ था, 'होली मुबारक' और उसके साथ ही अबीर की एक छोटी-सी पुड़िया भी थी। पत्र पढ़कर रसना धम्म से कुर्सी पर बैठ गई।

होली मुबारक ! होली मुबारक !! कैसे भयंकर दो शब्द हैं ? और

इनके साथ एक पुड़िया अबीर, मानो उसके लिए रक्त-रंजित तलवार बनकर आई है। रसना काँप उठी। वह बड़बड़ाने लगी, 'यह सब मुझे जलाने के लिए ही किया जा रहा है। परन्तु अब मैं जल चुकी, बहुत जल चुकी, मृत्यु की भयंकर यन्त्रणा सहन करना सरल है, परन्तु यह लांछनायुक्त व्यंग नहीं। अब इस जीवन का इतिश्री ही हो जाना श्रेष्ठतम है।

रसना उठकर टेबुल के पास आई और एक कागज़ पर कुछ लिखकर दासी को पुकारा। दासी खिड़की के पास आकर खड़ी हो गई। रसना ने वह कागज दासी को देकर कहा, 'यह अभी उनके पास पहुँचा दो।' दासी पुरज़ा लेकर चली गई। रसना आकर पुनः कुरसी पर बैठ गई और अपने-आप ही बोली, 'अब इस जीवन की साध बुझ चुकी है और…'

और उसने अपनी हीरे की अँगूठी निकालकर जीभ पर रख ली।

× × ×

कुमार ने दासी के हाथ से परचा ले लिया और पढ़ने लगे। लिखा था।

प्राण !

जा रही हूँ उस दुनिया की सैर करने, जहाँ चाँद और तारे निवास करते हैं। जहाँ न जलन है, न दुख ! जाते समय तुमसे क्षमा माँगती हूँ। मैं अधम थी, घृणित थी, कुलटा थी, परन्तु तुम भी तो निर्दयी थे ! प्राण ! भला एक स्त्री को, एक अबला को, कोई इस प्रकार अतुल्य कष्ट दे सकता है ? प्राण ! मेरी नादानी के साथ, तुमने भी नादानी की और मुझे बरबाद करके ही छोड़ा। परन्तु निर्दयी ! मुझे बरबाद करके तुम भी आबाद न होगे, यह मेरी बात याद रखना ! मैं अब चली, परन्तु शोक इस बात का है कि मैं तुम्हारे मुंह से क्षमा के शब्द न सुन सकी। विदा !

—किसकी कौन ?

रसना।

पत्र कुमार के हाथों से छूटकर भूमि पर गिर पड़ा। उसका हृदय हाहाकार कर उठा। वे ज़ोरों से चिल्ला उठे, 'रसना ! रसना !!'

दासी, जो वहीं पास ही खड़ी थी, घबराकर बोल उठी, 'छोटे सरकार ! छोटे सरकार !! यह आपको…'

परन्तु कुमार ने उसकी बात न सुनी। वे दौड़ते हुए उस ओर चले,

जिधर रसना का कमरा था। पास पहुँचकर उन्होंने कमरे का ताला खोला और दौड़ते हुए भीतर घुसे। भीतर घुसते ही उनका हृदय सन्न हो गया, रक्त जम गया। उन्होंने देखा, रसना कुर्सी पर बैठी है, उसकी आँखें ऊपर को चढ़ी हैं, उसका सिर एक ओर को लटक गया है। कुमार ने दौड़कर रसना को अपनी गोद में उठा लिया और उसे झकझोर कर कहा, 'रसना यह तुमने क्या किया ?'

कुमार ने रसना की चोली का बटन खोल दिया और उसकी छाती पर हाथ रखा। उसके दिल की धड़कन बन्द होने के करीब थी, परन्तु अभी तक बन्द नहीं हुई थी। कुमार ने उसे पुनः हिलाया इस बार रसना में कुछ चैतन्यता के लक्षण दीख पड़े। कुमार ने रुद्ध कण्ठ से पुकारा, 'रसना !'

रसना के मुँह से घबराहट का एक आवाज़ निकली। बहुत ही धीमे स्वर में लड़खड़ाती ज़बान से उसने कहा, 'प्राण ! तुम आ गये ?'

मैं आ गया रसना ! परन्तु तुमने मुझसे ऐसा छल क्यों किया रसना ! मैं तुम्हें कष्ट दे रहा था, परन्तु तुमने भी तो मुझे कम कष्ट नहीं दिया था ? जिस प्रकार तुमने मुझे जलाया था उसी प्रकार मैं भी तुम्हें जला रहा था, परन्तु रसना मैंने यह कभी न सोचा था कि तुम इस प्रकार छोड़कर चली जाओगी। मैं वास्तव में तुम्हें प्यार करता था, परन्तु तुमने कभी मेरे प्यार का बदला न दिया, उल्टे आज मेरे दिल में हमेशा के लिए एक जलन छोड़े जा रही हो' कुमार ने कहा। वे रो रहे थे। उनके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित हो चली थी।

'प्राण !' रसना टूटे-फूटे शब्दों में बोली, 'भूल जाओ उन बीती बातों को। अब मैं जा रही हूँ, मेरा जीवित रहना असम्भव है। मैंने हीरे की अँगूठी को अपनी जीभ पर···प्राण ! चलते समय मेरे सर पर हाथ रखकर, मुझे क्षमा कर दो।'

कुमार ने रसना के सर पर हाथ रख दिया। बोले, 'रसना ! मैंने तुम्हें सच्चे दिल से क्षमा किया लेकिन तुमने मेरे सीने में जो गहरी लकीर खींच दी है, वह आजन्म नहीं मिटेगी रसना। तुम बेवफा हो, तुमने मेरा कुछ भी खयाल न किया, तुमने मेरे सताने से ऊबकर आत्महत्या कर ली परन्तु यह न सोचा कि उस समय मनुष्य को किस प्रकार की वेदना हुई होगी, जिस समय उसने अपनी ही पत्नी को दूसरे के साथ दिल लगाते हुए देखा होगा ?'

'प्राण !' रसना ने कहा और अपना मुँह ऊपर उठाकर कुमार का

मुँह चूम लिया। कुमार ने उसे अपने अंग में दबा लिया, आखिरी बार रसना ने अपनी आँखें खोलीं। एक क्षण के लिए दोनों के नैन आपस में जा मिले। रसना के मुँह पर हल्की मुस्कराहट खेल उठी, वैसी ही, जैसी दिए के बुझने के समय दीपशिखा तेज हो उठती है। एक मामूली हिचकी आई और अभागी रसना ने इस अपार संसार को सदैव के लिए त्याग दिया। कुमार रसना की लाश पर पछार खाकर गिर पड़े और पागलों की तरह चिल्ला उठे, 'रसना! रसना!!'

× × ×

श्री आगर ने कारिन्दा से कहा, 'क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि रसना ने स्वयं आत्महत्या नहीं की, वरन् उसे ज़हर दिया गया है?'

'जी सरकार!' कारिन्दा बोला, 'यही बात है। बहूरानी को अवश्य ही ज़हर दिया गया है। छोटे सरकार उन्हें सदैव सताया करते थे। हो सकता है कि क्रोध में आकर उन्होंने उसे···'

'क्या कहा? क्या तुम कुन्दन पर शक करते हो?' श्री आगर ने गरजकर कहा।

'मैं छोटे सरकार पर शक नहीं करता सरकार! वरन् सत्य बात कह रहा हूँ। आप तो जानते ही हैं कि मैं कोई बात बिना प्रमाण के नहीं कहता। इस बात के लिए भी मेरे पास काफी प्रमाण उपस्थित हैं,' कारिन्दा बोला।

'प्रमाण? क्या तुम्हारे पास इस बात का कुछ प्रमाण है कि कुन्दन ने रसना को ज़हर दिया है?' श्री आगर ने काँपते हुए पूछा।

'जी सरकार! मेरे पास इस बात के पर्याप्त प्रमाण एकत्रित हैं, मगर अभी उन बातों को जाने दीजिए। अभी दाह-क्रिया का प्रबन्ध होना चाहिए। आपके कथनानुसार मैंने सब कुछ ठीक कर लिया है। लोगों में यह शोर कर दिया है कि बहूरानी 'हार्ट-फेल' हो जाने के कारण मरी हैं, न कि किसी आकस्मिक दुर्घटना से। आपके 'फेमिली डाक्टर' से सर्टिफेकेट भी ले लिया है। अब किसी बात की आशंका नहीं। शहर के सभी रईस दाह-क्रिया में शामिल होने के लिए आ गए हैं। अब आप भी बाहर चले चलें', कारिन्दा ने कहा।

'अच्छा! चलो! मगर यह बात गुप्त ही रहे। कोई यह न जानने पाए कि रसना की मृत्यु स्वाभाविक नहीं है', कहकर श्री आगर कारिन्दा को साथ लेकर चले गए।

रसना की दाह क्रिया बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुई। शहर के बड़े-बड़े रईस जमींदार एवं हाकिमों ने बड़ी संख्या में पधार कर सन्तप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक वेदना प्रकट की। परन्तु कुमार का हृदय न शान्त हुआ। उनके हृदय में पश्चात्ताप का प्रलयंकारी ज्वालामुखी धधक रहा था, जिसका बुझना सरल न था।

सत्रह

दारोगा को सख्त घायल करने के जुर्म में बीरन पर मुकदमा चला। बेचारी तिल्लो, वह असहाय अछूत बाला दर-दर भटकती फिरी, परन्तु कोई भी उसकी सहायता करने को तैयार न हुआ। वह सभी वकीलों व बैरिस्टरों के घर गई, लेकिन किसी ने उसकी न सुनी। सभी ने उसे गरीब जानकर दुत्कार दिया। अमीरों की दुनिया में··· सभ्य कहे जाने वाले समाज में उसे कहीं जगह न मिली।

दारोगा अस्पताल में भेज दिया गया था, वहाँ जाकर दो दिनों तक उसकी अवस्था शोचनीय रही, उसके बचने की कोई आशा न थी। परन्तु तीसरे दिन डाक्टर की तत्परता से उसकी हालत सुधरने लगी और लगभग डेढ़ महीने में वह इस योग्य हो गया कि चारपाई पर उठकर बैठ सके।

आज बीरन के मुकदमे का फैसला है। शहर-भर में सब जगह इस मुकदमे की सनसनी है। सभी दस बजते ही कचहरी में आ डटे हैं। तिल्लो उदास मुँह लिये इजलास के एक कोने में बैठी है। कुन्दन कुमार भी आज पधारे हैं और वकीलों की मेज़ के पास बैठे हुए न जाने क्या सोच रहे हैं। घड़ी ने टन्न से करके साढ़े दस बजाया, साथ ही इजलास के कोने का पर्दा हटा और माननीय जज धीरे-धीरे आकर न्याय की कुर्सी पर बैठ गये। चारों ओर सन्नाटा छा गया। अर्दली ने जोरों से 'बीरन' का नाम लेकर पुकारा। सब की आँखें दरवाज़े की ओर चली गईं। उसी समय हथकड़ी-बेड़ी से जकड़े बीरन ने दो सिपाहियों के साथ प्रवेश किया। कुमार ने बीरन की ओर देखा, और पुनः आँखें नीची कर लीं। बीरन के मुकदमे में कुमार आज पहले-पहल आये थे। बीरन आकर कटघरे में खड़ा हो गया और उन शब्दों की प्रतीक्षा करने लगा, जिन पर उसका भाग्य निर्भर था।

धीरे-धीरे जज साहब अपनी कुर्सी छोड़कर उठ खड़े हुए। एक बार उन्होंने अपने सर के ऊपर टँगे हुए सम्राट और सम्राज्ञी के चित्र पर दृष्टि डाली पुन: गम्भीर वाणी से बोले, 'अपराधी ! तुम्हें दारोगा को घायल करने के जुर्म में तीन साल कैद की सजा दी जाती है।'

तिल्लो, कुमार एवं उपस्थित सारी जनता पर वज्र गिर पड़ा। किसी को भी यह विश्वास न था कि नौकरशाही की इस प्रकार जीत होगी और बीरन इस प्रकार बेदर्दी के साथ दंडित किया जायगा। बेचारी तिल्लो भूमि पर गिर पड़ी और बेहोश हो गई। परन्तु बीरन न्याय के कठोर वाक्यों को सुनकर ज़रा भी विचलित न हुआ, वह पहले-सा ही गम्भीर बना रहा। जज साहब जब अपनी कुर्सी पर बैठ गये, तो उसने दृढ़तापूर्वक कहना प्रारम्भ किया, 'साहब ! आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है। मुझे इसके विषय में कुछ भी नहीं कहना है। कहना है तो केवल यह कि यदि निरपराध दीन मनुष्यों को दंडित करना ही आपके न्याय का विधान है, तो आपका यह 'न्याय' न्याय नहीं।'

कहते-कहते बीरन आवेश में भर गया। वह सिंह की भाँति निर्भय होकर कहता गया, 'न्याय की कुर्सी पर बैठकर अपने ही भाई किस प्रकार अपने गरीब भाइयों पर ज़ुल्म करते हैं, यह मैं जान गया। सात समुन्दर पार बैठे हुए हमारे साम्राज्यपति जिन पर विश्वास करके न्याय की बागडोर सौंपते हैं, वे ही उनकी प्रजा पर अत्याचार करते हैं। जब अपने ही घर में कोढ़ है, जब अपना ही मित्र शत्रु है, जब अपने ही भाई जुल्मी हैं, तो इसमें साम्राज्यवाद का क्या दोष ? साम्राज्यवाद ने तो सभी ओहदे हम देश-वासियों को ही दे रखे हैं, यदि हमीं अपने अधिकार का दुरुपयोग करें, यदि हमीं न्याय की बागडोर मिल जाने पर अपने भाइयों पर ज़ुल्म करें, तो उसका क्या अपराध ? माननीय जज साहब ! आपने जो मुझे निरपराध को न्याय के भयानक कोल्हू में पीसा है, उसमें स्वयं मेरे भाग्य का दोष है। मेरी इज़्ज़त गई, आबरू गई, सब कुछ गया, उल्टे मैंने पाई यह तीन साल की सजा। गरीबों के लिए ही तो ये सजाएँ बनाई गई हैं। साहब ! मानसिक उत्तेजना ने मुझे विह्वल कर दिया है, अत: मुझे नग्न-सत्य कहने के लिए क्षमा कीजिएगा। मान लीजिए कि मेरी स्त्री की जगह आपकी स्त्री होती और वह दारोगा आपकी ही स्त्री से लिप्सा की पूर्ति करना चाहता एवं आप भी वहीं उपस्थित रहते, तो क्या आप वहीं खड़े-खड़े अपनी

स्त्री पर किये जाते हुए दुराचार को देखा करते ? क्या नपुंसक बनकर, अपनी स्त्री की अस्मत लुटती हुई देखना आप अधिक पसन्द करते ? क्या आप मर्द बनकर उस दुराचारी की गर्दन तोड़ने के बजाय, अपनी इज्जत लुटाकर न्यायालय का दरवाजा खटखटाना चाहते।'

'अदालत का अपमान···' सरकारी वकील बोल उठा।

'खबरदार ! अब एक शब्द भी मुँह से निकला,' एक सिपाही ने घुड़ककर कहा।

'कैदी ! अदालत का अपमान करने के जुर्म में तेरी सज़ा बढ़ाकर सात साल कर दी जाती है,' जज साहब ने अपनी गम्भीर वाणी में कहा।

सिपाही बीरन को लेकर बाहर की ओर चले। बाहर ही कुमार खड़े थे। एक क्षण के लिए दोनों के नेत्र आपस में जा मिले। कुमार के नेत्रों से दो बूंद आँसू टपककर फर्श पर गिर पड़े। बीरन बोला, 'छोटे सरकार ! तिल्लो की रक्षा का भार मैं आप पर सौंपता हूँ। मैं गरीब···'

इसके आगे वह कुछ न कह सका। उसका कंठ अवरुद्ध हो गया। सिपाही उसे लिए हुए आगे बढ़ गए। कुमार अपनी मोटर में जा बैठे।

बीरन नैनी सेन्ट्रल जेल में रखा गया। जेलों में कैदियों को किस प्रकार यन्त्रणापूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है, यह किसी से छिपा नहीं है। बीरन भी मार सहता हुआ, अपमान का सामना करता हुआ, अपने दिन काट रहा था।

और बिचारी तिल्लो ? वह आजकल निस्सहाय थी। उसका जीवन-सर्वस्व जेल में था और वह अपमान, लांछना तथा दुःख का सामना करती हुई अपनी झोंपड़ी में पड़ी थी। गाँव के कामी कुत्ते, जो तिल्लो को बहुत दिन से दिल में रखे हुए थे, परन्तु बीरन के डर से कुछ बोलते न थे, अब उद्दण्ड हो उठे। अब, कभी जब तिल्लो बाहर निकलती तो पहले से भी अधिक उस पर बौछारें उड़तीं। तिल्लो धैर्य के साथ सब कुछ सहती, सोचती, अछूत दुख ही सहने के लिए संसार में आए हैं।

गाँव में एक प्राणी ऐसा भी था, जो तिल्लो से आन्तरिक सहानुभूति रखता था, वह थे कुन्दन कुमार। जब से बीरन जेल गया था तब से कुमार तिल्लो के पास चुपके-चुपके कुछ-न-कुछ भेजते ही रहते थे। ज़ाहिर कर भेजने में उन्हें पिता का डर था। कुमार की सहायता पाने

से ही तिल्लो के पास रुपये, पैसे, भोजन, वस्त्र किसी की भी कमी नहीं थी और उसके दिन एक प्रकार से आनन्दपूर्वक से व्यतीत हो रहे थे। वह हृदय से कुमार के प्रति कृतज्ञ थी। कुमार भी अक्सर दिन में एक बार उसके पास आ जाते थे और उसे सान्त्वनापूर्ण वाणी से धीरज देते थे। परन्तु कुमार का तिल्लो के पास आना बहुत गुप्त रहता था, क्योंकि उनसे जनसमुदाय की कटूक्तियों का भय था। धीरे-धीरे कुमार और तिल्लो की घनिष्ठता बढ़ती गई, परन्तु दोनों में से किसी ने भी यह खयाल न किया कि इस घनिष्ठता के कारण उनके हृदय में जो एक प्रकार का मृदु-स्पंदन (मीठा दर्द) होने लगा है, वह आगे चलकर क्या रंग लायेगा?

अदा के पास भी कुमार का जाना जारी था। अदा कुमार को सच्चे हृदय से प्यार करती थी, परन्तु कुमार न जाने क्यों आजकल उससे खिंचे से रहते थे। यों तो अदा से पहले ही की तरह बोलते, प्यार की बातें करते, सब कुछ होता, परन्तु रह-रहकर न जाने क्यों कुमार का दिल एक दूसरी ओर ही खिंच जाता और वे एकाएक अनमने से हो उठते। मनुष्य का हृदय शिथिल नहीं होता है। आज वह एक चीज़ पर फ़िदा है, तो कल दूसरी पर। मन को स्थिर रखना कठिन है। कुमार भी मनुष्य ही थे। मनुष्य की स्वभावगत शिथिलता उनमें भी विराजमान थी। अतः तिल्लो पर यदि उनका दिल आ गया हो, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। मनुष्य तो सदैव ही सौंदर्य का प्रेमी रहा है। तिल्लो के साथ अधिक सम्पर्क रहने से कुमार का हृदय तिल्लो की ओर खिंचा जा रहा था, परन्तु उन्होंने अपने हृदय पर कड़ा नियन्त्रण रखा था और तिल्लो को किसी तरह भी यह न मालूम होने दिया था कि उनके मन में उसके प्रति क्या भाव है।

तिल्लो भी अपने को बचा न सकी थी। उसने अपने हृदय को बहुत रोका परन्तु उसका दिल कुमार पर आ ही गया। दोनों एक-दूसरे को मन-ही-मन प्यार करने लगे, परन्तु उन्होंने अपना यह प्रेम कभी एक-दूसरे पर प्रदर्शित न किया। आखिर दुर्बलता ने उन्हें अपना शिकार बना ही लिया, क्योंकि वे भी तो मनुष्य ही थे।

अदा ने भी कुमार के इस परिवर्तन को लक्ष्य किया, परन्तु वह कुछ न बोली। उसे मनुष्य के क्रूर हृदय का जो कटु अनुभव हो चुका था, उससे वह भलीभाँति समझ गई थी कि मनुष्य भ्रमर की भाँति रस चखता है और फिर एक कली को छोड़कर दूसरी पर उड़ जाता है

यही मानव समाज की दुर्बलता है । कुमार भी इस दुर्बलता से परे न थे ।

एक दिन जबकि अदा और कुमार एक ही पलंग पर लेटे थे, अदा ने कुमार को बाहुओं में जकड़कर कहा, 'साजन ! मुझे रह-रहकर यह भय होता है कि कहीं तुम मुझे छोड़ तो नहीं दोगे ?'

कुमार के शरीर में बिजली-सी दौड़ गई । वे बोले, 'अदा···'

अदा बोली, 'बोलो साजन ! तुम आजकल···'

'अदा !' कुमार कम्पित स्वर से कहने लगे, 'मेरा दिल···मेरा दिल न जाने कहाँ खिंचा जा रहा है, अदा ! मैं बहुत चाहता हूँ कि उस पर काबू रखूँ, परन्तु नहीं हो सकता । इस समय मेरे हृदय में भीषण संग्राम मचा हुआ है । मैं स्थिर नहीं कर पा रहा, कि क्या करूँ ?'

कुछ रुककर कुमार पुनः आवेश के साथ कहने लगे, 'लेकिन अदा ! मैं तुमसे कह दूंगा, सब कुछ कह दूंगा, मैं तुमको प्यार करता हूँ, इसलिए तुमसे अपने दिल का राज़ बताने में कोई हर्ज़ नहीं । सुनो प्यारी अदा ! मैंने तुम्हारे साथ छल किया है । परन्तु क्या करूँ, विवश हूँ । मेरा दिल मेरे कब्जे में नहीं है । मैं तिल्लो को चाहने लगा हूँ । क्या तुम इसके लिए क्षमा कर दोगी अदा ?'

'साजन !' अदा ने रुद्ध कंठ से कहा । उसे कुमार पर दया आ रही थी । कुमार कहते गये, 'अदा! मैं भी मनुष्य हूँ, मानवीय दुर्बलता मुझमें भी विराजमान है । मेरा दुर्बल हृदय यदि तिल्लो पर आ गया तो इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं । मैं बहुत चाहता हूँ कि अपने दिल को मसोस लूँ, परन्तु अब यह कठिन है । यदि मैं उसके यहाँ जाना बन्द कर दूँ, तो यह महान कृतघ्नता होगी । उसके पति ने जेल जाते समय उसे मेरे हाथों सौंपा था, तो फिर मैं उस गरीब को कैसे निस्सहाय छोड़ दूँ ? मैं अब क्या करूँ, तुम्हीं बताओ ।

'साजन तुम महान हो । यह तुम्हारे हृदय की दुर्बलता नहीं, पूर्व-जन्म के किसी पाप का दुष्परिणाम है । तुम अपने हृदय को शान्त करने का प्रयत्न करो । ज़रा भी फिसले कि जन्म भर को कालिख लग जायगी । किसी को प्रेम करना बुरा नहीं है साजन ! मगर वह प्रेम सात्त्विक हो, वासनामय, कुत्सित प्रेम न हो । जिस सरलतापूर्वक तुमने अपने हृदय का सारा भेद मुझे बता दिया है, उसे देखकर मैं आश्चर्यचकित हो उठी हूँ । इसीलिए कहती हूँ कि तुम महान् हो,

निष्कपट हो। तुमने मेरे साथ छल नहीं किया है, वरन् मैं अतीव प्रसन्न हूँ। लेकिन देखना मुझे···'

'मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकता अदा!' कहते हुए कुमार ने भर जोर अदा को अपने बाहुपाश में आबद्ध कर लिया। अदा के मुँह से निकल पड़ा, 'उफ।'

× × ×

अंधेरी रात में कहीं से आते हुए गाने की आवाज गूँज रही थी। बीरन जेलखाने की कोठरी में बैठा हुआ था। कोई कैदी गा रहा था। उसके गाने में दृढ़ता थी और उसमें देश-भक्ति का एक अविरल स्रोत प्रबाहित हो रहा था, जिसे सुनकर बीरन की नसें फड़क उठीं।

'यह कोई क्रान्तिकारी है' बीरन ने मन-ही-मन कहा।

सुबह हुई। बीरन को पता चला। एक दुबला-पतला-सा लम्बे मुँह का नवयुवक था वह। उसकी मुखाकृति से सौजन्यता एवं दृढ़ता टपक रही थी। बीरन ने कहा, 'भाई! कल वाला तुम्हरा गाना तो काफी सुन्दर था।'

'सुन्दर?' वह कैदी हँस पड़ा, 'भाई! वह दिला की जलन थी, देश-प्रेम के आँसू थे, जो गाने के शब्द बनकर निकल रहे थे।'

'तुम शायद क्रान्तिकारी हो भाई।' बीरन ने पूछा। ।

'क्रान्तिकारी नहीं भाई! माँ का तुच्छ सेवक कहो। आज भारत माता की दयनीय दशा देखकर कौन माँ का लाल आँसू न बहाएगा। जिसके हृदय में कुछ भी आर्यत्व होगा, जिसके हृदय में देश की मर्यादा का कुछ भी ध्यान होगा, वह विदेशियों की गुलामी त्यागकर अवश्य ही क्रान्तिकारी बनेगा,' उस युवक कैदी ने कहा।

'परन्तु भाई।' बीरन कहने लगा, 'तुम क्रान्ति द्वारा देशोद्धार चाहते हो, परन्तु यह जरा कठिन है।'

'कठिन नहीं है! अब हमें क्रान्ति का अवलम्बन लेना पड़ेगा। हमने इन विदेशियों से हाथ जोड़े, पैर पड़े, अपनी स्वतन्त्रता की भीख माँगी, परन्तु इनके कान जूं तक न रेंगी। अब हम चाहते हैं कि देश-भर में एक ऐसी क्रान्ति मचा दें कि साम्राज्यवाद दहल उठे। दुनिया की सभ्य कही जाने वाली जाति को यह मालूम हो जाय कि हम निरे नपुंसक नहीं हैं,' उस कैदी ने आवेश के साथ कहा।

'लेकिन भाई! स्वतन्त्रता प्राप्त करने की हममें योग्यता भी तो होनी चाहिए। नहीं तो हम उतना बड़ा साम्राज्य लेकर करेंगे ही

क्या ? हममें योग्यता की तो कमी है ही, साथ ही साथ एकता की भी कमी है। कोई शान्ति का अनुयायी है, तो कोई क्रान्ति का। आजकल जहाँ देखो वहीं हिन्दू-मुसलमान आपस में लड़ रहे हैं। इसका असर देश पर कैसा बुरा पड़ा है कि जिसकी गणना नहीं।'

'तुम भ्रम में हो भाई।' बीरन ने कहा।

इसी प्रकार उन दोनों में अकसर बातें हुआ करतीं।

अठारह

तिल्लो का दिल भी एक अजीब पशोपेश में पड़ा हुआ था। बीरन के जेल चले जाने के कारण वह दुःखी थी, परन्तु जिस समय कुन्दन कुमार उसके पास आकर बैठते और मधुर सान्त्वना-युक्त वाणी से उसे धैर्य देने लगते, तो उसे एक प्रकार के मीठे आनन्द का आभास होने लगता था। वह कुमार की बातें सुनते-सुनते बेसुध-सी हो जाती थी। मानवीय दुर्बलता ने उस पर अपना अधिकार कर लिया था। वह अपने-आप तक को भूल गई थी।

पानी का घड़ा उठाकर तिल्लो जिस समय पनघट की ओर चली, उस समय उसका हृदय विचारमग्न था। अपनी पतली कमर पर मिट्टी का घड़ा रखे हुए, वह बीरन और कुमार के विषय में तरह-तरह की बातें सोचती हुई चली जा रही थी। गाँव के बीच से गुज़रती हुई कच्ची सड़क पर इस समय कितने ही ऐसे मनचले मौजूद थे, जो बौछारों द्वारा तिल्लो को परेशान कर रहे थे, परन्तु तिल्लो जा रही थी।

पनघट पर पहुँचकर तिल्लो ने घड़ा ज़मीन पर रख दिया और वहीं तालाब के किनारे पुनः चिन्ता में निमग्न हो गई। वह न जाने किन विचारों में तल्लीन थी कि उसे समय का ध्यान ही न रहा। कब भगवान अंशुमाली ने अपनी किरण-जालों को समेटकर अस्ताचल की राह ली और कब सन्ध्या-कालीन उषा कुछ देर तक खिलखिलाकर चल दी, इसका उसे ध्यान ही न रहा।

रात्रि का आगमन समीप जानकर तिल्लो ने पानी से भरा हुआ घड़ा उठा लिया और जल्दी-जल्दी गाँव की ओर चल पड़ी। उसे महान् आश्चर्य हो रहा था कि उसने पनघट पर इतनी देर क्यों लगा दी?

इस समय तिल्लो का हृदय ज़ोरों से धड़क रहा था। उसे घनी अमराई को पार करके घर जाना होगा और अंधेरी रात में भूत···और यह सब सोचकर वह भय से विह्वल थी। ग्रामीण बालाएँ किस प्रकार भूतों पर विश्वास करती हैं, यह किसी से छिपा नहीं है।

धड़कते हुए कलेजे से तिल्लो घर की ओर चली जा रही थी। अमराई में प्रवेश करते ही एक बार पुनः उसका हृदय ज़ोरों से धड़क उठा, परन्तु वह कलेजा बड़ा करके अमराई में घुसी। बीच अमराई में कई कब्रें बनी हुई थीं, जिनमें एक कब्र सबसे ऊँची थी। रास्ता इसी कब्र के एकदम पास से गुज़रता था। अभी तिल्लो उस कब्र से लगभग पाँच हाथ की दूरी पर थी कि उसने भय-विस्फारित नेत्रों से देखा कि कोई सफेद-सी शकल कब्र के पीछे से धीरे-धीरे ऊपर को उठ रही है। उस सफेद शकल ने ऊपर मनुष्य की आकृति धारण कर ली। धीरे-धीरे वह सफेद शकल कब्र की आड़ से निकलकर बीच रास्ते पर आ खड़ी हुई। तिल्लो उससे केवल तीन हाथ की दूरी पर थी। उसके काँपते हुए हाथों से घड़ा छूटकर ज़मीन पर गिर पड़ा और वह ज़ोरों से चिल्ला उठी, 'भूत !'

वह सफेद शकल धीरे-धीरे तिल्लो की ओर बढ़ने लगी। अब तिल्लो अपने को सम्हाल न सकी, और एक चीख मारकर बेहोश हो भूमि पर गिर पड़ी। सफेद शकल ने झुककर उसे अपनी गोद में उठा लिया। उसी समय दो और सफेद शकलें, न जाने कहाँ से वहाँ आ पहुँचीं। तीनों शकलें तिल्लो को लिए हुए पुनः उसी कब्र की ओर चली गईं। बेचारी तिल्लो भूतों के पंजे में आ पड़ी।

जिस स्थान पर यह सब हुआ था, उससे लगभग दस कदम की दूरी पर एक घने पेड़ के पीछे दो और शक्लें उभरीं। तिल्लो को लेकर जब पहली शक्लें कब्र के पीछे चली गईं, तो इन शक्लों में से पहली ने दूसरी से कहा, 'देखा न कारिन्दे की शैतानी। अब बिना इस बदमाश के दाँत तोड़े मुझे चैन नहीं। तुम यहीं ठहरो, मैं जाकर उन शैतानों की खबर लेता हूँ।'

इतना कहकर वह शकल आगे की ओर बढ़ी, दूसरी शकल ने उसे रोका और बोला, 'छोटे सरकार ! आपका अकेले ही शैतान कारिन्दा और उनके साथियों के पास जाना ठीक नहीं। मुझे जाने दीजिए।'

'मैं जो चाहता हूँ, उसे करो,' कहकर पहली शकल झपटती हुई उस ओर को बढ़ी, जिधर वह बड़ी-सी कब्र पड़ती थी।

× × ×

तिल्लो जब होश में आई, तो उसने अपने को विचित्र ही दशा में पाया। उसके हाथ-पैर एक चारपाई के साथ मज़बूत रस्सियों से कस-कर बँधे थे और वह चारपाई पर चित्त लिटाई हुई थी। वह अपने शरीर का कोई अंग न हिला सकती थी। उसने अपनी दृष्टि दाहिनी ओर घुमाई। वहाँ तीन पुरुषों को खड़े देखकर महान आश्चर्य हुआ। यद्यपि उस समय घनघोर अन्धकार छाया हुआ था फिर भी उस जगह एक धीमी रोशनी वाली लालटेन जल रही थी, जिसकी रोशनी में उन मनुष्यों को देखते ही वह चौंक पड़ी और उसके मुँहसे निकला, 'कौन? कारिन्दा साहब। क्या यह सब तुम्हारी ही कारिस्तानी थी? क्या यह सब भूतों की साज़िश तुम्हीं ने की थी? इस बियावान अमराई में, इस कब्र के पीछे चारपाई लाकर क्या तुम…'

'मैं तुम्हें रानी बना दूंगा तिल्लो! कारिन्दा ने कहा और तिल्लो की बगल में चारपाई पर जा बैठा। वह पुनः कहने लगा, 'यह फूल-सा शरीर लेकर भी तुम अपने को गरीब समझती हो? यह चाँद-सा मुखड़ा, यह गोरा बदन, यह रतनारी आँखें और…'

परन्तु इसी समय अँधेरे में से पत्थर का एक बड़ा-सा नुकीला टुकड़ा तेज़ी के साथ भर्राता हुआ आकर कारिन्दे के माथे में धँस गया। उसके मस्तक से रक्त की धारा बह चली। वह आह कर वहीं ज़मीन पर लेट गया। उसके दोनों साथी उसकी दशा देखकर अभी आश्चर्य ही कर रहे थे कि पत्थर के दो टुकड़े आकर इन दोनों को भी लगे और वे दोनों भी 'आह' कर भूमि पर लेट गये और छटपटाने लगे। तिल्लो को अपने शत्रुओं की यह दशा देखकर महान आश्चर्य हुआ। इसी समय अँधेरे में से एक दूसरी शकल निकलकर लालटेन की धीमी रोशनी में आ खड़ी हुई। तिल्लो ने उस ओर दृष्टि की, और उसी समय उसके मुँह मे प्रसन्नता की एक रेखा दौड़ गई। उसके मुँह से अनायास ही निकल पड़ा, 'कुमार! आप यहाँ?'

आने वाले सचमुच कुन्दन कुमार ही थे। उन्होंने पास जाकर तिल्लो के बन्धन खोल दिए। तिल्लो उठकर खड़ी हो गई। कुमार बोले आज तुम्हें बरबाद करने की पूरी कोशिश की गई थी। ये शैतान चारपाई तक यहाँ उठा लाए थे। परन्तु ईश्वर की कृपा से मुझे उनकी चाल पहले ही मालूम हो चुकी थी। जिस समय ये दुष्ट सड़क पर से बेहोश की अवस्था में उठाकर यहाँ लाए, उस समय मैं एक नौकर साथ

पास ही छिपा हुआ सारी दास्तान देख रहा था।'

इतना कहकर कुमार कारिन्दा के पास आए, जो ज़मीन पर पड़ा हुआ अभी दर्द से छटपटा रहा था। कुमार उससे बोले, 'गरीबों पर दुराचार करते हुए तुझे शर्म नहीं आती ?'

'कुमार !'—कारिन्दा दाँत पीसकर कहने लगा, 'आपने जो मेरी दुर्गति की है, यदि उसका बदला न लिया तो···।'

'तू तो हमेशा से ही बदला ले रहा है शैतान !'—कहकर कुमार तिल्लो से बोले, 'तिल्लो ! चलो चलें।'

कुमार तिल्लो को साथ लेकर गाँव को चल पड़े।

× × ×

श्री आगरजी अभी रात की ब्यालू करके उठे ही थे और अब सोने की तैयारी में ही थे, कि नौकर ने आकर कारिन्दा के आने की खबर दी और कहा, 'सरकार ! कारिन्दा साहब घायल हालत में दरवाज़े पर खड़े हैं। उनके मस्तिष्क से खून निकल रहा है। वे इसी समय आपसे मिलना चाहते हैं।

'इतनी रात को वह घायल होकर हमारे पास आया है? आश्चर्य ! श्री आगर चिन्तित स्वर में बोले, 'अच्छा ! उसे भेज दो।'

नौकर चला गया। दो मिनट बाद घायल कारिन्दा ने वहाँ प्रवेश किया। उसके मस्तक से रक्त की धारा बह रही थी जिससे कपड़े तर-बतर थे। श्री आगर उसकी यह अवस्था देखते ही चौंक पड़े, और बोले 'तुम्हारी क्या दशा है ?'

'यह छोटे सरकार की कारिस्तानी है।' कहते-कहते कारिन्दा ने दौड़कर श्री आगर के पैर पकड़ लिए और बनावटी रोना रोते हुए बोला, 'सरकार ! आप मुझे कितना मानते हैं और छोटे सरकार मुझसे कितना जलते हैं, यह तो आप जानते ही हैं। मेरी यह दुर्गति उन्होंने ही की है। वे तिल्लो के साथ अमराई में न जाने क्या कर रहे थे। जब मैंने उन्हें टोका, तो मुझे यह फल मिला। क्या स्वामिभक्ति का यही पुरस्कार है ?'

'क्या तुम्हारी इस दशा का कारण कुन्दन कुमार हैं ?' श्री आगर क्रोध से बोले, 'बुलाओ तो वह कहाँ है ?'

'वे घर पर नहीं हैं सरकार ! वे तो उसी हरामज़ादी तिल्लो के घर गए हैं।' कारिन्दा ने आरज़ू के साथ कहा। श्री आगर यह सुनते ही गरजकर बोले, 'अब असह्य हो गया। अब मैं आगे कुछ नहीं सुनना

चाहता। मैंने उसे आज़ादी दे रखी थी, क्योंकि वह मेरा इकलौता लड़का था, मेरी आँखों का तारा था, परन्तु अब मैं अधिक नहीं सह सकता। अब मैं उसे निर्दयतापूर्वक मसल दूँगा। जिस प्रकार शरीर का सड़ा हुआ माँस काटकर फेंक दिया जाता है, उसी तरह···उसी तरह···।'

आवेश के कारण श्री आगर का वृद्ध शरीर काँपने लगा। कारिन्दा ने अपना असर पूरा-पूरा होता देखकर धीरे से वहाँ से चले जाना ही उचित समझा। बाहर आकर वह अपने-आपही बड़बड़ाने लगा···'छोटे सरकार! छोटे सरकार!! हा-हा? अब छोटे सरकार को मुझसे छेड़छाड़ करने का नतीजा मालूम होगा। अभी रात में मुझे एक चाल और चलनी होगी। चल के दो वेश्याओं को कुछ रुपया देकर साथ मिलाना होगा और तब···और तब सुबह ही छोटे सरकार यदि घर से निकाल न दिए जायें तो मेरा नाम नहीं।'

× × ×

तिल्लो ने झोंपड़ी के भीतर ही एक चारपाई बिछा दी। कुमार उस पर बैठ गए। उस समय रात्रि के नौ बज गये थे।

'आज तो कारिन्दा तुम्हें बरबाद ही कर चुका था।' कुमार ने कहा।

'मगर आपने मेरी रक्षा कर ली कुमार! लोग कहते हैं कि गरीबों की रक्षा भगवान करते हैं, लेकिन इस समय आप ही मेरे भगवान हैं।' तिल्लो ने कहा। उसकी आँखों में प्रेम एवं कृतज्ञता का भाव था।

पहले लिखा जा चुका है कि कुमार और तिल्लो एक-दूसरे को मन ही-मन प्यार करते थे। इसे उनकी दुर्बलता कहिए या इस समय दोनों प्रेमी हृदय एकान्त में बैठे थे। उनके प्रेम-सम्पादन में बाधा देने वाला कोई नहीं था। दोनों के हृदयों में प्रेम की अतृप्त आकांक्षा हिलोरें ले रही थीं, परन्तु वे एक-दूसरे पर अपना प्रेम प्रकट करने में असमर्थ थे, क्योंकि उनके बीच में लज्जा एवं संकोच की एक सुदृढ़ दीवाल खड़ी थी।

'तिल्लो! तुम्हारी यह झोंपड़ी तो बहुत अच्छी है।' कुमार ने किंचित् हास्य करते हुए कहा।

'क्या आपके महल से भी।' तिल्लो अजीब अन्दाज़ से मुस्कराकर बोली। उसी समय बाहर ज़ोरों से बिजली कड़क उठी। कुमार चौंक पड़े। बोले, 'पानी बरसना चाहता है।'

'बरसात का दिन है। पानी तो बरसेगा ही।' तिल्लो ने कहा।

थोड़ी ही देर में मूसलाधार पानी बरसने लगा। बिजली की कड़क एवं मेघों की गरज ज़ोरों से सुनाई पड़ने लगी। थोड़ी ही देर पहले प्रकृति, जो शान्त एवं निस्तब्ध थी, अब प्रलयकारी बन गई। झोंपड़ी की खुली हुई खिड़की से ठंडी-ठंडी हवा आकर कुमार एवं तिल्लो को प्रेम-राग सुनाने लगी।

'पानी तो बरसने लगा।' कुमार बोले, 'अब मैं घर कैसे जाऊंगा।'

'घर जाने की ज़रूरत ही क्या है ? यह भी तो घर ही है।'

'मैं अपने महल में जाना चाहता हूँ। इस झोंपड़ी में मेरा मन नहीं लग सकता।' कुमार ने कहा।

'यह भी तो महल ही है कुमार ! गरीबों का महल क्या आपको पसन्द नहीं ?' कहकर तिल्लो खिलखिला कर हँस पड़ी। उसका मादक यौवन और भी देदीप्यमान हो उठा। कुमार भी ठठाकर हँस पड़े।

इस समय कुमार और तिल्लो के हृदय में प्रेम की ज्वाला धधक रही थी। कुमार के सामने ही रूपमाधुरी तिल्लो बैठी थी, वह तिल्लो, जिसके लिए उन्होंने अपनी प्यारी अदा को भी बिसार दिया था। बाहर ज़ोरों से पानी बरस रहा था, जिससे दोनों को अपना-अपना दिल सम्हालना मुश्किल था। जिस समय पानी की बूंदें रिमझिम-रिमझिम कर बरस रही हों, उस ठंडी-ठंडी हवा की हिलोरें मानव-जगत में प्रेम का संचार कर रहे हों, जब बिजली की प्रखर ज्योति प्रेमियों के मुख पर पड़ कर उसे और भी सलोना बना दे रही हो, ऐसे समय में दो प्रेमी हृदय प्रभावित हुए बिना कैसे रह सकते हैं ? कुन्दन कुमार एवं तिल्लो का भी यही हाल था। दोनों के हृदय दुर्बल होते जा रहे थे। दोनों चाहते थे कि एक-दूसरे को अपने सीने से दबा लें।

बाहर रास्ते पर से जाता हुआ कोई आदमी अलाप लेकर गा रहा था। पानी बरसने की मधुर आवाज़ के साथ उसके गाने की ध्वनि मिलकर बड़ी ही कर्णप्रिय मालूम दे रही थी। कुमार और तिल्लो खिड़की से आती हुई गाने की आवाज़ एकाग्रचित्त हो सुनने लगे। उन्हें ऐसा मालूम हुआ, मानो यह गाना उन्हीं को सम्बोन्धित करके गाया जा रहा हो। वह मनुष्य गाता जा रहा था।

रस बरसे, रस बरसे।

अपनी प्यास छिपाए मन में।
क्यों तरसे, क्यों तरसे ।।

गाना सुनते-सुनते कुमार और तिल्लो का बुरा हाल हो गया। प्रेम ने दोनों के हृदयों पर पूर्णतया आधिपत्य कर लिया। दोनों एक-दूसरे को अपने बाहुओं मे कस लेने के लिए व्याकुल हो उठे। ज्यों ही गाने की आखिरी आवाज़ गूंजती हुई कानों से विलीन हुई, उसी समय आवेश में आकर कुमार और तिल्लो, दोनों उठकर खड़े हो गए। सन्निकट ही था कि प्रेम के प्यासे वे दोनों एक-दूसरे को अपने बाजुओं में कस लेते और उनके उज्ज्वल चरित्राकाश में काला धब्बा लग जाता, कि उसी समय कुमार के हृदय को एक बड़ा झटका लगा। उनकी अन्तरात्मा बोल उठी, 'सावधान।'

एक क्षण में ही कुमार की विलुप्त चेतना लौट आई। वे हँसते हुए बोले, 'आग, पानी, एक-दूसरे से दूर ही रहें।'

कुमार उसी समय बाहर जाने के लिए दरवाज़े की ओर बढ़े। तिल्लो बोली, 'बाहर पानी बरस रहा है कुमार! थोड़ी देर ठहर…'

'आग पानी से ठण्डी होती है तिल्लो! मैं बाहर जाकर पानी का सामना कर लूँगा, परन्तु यहाँ रहकर आग का सामना करना मेरे लिए असम्भव है,' कहते हुए कुमार तेज़ी के साथ झोंपड़े से बाहर निकल गए। उसी समय ज़ोरों से बिजली कड़क उठी। समय बड़ा भयंकर था। वर्षा ताण्डव कर रही थी। तिल्लो आकर चारपाई पर बैठ गई। उसके मुँह से अनायास ही निकल पड़ा, 'निष्ठुर!'

वह मनुष्य अभी तक गाता जा रहा था।

'किसे करता है मूरख प्यार-प्यार-प्यार, तेरा कौन है?'

× × ×

अदा रेडियो के पास बैठी हुई कोई गाना सुन रही थी कि इसी समय कुन्दन कुमार ने हाथ में एक बोतल लिए हुए प्रवेश किया और आकर एक आराम कुर्सी पर बैठ गए। अदा की दृष्टि कुमार की बोतल पर पड़ी, साथ ही वह चौंककर बोली, 'हैं! जानी वाकर?'

'हाँ अदा! तुम्हींने एक दिन कहा था न, कि शराब रंज व गम को भुलाने वाली चीज़ है। आज मुझे भी इस चीज़ की ज़रूरत आ पड़ी। इस समय मेरे हृदय में भयंकर क्रान्ति मची हुई है। मैं चाहता हूँ इस क्रान्ति को शान्ति में परिवर्तित करना' कुमार बोले।

'लेकिन तुम यह शराब पा कहाँ से गये?' अदा ने पूछा।

'दुकान से खरीदा है। मेरे लिये एक प्याला ला दो। इस समय मेरी हालत अच्छी नहीं है।'

'लेकिन मैं तुम्हें शराब न पीने दूंगी। तुम आज अपने होशहवास में नहीं हो। तुम पथभ्रष्ट होना चाहते हो', अदा ने कहा।

'अदा! ज़रूर शराब पीऊँगा। तुम मुझे नहीं रोक सकतीं, नहीं रोक सकतीं', कहते हुए कुन्दन कुमार ने स्वयं उठकर अदा की अलमारी से चाँदी का एक प्याला निकाला और बोतल का कार्क खोलकर उसे भरा। अदा का 'रेडियो' अभी तक बज रहा था। ज्यों ही कुमार ने शराब का प्याला होंठों से लगाया, उसी समय रेडियो का गाना बदला और यह गाना शुरू हुआ—

भरी है आग मतवाले, तेरी बोतल के पानी में।
लगाता है बता क्यों, आग तू अपनी जवानी में।
अरे बोतल के दीवाने पटक दे फोड़ दे बोतल।
भरा है खून लाखों का, तेरे इस लाल पानी में॥

शराब का प्याला कुमार के हाथों से छूटकर भूमि पर गिर पड़ा। वे बोले, 'सचमुच इस लाल पानी में लाखों का खून भरा है। अब मैं इसे न पीऊँगा अदा!'

'तुम बड़े अच्छे हो साजन!' अदा ने कहा।

'अब मैं कभी उसके पास न जाऊंगा.' कुमार न जाने कहाँ की बात कहने लगे, 'वह छलनी माया है। उसके पास जाने से मैं बरबाद हो जाऊँगा। आज मैं बरबाद ही हो चुका था, परन्तु दैव ने मेरी रक्षा की।'

थोड़ी देर चुप रहकर कुमार पुन: बोले, 'अदा! घर जा रहा हूँ। आज मैंने कारिन्दा को अच्छा सबक दिया है। वह पिताजी के पास जाकर अवश्य ही मेरी शिकायत करेगा। अब चलकर देखूं कि क्या रंग लाते हैं?'

'इस आधी रात के समय तुम्हारा जाना ठीक नहीं है।'

'नहीं अदा! मुझे जाने दो। मेरी बाईं आँख न जाने क्यों फड़क रही है,' कुमार बोले।

'मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी साजन! सुबह उठकर चले जाना,' अदा ने कुमार के गले में हाथ डालते हुए कहा। कुमार को लाचार होकर ठहरना ही पड़ा।

तेरी याद की उफ् ! यह सर मस्तियाँ,
कोई जैसे पीके शराब आ गया।

× × ×

प्रातःकाल ही कुमार अपने घर लौट आये। अपने सजे हुए कमरे में घुसते ही उनकी नाक में शराब की तीव्र गन्ध आई, साथ ही उनकी दृष्टि कमरे के बीच में रखी हुई एक छोटी-सी मेज़ पर पड़ी जिस पर दो शराब की बोतलें और एक शीशे का प्याला रखा हुआ था, कुन्दन कुमार यह देखते ही चौंक पड़े। वे कदम बढ़ाते हुए उस मेज़ के पास तक चले आये और गौर से मेज़ पर की चीज़ें देखने लगे। वह शीशे का प्याला लबालब शराब में भरा था। कुमार इन चीज़ों को देखकर आप-ही-आप बड़बड़ाने लगे, 'हैं ! मेरे कमरे में ये चीज़ें कहाँ से आई ? क्या यह भी बदमाश कारिन्दे की कोई शैतानी है ?'

कुमार ने शराब से भरा हुआ वह प्याला हाथ में उठा लिया और उसे ध्यानपूर्वक देखने लगे। उसी समय बाहर से खटपट की आवाज़ आई और क्रोध में भरे हुए श्री आगर ने कारिन्दा के साथ वहाँ प्रवेश किया। कुमार भय से थर्रा उठे। उनके काँपते हुए हाथों से वह शराब का प्याला छूटकर भूमि पर गिर पड़ा। उनके नेत्रों के सामने अन्धकार छा गया। वे समझ गये कि यह सब कारिन्दा की ही शैतानी है।

'कुन्दन ! कुलाङ्गार !' श्री अगर क्रोध से कम्पित स्वर में बोले। कुमार के मुँह से आवाज़ ही न निकली। उनका शरीर काँप रहा था। एकाएक श्री आगर की दृष्टि कुन्दन कुमार की चारपाई के नीचे जा पड़ी। चारपाई के नीचे अंधेरा था, और उस अंधेरे में से चमकती हुई चार आँखें स्पष्ट दिखाई पड़ रही थीं। श्री आगर चौंक पड़े और कारिन्दा से बोले, 'देखो चारपाई के नीचे, वह क्या है ?

कारिन्दा कुमार की ओर देखकर धीरे से मुस्कराया, तत्पश्चात् उस चारपाई के पास जाकर, उसे उठा दिया। यह क्या ? चारपाई के नीचे दो परी-सी सुन्दरी युवतियाँ दुबकी हुई बैठी थीं। यौवन से मद-माती उनकी निगाहें थीं। ये श्री आगर और कारिन्दा को भयभीत दृष्टि से देख रही थीं।

'यह क्या ? ये दोनों कौन हैं ?' श्री आगर ने तड़पकर पूछा।

'सरकार !' कारिन्दा कहने लगा, 'ये दोनों कुमार की रखेल हैं। इन्हीं दोनों को लेकर कुमार यहाँ रंगरलियाँ मना रहे थे। जब आपके आने की आहट मिली, तो इन्हें चारपाई के नीचे छिपा दिया।

कुन्दन कुमार के मुँह से एक शब्द भी न निकला। घटनाचक्र से घबड़ा कर के किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि ये वेश्याएँ उनके कमरे में आई कहाँ से ! अवश्य ही वे उनके आने के पहले ही चारपाई के नीचे छिपी थीं, यह सब बदमाश कारिंदे की ही करतूत है।

'अब हद हो गई,' श्री आगर बोले, 'कुन्दन ! मेरा इकलौता बेटा था। मैंने तुझे पूरी आजादी दे रखी थी। मैं तुमसे कभी यह न पूछता था कि तू रात को कहाँ रहता है और दिन को कहाँ ? परन्तु मुझे यह न मालूम था कि तू अपनी आजादी से बुरा लाभ उठाएगा। नीच ! तूने मेरे नाम पर, मेरे बुढ़ापे पर कालिख पोत दी। परन्तु अब मैं नहीं सह सकता। मैं अब तक तेरी सब बुराइयों को माफ करता चला आ रहा था, लेकिन अब यह न होगा। तू मेरे बदन का सड़ा हुआ माँस है, मैं तुझे अपने बदन से काटकर दूर फेंक दूँगा। तू आस्तीन का साँप है, मैं तुझे दूध पिलाकर न पालूँगा। दगाबाज़ ! नीच ! जा तू, जहाँ तेरा जी चाहे। अब मेरे घर में तेरे लिए स्थान नहीं। मेरे मन में तेरे लिये प्रेम नहीं और मेरी आँखों में तेरे लिए आँसू नहीं। तेरी माँ ने मरते समय तेरे पालन का भार मुझे सौंपा था, मैंने भी तेरे लिए कुछ उठा न रखा। नीच ! तू ऐसा अधम है कि जन्म लेते ही अपनी माँ की जान ली और बड़ा होकर पिता को भी दुःख दे रहा है।'

'पिताजी !' कुन्दन कुमार के मुँह से बहुत प्रयत्न करने पर ये शब्द निकले। परन्तु उसी समय श्री आगर तड़पकर बोले, 'चुप रह। अब एक शब्द भी न निकाल। अब मैं कुछ भी नही सुनना चाहता। तू इसी समय, अभी मेरे घर से बाहर हो जा और जाकर उस होटल वाली वेश्या के साथ रह। कारिन्दा ! कुलांगार को अभी घर से बाहर कर दो।'

'पिताजी ! आप इस कारिन्दे के बहकावे में आकर मुझे अपराधी समझ रहे हैं।'

'मैं तेरा भ्रष्ट चरित्र स्वयं अपनी आँखों से देख रहा हूँ। जा ! फिर कभी मुझे अपना यह काला मुँह न दिखाना।'

'एक दिन आप पछताइयेगा पिताजी ! कहते हुए कुमार के नेत्रों से दो बूंद आँसू टपककर पृथ्वी पर गिर पड़े, परन्तु वे पानी के आँसू नहीं थे, वे थे खून के आँसू। कुमार धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकल गये। सड़क पर आते ही उन्होंने अपने घर को, अपनी जन्मभूमि को,

सदा के लिये प्रणाम किया और कच्ची सड़क से नीचे नंगे पाँव ही दक्खिन की ओर चल पड़े। इस संसार में नाना प्रकार की विपत्तियों का सामना करते-करते वे ऊब गये। अब वे चाहते थे इस संसार के मायाबन्ध को एकदम से तोड़ देना और एक ऐसे मार्ग का अवलम्बन करना, जिससे उनके संतप्त हृदय को शान्ति मिल सके। वे एक ऐसी जगह चले जाना चाहते थे, जहाँ जाकर वे दुनियादारी के मोह को एकदम ही भूल जायँ। वे बढ़ चले दक्खिन की ओर, सुदूर दक्खिन की ओर—उस ओर, जिधर विकट विन्ध्यपर्वत की दुर्गम श्रेणी दिखाई पड़ रही थी, उस ओर, जिधर भयानक जंगल में वन्य-पशु आदि विचरण करते रहते थे। कुमार ने न तो तिल्लो से ही भेंट की, और न अदा ही से। वे चले ही गये।

उन्नीस

दिन और रात्रि का चक्र घूमता चला गया, और पलक मारते भर में चार वर्ष व्यतीत हो गये। इस बीच में तिल्लो के दिन बहुत ही यन्त्रणापूर्वक बीते। कुमार जब गये उनका कुछ भी पता न लगा। वे न जाने किस दुनिया की ओर चले गये। तिल्लो को कुमार के चले जाने का असीम दुःखहुआ। उसने यही समझा कि कुमार मेरे ही कारण घर त्याग कर चले गए हैं। इन चार वर्षों के बीच बदमाश कारिन्दा ने तिल्लो पर बेहद जुल्म ढाया और उसके सतीत्व पर, उसकी भोली जवानी पर, कई बार आक्रमण किया। यह सब सहकर भी तिल्लो चुप थी।

इन चार वर्षों में अदा बराबर रोती रही। उसके साजन, जिन के कारण उसने अपना सब कुछ त्याग दिया था, उसे निस्सहाय छोड़कर चले गये थे। वह रोती हुई सारी रात व्यतीत कर देती, फिर भी उसके हृदय से प्रेम की जलन उसके साजन की याद, न जाती। वह कोठरी में टँगी हुई कुमार की तस्वीर के सामने चली जाती। उसे काँपते हुए हाथों से उतार कर हृदय से दबा लेती और कहती, 'साजन! मुझे मालूम था कि एक-न-एक दिन अवश्य ही मुझे छोड़ दोगे। मैं जानती थी कि तुम सांसारिक विपत्तियों से बहुत जल्द ऊब जाओगे। और मुझे त्याग कर सदैव के लिए चले जाओगे। इसीलिए तुमसे मैं अक्सर कहा

करती थी कि साजन ! मुझे छोड़कर न जाना और तुम भी मुझे बह-लाने को कह देते थे, अदा ! तुमसे कभी न अलग होऊँगा···परन्तु हाय निष्ठुर ! आखिर तुम मुझे अकेली छोड़कर ही चले गए। मेरा कुछ भी खयाल न किया। कुछ भी न सोचा कि तुम पर मरने वाली अदा, तुम्हारे बिना किस प्रकार रह सकेगी ?'

अदा इसी प्रकार अपने विदग्ध हृदय को लिए हुए अपना दुःखमय जीवन व्यतीत कर रही थी।

बीरन ने अपने जेल-जीवन के पाँच वर्ष व्यतीत किये। अब उसके छूटने के दिन आ गये, क्योंकि दो वर्ष छुट्टी आदि में कट गये थे। एक महीना बीतते-न-बीतते वह जेल से रिहा कर दिया गया। जिस समय अपना दुबला-पतला शरीर लिये हुए वह जेल से निकला, उस समय उसके पास पैसा भी न था।

बीरन के साथ ही एक और कैदी भी जेल से रिहा किया गया था। उस कैदी से बीरन की घनिष्ठता हो गई थी। बीरन और वह कैदी सड़क के किनारे बैठकर अपने आगामी कार्यक्रम पर विचार करने लगे। वह कैदी बोला, 'भाई ! मैं तो अभी अपने घर न जाऊँगा। मैं कैद की मियाद से एक साल पहले ही छोड़ दिया गया हूँ। इस साल मैं बम्बई जाकर कुछ रुपया कमाऊँगा, ताकि घर जाने पर स्त्री खुश भी हो।'

'मुझे भी साथ ही बम्बई ले चलो मित्र ! ···बीरन बोला, 'मैं भी कुछ रुपया कमाकर तब घर चलना चाहता हूँ। चलो ! बम्बई चलकर अपने घर को एक-एक पत्र लिख देंगे।'

उस दिन बीरन और वह कैदी बिना टिकट ही 'बाम्बे मेल' पर जा बैठे। बम्बई पहुँचने तक बीरन को बहुत कष्ट उठाना पड़ा। टिकट न रहने के कारण कई जगह उसे मार भी खानी पड़ी, परन्तु वह सब कुछ सहता हुआ बम्बई पहुँच ही गया। बम्बई पहुँचकर वह नौकरी की तलाश में इधर-उधर मारा-मारा फिरने लगा, परन्तु उसे अछूत जान-कर कोई नौकरी देने को तैयार न हुआ। बीरन भूखों मरने लगा। अन्त में एक दिन वह एक देव-मन्दिर के पास जा निकला और मन्दिर की सीढ़ियों पर बैठा रहा। थोड़ी देर के बाद देव-मन्दिर का पुजारी बाहर निकला। बीरन ने उससे नौकरी याचना की। पुजारी बोला, 'तुम नौकरी चाहते हो ? अच्छा ! तुम्हें नौकरी मिल जाएगी। तुम कौन जात हो ?'

बीरन अपनी असली जात छिपाते हुए बोला, 'पुजारी ! मैं जात का अहीर हूँ। यदि आप कृपा कर मुझे श्रीचरणों में आश्रय देंगे तो मैं जी जाऊँगा।'

'तुम्हें नौकरी मिल गई,' पुजारी ने कहा, 'तुम भीतर जाकर अपना काम सम्हालो। तुम्हें नित्य 'देव' को स्नान करा कर, पुष्प-माला से उन्हें सजाना होगा और धूप-दीप के बर्तनों को माँजकर साफ रखना होगा। तुम्हें दस रुपये महीने मिलेंगे।'

'मैं सब तरह से तैयार हूँ पुजारी जी !' बीरन ने कहा। पुजारी बीरन को लेकर भीतर चला गया।'

अछूत होने के कारण जिस बीरन को देवता के दर्शन करने की भी आज्ञा नहीं थी, वह बीरन अब जात छिपाकर देवता की सेवा करने लगा। वह नित्य सवेरे उठता, देवता को स्नान कराकर पुष्प माला आदि से सजाता और अपने को धन्य मानता। पुजारी भी उसकी सेवा से अत्यन्त प्रसन्न था। वह बीरन को स्नेह की दृष्टि से देखता और उसे किसी प्रकार का कष्ट न होने देता। इसी प्रकार अभागे बीरन के दिन व्यतीत हो रहे थे।

कुछ दिन बाद बीरन ने एक पत्र तिल्लो के पास भेजा जिसमें उसने जेल से अपने छूटने की बात एवं ऐन होली के दिन घर आने की बात लिख दी। बीरन ने सोचा था कि होली पर पुजारी से एक हफ्ते की छुट्टी लेकर घर चलूंगा और तिल्लो को भी यहीं लाकर रखूंगा। यहाँ हमारे दिन बहुत अच्छी तरह व्यतीत होंगे।

जब बीरन का पत्र तिल्लो को मिला, वह फूली न समाई। बीरन ने होली के दिन घर आने को लिखा था, वह आज ही से सब तैयारी करने लगी। घर को झाड़-पोंछकर साफ कर दिया। होली उस दिन से केवल सात दिन रह गई थी। ये सात दिन उसे सात युग के समान लगने लगे।

देव-मन्दिर का पुजारी, जिसके यहाँ बीरन नौकरी करता था, बड़ा ही सज्जन पुरुष था। समाज में उसका बड़ा मान था। बड़े-बड़े लोगों तक उसकी पहुँच थी। देव-मन्दिर के लिये पत्र-पुष्प एक मालिन दे जाती थी। उस मालिन का घर मन्दिर के पास ही था। नित्य प्रातः-काल एवं सन्ध्याकाल को वह एक टोकरी फूल, दो-चार मालाएँ एवं थोड़े से बेलपत्र आदि दे जाती थी। कभी-कभी वह न आ सकती, तो

अपनी त्रयोदशवर्षीय बालिका को भेज देती।

उस दिन सन्ध्याकाल को, जब कि वीरन कोई सौदा खरीदने बाजार गया हुआ था और पुजारी अकेले ही अपनी कोठरी में बैठा हुआ अपनी रुद्राक्ष माला फेर रहा था, मालिन की सुन्दरी बालिका एक छोटी-सी टोकरी में फूल लेकर आई। मालिन की बेटी को देखकर पुजारी के होंठों पर क्रूर मुस्कान दौड़ गई। उसने पुकारा, 'मालिन! इधर भी आना—'

नौजवान मालिन फूलों का टोकरा लिये हुए कोठरी में घुस आई और टोकरा भूमि पर रखकर बोली, 'क्या आज्ञा है पुजारीजी?'

'आज्ञा तो तुम्हारी चाहिये न मालिन? क्योंकि देवता तो तुम्हीं से प्रसन्न रहते हैं।' पुजारी मुस्कराकर बोला और उठकर दरवाज़ा भीतर से बन्द कर लिया। कुछ देर तक तो भीतर से पुजारी और मालिन की बातचीत की आवाज आती रही। मालिन की आवाज तीखी थी, मालूम होता कि उसे पुजारी की हरकतें सख्त नापसन्द हैं। दो मिनट के बाद कोठरी में उठा-पटक एवं चीख की आवाज़ें आने लगीं।

घण्टे-भर बाद कोठरी का दरवाज़ा खुला और क्लांत-मुख लिये मालिन की बेटी बाहर निकली।

बीस

अदा अपने कमरे में सुन्दर पलंग पर सोई हुई है। उसके अंग-प्रत्यंग से यौवन की उद्दीप्त किरणें प्रोद्भासित हो रही हैं। मुख-मंडल क्लान्त होते हुए भी, उसकी सुषुप्तावस्था की सुन्दरता अद्वितीय है। उसके होंठों पर एक मधुर मुस्कान है, जिससे प्रतीत होता है कि वह अपने साजन के सुखद मिलन का स्वप्न देख रही है। कमरे में एक मद्धिम रोशनी का बल्ब जल रहा है।

एकाएक कोठरी का दरवाजा धीरे-धीरे खुला और एक काली

शक्ल ने सर निकालकर अन्दर झांका। जब उसने देखा कि अदा प्रगाढ़ निद्रा के वशीभूत है, तो उसने हाथ उठाकर अपने पीछे की ओर कुछ इशारा किया। उसके इशारा करते ही उस स्थान पर चार नकाबपोश और आ गए और सब नकाबपोश धीरे-धीरे अदा के पलंग की ओर बढ़े। पास जाकर एक नकाबपोश जेब से एक शीशी निकालकर अदा की नाक के पास ले गया और लगभग दो मिनट तक उसे सुंघाता रहा। अदा की साँस और गहरी चलने लगी।

'बेहोश हो गई। उठाकर ले चलो इसे', उस नकाबपोश ने अपने साथियों से कहा। एक नकाबपोश ने बेहोश अदा को उठाकर अपनी पीठ पर लाद लिया और सब उस कोठरी के बाहर हो गये। बाहर की सड़क पर एक मोटर खड़ी थी। सब नकाबपोश उसी मोटर पर जा बैठे। अदा भी एक कोच पर लिटा दी गई। मोटर तेज़ी के साथ दक्खिन की ओर भाग चली।

× × ×

मिर्ज़ापुर शहर से चार मील दक्खिन 'बिकना' नामक ग्राम के पास एक गुप्त जूए का अड्डा था। वहाँ दिन-रात जूआ हुआ करता था। पुलिस ने कई बार उस जूए के अड्डे पर छापा मारा, परन्तु उसे कुछ भी हाथ न लगा। इस जूए के अड्डे वालों का प्रबन्ध इतना सुदृढ़ था कि वहाँ इतना जुआ एवं व्यभिचार होते हुए भी, पुलिस उनका कुछ भी न बिगाड़ सकती थी। इसी जुए के अड्डे में आज हम अपने पाठकों को ले चलेंगे। ना, ना, हिचकिए मत—बेखटके चले आइये।

एक बड़ा-सा लोहे का दरवाज़ा दिखाई दे रहा है, जो भीतर से मज़बूती के साथ बन्द है। इस दरवाज़े में एक छोटी-सी खिड़की भी है। इसी छोटी-सी खिड़की से जुआरी लोग भीतर जाया करते हैं। इस समय दरवाज़े के भीतर की ओर एक चौकी पर एक मोटा-सा काला मनुष्य बैठा है। दरवाज़ा एवं खिड़की—दोनों मजबूती के साथ बन्द हैं। एकाएक बन्द दरवाज़े पर बाहर की ओर से धीमे से तीन दफ़े आघात हुआ, साथ ही भीतर की ओर बैठा हुआ वह मोटा-सा मनुष्य चौंक पड़ा। उसने अपना वज़नी डण्डा हाथ में लिया एवं बगल से लटकते लम्बे छुरे को सम्हाला, तत्पश्चात् धीरे से वह खिड़की खोल दी। खिड़की खोलते ही वह चौंक पड़ा। खिड़की के बाहर इस समय श्री आगर का कारिन्दा खड़ा था। कारिन्दा पर दृष्टि पड़ते ही वह

मनुष्य अदब के साथ बोल उठा, 'हैं ! सरकार आप ?'

'चुप।' कहता हुआ कारिन्दा भीतर घुस आया। उस मोटे मनुष्य ने खिड़की पुनः भीतर से बन्द कर ली।

'पण्डित कहाँ है ?' कारिन्दा ने उस आदमी से पूछा।

'ऊपर उसी लड़की से बातें कर रहे हैं, जो आज रात को आपके हुक्म से पकड़कर लाई गई है। लेकिन सरदार ! वह है बड़ी खूबसूरत,' उस आदमी ने कहा।

'मैं भी वहीं जा रहा हूँ—' कहता हुआ कारिन्दा पूरब की ओर दरवाज़े में घुस गया। एक पतली-सी सुरंग पार करने के पश्चात 'सीढ़ियाँ मिलीं, जो कि गिनती में सौ से कम नहीं थी। कारिन्दा इन्हीं सीढ़ियों द्वारा चढ़कर एक छोटी-सी सजी हुई कोठरी में जा पहुँचा। बीच में इसे कई पहरेदार मिले, परन्तु इसे देखते ही अदब के साथ सलाम कर पीछे हट गये। उस मेज़ के पास कुर्सी पर अदा बैठी हुई थी और उसके सामने ही कुर्सी पर एक लम्बा-चौड़ा मनुष्य बैठा था। ज्यों ही कारिन्दा ने उस कमरे में प्रवेश किया, अदा चौंक पड़ी। वह उसे एक बार पहले भी देख चुकी थी और आज उसे इस प्रकार जुए के अड्डे में देखकर उसके आश्चर्य का पारावार न रहा।

'क्या हुआ पण्डित ? यह छोकरी रास्ते पर आ रही है या नहीं ?' कारिन्दा ने उस लम्बे-चौड़े मनुष्य से पूछा।

'नहीं सरकार। यह किसी तरह भी राज़ी नहीं होती,' उस मनुष्य ने उत्तर दिया।

'अच्छा तुम जाओ—'

वह मनुष्य कमरे से बाहर चला गया। कारिन्दा आकर अदा की कुर्सी के बाजू पर बैठ गया और उसकी जुल्फ़ों पर प्यार से हाथ फेरता हुआ बोला, 'नादान छोकरी ! यहाँ तुझे डरने की कोई जरूरत नहीं। मज़े में रह और ऐश कर।'

मगर मुझे यहाँ लाया कौन है ?' अदा ने पूछा।

'तुझे यहाँ लाने वाला स्वयं मैं हूँ,' कारिन्दा बोला, 'मेरे ही हुक्म से तू यहाँ लाई गई है। मैं ही इस जूए के अड्डे का प्रधान सरदार हूँ। तू यहाँ आ गई है तो तुझे किसी बात की तकलीफ़ न होगी। तू इस अड्डे में स्वच्छंद विचरण करेगी। हाँ इस अड्डे से बाहर जाने की मुमानियत न रहेगी। तू यहाँ रहकर नाच और गाने से जुआरियों का

मनोरंजन करना एवं उनके रुपये ऐंठना। यही तेरा काम होगा। यदि तू इस कार्य को बखूबी कर सकेगी, तो तुझे हम लोग इस अड्डे की रानी बनाकर रखेंगे, नहीं तो···इधर देख यह रिवाल्वर; और दो मिनट में मुझे 'हाँ' या 'ना' का जवाब दे।

लाचार अदा को कारिन्दा की बात माननी ही पड़ी। कारिन्दा अतीव प्रसन्न हुआ और बोला, 'तुम बड़ी अच्छी हो अदा। लो मैं तुम्हें स्वतन्त्र कर देता हूँ। तुम इस अड्डे में चाहे जहाँ घूम सकती हो, कोई तुम्हें न छेड़ेगा। यदि कोई आदमी तुम्हें किसी किस्म की छेड़छाड़ करे, तो तुम फौरन खबर कर देना, मैं उससे समझ लूँगा।'

इतना कहकर कारिन्दा उसे लिए हुए एक हरे-हरे बाग में पहुँचा और बोला, 'लो यह सारा बाग तुम्हारा है। तुम इस बाग की रानी हो, मेरी रानी!' कहते हुए दुष्ट कारिन्दा ने बलपूर्वक अदा का मुँह चूम लिया और झपटता हुआ एक ओर को चला गया। अदा भी चुपके-चुपके उसके पीछे चलने लगी। कई दालानें पार करने के पश्चात् कारिन्दा एक कोठरी के सामने पहुँचा और उस कोठरी में घुसकर भीतर से किवाड़ बन्द कर लिये। वही उस पण्डित के रहने का कमरा था, जिससे पाठक ऊपर परिचित हो चुके हैं। इस समय पण्डित अपने कमरे में मौजूद था। कारिन्दा आकर उसके पास बैठ गया। अदा भी कमरे के पास आ गई और बाहर दरवाज़े से कान लगाकर भीतर की बातचीत सुनने लगी। कारिन्दा कह रहा था, 'वह राज़ी हो गई पण्डित। अब हमारा सब काम ठीक हो गया ···आज से चार साल पहले कुन्दन कुमार को अपने जाल से फंसाकर घर से निकलवा ही चुका हूँ। अब रह गये हैं श्री आगर! मैंने उस बुड्ढे को मारने की बहुत कोशिश की, परन्तु एक भी कारगर न हुई। अब सोच रहा हूँ कि उसे बहकाकर यहाँ लाऊँ और उसे डरा-धमकाकर वसीयत-नामा अपने नाम लिखा लूँ एवं किसी चालबाज़ी से उसे मारकर गाड़ दूँ। बस उसकी सारी ज़मींदारी पर मेरा कब्ज़ा हो जाएगा और बहुत दिनों से मेरे हृदय में धधकती हुई प्रबल आकांक्षा सफलीभूत हो जाएंगी।

इतना सुनते ही अदा पर वज्र गिर पड़ा। उफ़! ये दुष्ट श्री आगर की हत्या करने का प्रयत्न कर रहे हैं। अवश्य उन्हें बचाना चाहिए।

× × ×

'चार साल से बराबर चिन्तानल में जल रहा हूँ। जब से वह चला गया है, तभी से मैं बराबर रोया करता हूँ। मेरे हृदय में सदैव पुत्र-प्रेम लहरें मारता रहता है। उस समय मैंने उसकी दुश्चरित्रता देखकर उसे घर से निकाल दिया था, परन्तु अब समझ गया कि बिना उसके मेरा जीवन बेकार है। वह अच्छा था या बुरा, चरित्रवान था या दुश्चरित्र, परन्तु था तो मेरा बेटा ही। उसे मैंने ठुकराकर महान अन्याय किया है। वह जहाँ कहीं हो, तुम उसे लाकर मेरे पास बिठा दो। मैं अब उसके बिना नहीं रह सकता,' श्री आगर ने दीनतापूर्वक अपने कारिन्दा से कहा, जो उनके सामने ही बैठा हुआ था।

'इसी बात की खुशखबरी तो मैं आपको देने आया हूँ सरकार?' —कारिन्दा कहने लगा, जब छोटे सरकार घर से निकल गए हैं, तभी से मैं उनकी बराबर खोज कर रहा हूँ और मेरी यह खोज सफलीभूत हुई है।'

'क्या कहा? क्या तुम्हें उसका पता लग चुका है?'

'जी सरकार! लेकिन उनकी चरित्रभ्रष्टता पहले से भी शोचनीय हो गई है,' कारिन्दे ने कहा।

'कोई हर्ज नहीं'—श्री आगर बोले, 'वह कितना भी नीच हो गया हो, कितना भी चरित्रभ्रष्ट हो गया हो, परन्तु मैं उसे यहाँ जरूर लाऊँगा और उससे क्षमा माँग कर अपने कलेजे के साथ सटा कर रखूँगा। तुम मुझे बताओ कि वह कहाँ है?'

'बिकना नामक ग्राम में एक जुए का अड्डा है! छोटे सरकार इधर एक हफ्ते से बराबर जुआ खेलने आते हैं। यदि आप कल चार बजे मेरे साथ चलें, तो उनसे अवश्य भेंट हो जायेगी,' कारिन्दा बोला और भोले-भाले श्री आगर तैयार हो गए।

× × ×

एक बड़ा-सा सजा हुआ हॉल (बड़ा कमरा) है। चारों ओर चमकदार पालिश की हुई सैकड़ों मेजें रखी हुई हैं, जिनके चारों ओर बैठे हुए जुआरी लोग अपने-अपने दाँव लगा रहे हैं। इस जुए के अड्डे में आधुनिक रीति से जुआ होता है और यहाँ साज-सजावट भी आधुनिक है। जिस प्रकार बड़े-बड़े शहरों में आलीशान जुए के अड्डे देखने में आते हैं, मिर्जापुर के बिकना नामक ग्राम का यह अड्डा भी

ठीक वैसा ही है। मेजों पर बैठकर जुआ होता, शराब उड़ती एवं नाच-गाने का लुत्फ़ आता। हॉल के बीचों-बीच संगमरमर का एक ऊँचा-सा गोल चबूतरा है इस समय अदा इसी चबूतरे पर चमकीली पोशाक पहने हुए खड़ी गा रही है। बीच-बीच में जब वह अपनी नाजुक कमर पर बल देकर ठुमक-ठुमक कर नाचने लगती है तो जुआरीगण अनायास ही 'वाह मेरी जान' कह उठते हैं। सभी जुआरी शराब पीते हुए एवं जुआ खेलते हुए अदा की मधुर स्वर-रागिनी का आनन्द ले रहे थे। अदा गा रही थी —

दर्द उल्फत से कहो, दिल से न जाना हरगिज़।
फिर मिलेगा न तुझे ऐसा ठिकाना हरगिज़।।
आओ मिल जाओ कि मिलने के यही दिन-सिन हैं,
फिर न आयेगा, पलट कर ये ज़माना हरगिज़।।

'वाह-वाह मेरी रानी !' सब जुआरी एक स्वर में चिल्ला उठे। अदा बल खाती हुई चबूतरे से नीचे उतरी और जुआरियों के बीच में इठलाती हुई नाचने लगी। मनुष्य को प्रसन्न रखना वह खूब जानती थी, क्योंकि 'ब्यूटी होटल' में वह यही काम किया करती थी। एक मेज़ के पास एक खूबसूरत-सा अमीर नौजवान बैठा हुआ जुआ खेल रहा था। वह आज पहले-पहल ही आया था और एक घण्टे में ही कई सौ रुपए जीत गया था। अदा नाचती हुई उस नौजवान के पास जाकर खड़ी हो गई परन्तु वह नौजवान खेलने में इतना मशगल था कि अदा का ओर देखा तक नहीं। अदा उसकी कुर्सी की बाजू पर बैठ गई और ठुड्डी पकड़कर उसका मुँह अपनी ओर घुमाकर एवं अजीब अन्दाज़ से मुस्कराकर गाने लगी—

इक नज़र देख ही लेता तो तेरा क्या जाता ?
दिले बिस्मिल को तड़पने का मज़ा आ जाता।
इसलिए हमने नज़र तुम पै नहीं डाली है—
इक इशारे में मरने का मजा आ जाता।।

'वाह-वाह मेरी तितली !'—वह नौजवान अदा के शोखी-भरे गाने से इतना प्रसन्न हुआ कि अपनी कुर्सी छोड़कर उठ खड़ा हुआ और पाकेट से नोटों का एक बंडल निकालकर अदा की मुट्ठी में ठूँस दिया। उसके जीते हुए सब रुपये अदा के पास चले आये। दुष्ट कारिन्दे ने अदा को यही काम सौंपा था और अदा को भी उसकी निष्ठुरता का

पूरा ज्ञान था।
अड्डे के दरवाजे पर बाहर से किसी ने आघात किया, साथ ही भीतर बैठा हुआ वह मोटा-सा मनुष्य जिसके ज़िम्मे दरवाज़े की रखवाली का काम था, उठ खड़ा हुआ और एक हाथ में लाठी लेकर दूसरे हाथ से वह छोटी-सी खिड़की खोल दी। खिड़की की राह श्री आगर एवं कारिन्दे ने वहाँ प्रवेश किया। कारिन्दा ने एक आँख दबाकर उस मोटे मनुष्य से कुछ इशारा किया। इशारा पाकर वह मनुष्य वहाँ से चला गया। कारिन्दा भी श्री आगर को लेकर 'हाल' की ओर रवाना हुआ, जहाँ इस समय जुए का बाजार गर्म था। 'हाल' में पहुँचते ही श्री आगर आश्चर्यचकित हो उठे। वहाँ की आधुनिक ढंग की सजावट देखते ही उनके आश्चर्य का पारावार न रहा। इधर से घूमती हुई उनकी दृष्टि 'अदा' पर जाकर रुक गई, जो अजीब नाज़ से नाचती हुई इधर-से-उधर ठुमक रही थी।
'यही छोकरी है, जिसे हमारे सरकार बम्बई से लाये थे, जिसके बारे में मैं आपसे कह चुका हूँ। आजकल इसे अड्डे वाले पकड़ लाये हैं, और यह यहाँ रहकर जुआरियों का मनोरंजन करती है,' कारिन्दे ने श्री आगर से कहा।
एकाएक अदा की दृष्टि भी उस ओर जा पहुँची, जिधर श्री आगर और कारिन्दा खड़े थे। श्री आगर को देखते ही अदा चौंक पड़ी। यद्यपि उसने कभी श्री आगर को देखा न था, फिर भी वह रग-ढंग से समझ गई कि यही कुमार के पिता हैं और दुष्ट कारिन्दा उन्हें कत्ल करने के लिये ही यहाँ लाया है।
'कुन्दन तो नहीं दीख पड़ता ?' श्री आगर ने कारिन्दे से पूछा।
'वे अभी नहीं आए हैं सरकार ! चलिये किसी कोठरी में बैठा जाय, नहीं तो यहाँ आपको देखकर वे उल्टे पाँव लौट जायेंगे।' कारिन्दे ने कहा और श्री आगर को लेकर एक कोठरी की ओर चल पड़ा। कोठरी में इस समय पण्डित मौजूद था। कारिन्दा ने पण्डित से कहा, 'पण्डित! हम लोग ऊपर जा रहे हैं। तुम भी साथ चलो।'
पण्डित, कारिन्दा एवं श्री आगर, तीनों आदमी सीढ़ियों द्वारा अड्डे की सबसे ऊँची छत पर जा पहुँचे। इस खुली छत पर से दूर-दूर का दृश्य दिखाई पड़ रहा था। छत पर एक छोटी-सी कोठरी थी, जिसका जंगलादार दरवाज़ा इस समय खुला हुआ था। यह कोठरी

इतनी छोटी थी कि उसमें मुश्किल से आठ आदमी बैठ सकते थे। तीनों जने कोठरी के सामने आकर रुक गए।

'देखिये सरकार!' कारिन्दा कहने लगा, 'यह कोठरी भी विचित्र ही है। चलिये, अन्दर चलकर देखिये।'

श्री आगर कौतूहलवश कोठरी के अन्दर चले। उनके जाते ही कारिन्दा ने दरवाज़े के बगल में लगा हुआ एक बटन दबा दिया, साथ ही उस कोठरी का जंगलेदार दरवाज़ा अपने-आप ही बन्द हो गया। श्री आगर ने आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से कारिन्दा एवं पण्डित की ओर देखा, जो कोठरी के बाहर खड़े हँस रहे थे।

'यह क्या?' श्री आगर ने पूछा।

'अब आप हमारे कैदी हैं,' पण्डित ने उत्तर दिया।

'क्या कहा? कैदी!' श्री आगर क्रोध से बोले।

'अब क्रोध करने से कुछ नहीं होगा सरकार! इस समय आप पूर्णतया हमारे चंगुल में आ गए हैं। अब हमारे कथनानुसार चलने में ही आपकी खैरियत है,' कारिन्दे ने एक क्रूर हँसी हँसकर कहा।

'मनुष्य के वेश में शैतान! आज तेरी पोल खुली। समझ गया मेरी तबाही का कारण तू ही है। तूने ही मुझे बरबाद किया, तूने ही मेरी बुद्धि पर पत्थर रख दिया, पाजी, शैतान!'

'सरकार! गुस्से में न काँपिए। ज़रा कोठरी की उत्तर और दक्षिण की दीवालों पर गौर कीजिए,' कारिन्दे ने कहा।

श्री आगर की दृष्टि उत्तर और दक्खिन की दीवालों की ओर गई। उधर देखते ही वे काँप उठे। उन्होंने देखा कि उत्तर और दक्खिन दोनों ओर की दीवालों में, दो-दो इंच की दूरी पर, सैकड़ों हाथ-भर लम्बे छुरे गड़े हैं, जिनकी विकराल नोकें उन्हीं के शरीर की ओर हैं, मानो उनके शरीर में घुसने के लिए तैयार हों। श्री आगर भय से चीख उठे, 'उफ! इन दुष्टों ने उन्हें कैसी भयानक कोठरी में कैद कर रखा है।'

'सरकार! जरा और गौर से छुरे वाली दीवालों को देखिए।' कहकर कारिन्दा ने एक दूसरे बटन पर अंगुली रखकर दबा दिया। श्री आगर की दृष्टि बराबर उत्तर और दक्खिन की ओर दीवालों एवं उगे हुए विकराल छुरों की ओर थी। कारिन्दा के बटन दबाते ही एकाएक उन दीवालों में हरकत पैदा हुई और उस समय तो श्री आगर

के मुख से ज़ोरों की एक चीख निकल पड़ी, जबकि उन्होंने छुरों वाली उन दीवालों को धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ते तथा उन विकराल छुरों को क्रमशः अपने पास आते देखा।

'सरकार ! ये दीवालें इसी तरह धीरे-धीरे आगे बढ़ती हुई कुछ देर में एकदम आपस में सट जायेंगी और उन्हीं के बीच में रहकर आप विकराल छुरों के शरीर में धंसने का आनन्द लूटेंगे,' कहकर कारिन्दा और पण्डित दोनों हँसने लगे।

'दुष्टो ! तुम लोग क्यों मेरी हत्या करना चाहते हो ?'

कारिन्दा ने एक टुकड़ा सादा कागज और एक फाउन्टेनपेन जंगले के भीतर फेंक दिया और बोला, 'इस कागज़ पर अपनी जायदाद का वसीयतनामा मेरे नाम लिख दीजिए, तब हम आपकी जान छोड़ देंगे अन्यथा आप इसी तरह दुर्दशा की मृत्यु को प्राप्त होंगे।'

'उफ़ शैतान ! तू यह सब क्या गज़ब ढा रहा है ?' श्री आगर ने हताश वाणा में कहा। छुरों वाली दीवालें बराबर आगे की ओर बढ़ी आ रही थीं और उनके बीच में खड़े हुए श्री आगर भय से काँप रहे थे। इस समय जीवन और मृत्यु में भयानक युद्ध छिड़ा हुआ था। श्री आगर के सामने मृत्यु की भीषण प्रतिमा नाच रही थी। अन्त में वे बोले, 'मैं तैयार हूँ। इन छुरों को रोक दो।'

कहने को तो श्री आगर बहुत ही सीधी वाणी से यह सब कह गये, परन्तु इस समय उनकी अन्तरात्मा पर जो कुछ हो रहा था, उसे वे ही जानते थे। उफ ! वही कारिन्दा, जिसे उन्होंने अपने सगे का-सा प्यार किया था और जिस पर विश्वास कर उन्होंने ज़मींदारी का सब काम सौंप दिया था, अन्त में काला नाग निकला। जिस पर उन्हें अथाह विश्वास था, वही विश्वासघाती साबित हुआ। ओह ! दुनिया भी कैसी छलना है ?

कारिन्दा ने पुनः एक बटन दबा दिया, जिससे छुरों का आगे बढ़ना रुक गया। कारिन्दा बोला, 'कागज़ उठाकर, जल्द वसीयतनामा लिख दीजिये। श्री आगर ने कांपते हुए हाथों से कागज़ और कलम उठा ली और उस पर लगभग १५ मिनटों तक न जाने क्या-क्या लिखते रहे। इसके बाद उन्होंने वह कागज़ कारिन्दा के हाथ में दे दिया। कारिन्दा ने वह कागज़ लेकर पढ़ा और उसे सब तरह से ठीक पाकर एक क्रूर हँसी हँसा तत्पश्चात् बोला, 'बेवकूफ बुड्ढे ! तूने सोचा होगा कि वसीयत-

नामा लिख देने पर तुझे छोड़ दूँगा, परन्तु यह तेरी गलती है। इधर देख !' कारिन्दा ने पुनः पहले वाला बटन दबा दिया और छुरों वाली दीवालें धीरे-धीरे आगे को बढ़ने लगीं।

'झूठा ! दगाबाज़ ! !' श्री आगर चिल्लाकर बोले। कारिन्दा ठठाकार हँस पड़ा।

'बस जहाँ हो वहीं खड़े रहना। अगर किसी ने ज़रा भी जुम्बिश खाई, तो उसकी लाश ज़मीन पर नज़रआयेगी', पीछे से आवाज़ आई। कारिन्दा और पण्डित ने चौंककर पीछे की ओर देखा। देखा, बीच छत पर अदा एक भयंकर रिवाल्वर लिए खड़ी है, जिसकी नली उन्हीं दोनों की ओर है।

'कौन, अदा ?' कारिन्दा दांत पीसकर बोला।

'अदा !' पण्डित ने क्रोधित स्वर में कहा।

अदा धीरे-धीरे इनके पास आ गई और कारिन्दा से कड़े स्वर में बोली, 'नीच ! तुझे अपने मालिक के साथ दगा करते हुए शर्म नहीं आई ! शैतान कहीं का।'

'अदा ! मैंने नहीं सोचा था कि तू काली नागिन ...'

'काली नागिन ? हाँ-हाँ !' अदा बोली, उसके रिवाल्वर की नली कारिन्दा और पण्डित की ओर थी, 'कारिन्दा साहब ! वह वसीयत-नामा जल्द-से-जल्द मेरे हवाले करो।'

कारिन्दा ने आनाकानी की और अदा की अंगुली रिवाल्वर के घोड़े पर जा पड़ी। लाचार कारिन्दा ने वसीयतनामा निकालकर अदा को दे दिया।

'चले जाओ ! दग़ाबाज़ो ! 'अदा ने कहा और कारिन्दा एवं पण्डित डरते हुए नीचे चले गए। अदा कोठरी के दरवाज़े की ओर बढ़ी। छुरों की नोकें अब भी श्री आगर से केवल चार इंच की दूरी पर थीं। अदा ने आगे हाथ बढ़ाकर बटन दबा दिया। वे दीवालें पुनः पीछे की ओर लौटने लगीं। अदा ने दरवाज़ा खोला और अन्दर जाकर श्री आगर के पैरों पर गिर पड़ी। श्री आगर ने उसे उठाया और प्रेम-भरे गद्गद स्वर में बोले, 'तुम देवी हो अदा ! मुझे क्षमा करना। मैंने तुम्हें कुलटा समझा था न।'

'अभी तक हम लोग सुरक्षित नहीं हैं बाबूजी ! दुष्ट कारिन्दा और पण्डित नीचे गए हैं, अब दलबल के साथ आते ही होंगे। अब हमें अपनी

रक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए। यह लीजिए, मेरे पास दो रिवाल्वर हैं, एक आप ले लीजिए और वक्त आने पर उसे इस्तेमाल कीजिए। हमें सिर्फ दस मिनट तक अपनी रक्षा करनी होगी, इसके बाद हमारी रक्षा करने के लिए पुलिस आ पहुँचेगी। मैंने यहाँ एक नौकर को अपनी ओर मिलाकर पुलिस को खबर कर दी है।'

'ओह! तुमने मुझे बचा लिया बेटी!' श्री आगर ने कहा। उनकी आँखें छलछला आईं। इसी समय सीढ़ी की ओर से धमधमाहट की आवाज़ आई। अदा बोली, 'वे सब आ रहे हैं बाबूजी आप तैयार रहें।'

अदा और श्री आगर ने अपना-अपना रिवाल्वर हाथ में ले लिया। इसी समय सीढ़ी के ऊपर एक आदमी बड़ा-सा लट्ठ लिए दिखाई पड़ा। धाँय! अदा का रिवाल्वर गरज उठा और वह आदमी कटे वृक्ष की तरह सीढ़ी से नीचे जा गिरा, साथ ही श्री आगर के मुँह से प्रशंसा सूचक 'वाह' निकल पड़ा। दूसरा मनुष्य दिखाई पड़ा और उसे श्री आगर ने अपना निशाना बनाया। इसी प्रकार कई आदमी जान से मार डाले गये। लेकिन बहुत से आदमी ऊपर भी चढ़ आए थे, जो अदा और श्री आगर की ओर तेजी से बढ़े आ रहे थे। अदा और श्री आगर के रिवाल्वर धुआँ उगल रहे थे, फिर भी शत्रुओं की संख्या अधिक थी।

'कार्टिजेज तो खत्म हो गए, अब?' अदा ने हताश आवाज़ में कहा। यकायक उन आदमियों में खलबली मची। नीचे से कोई चिल्ला रहा था, पुलिस आ गई। भागो, यह आवाज़ कान में पड़ते ही सब आदमी नीचे की ओर भागे और एक क्षण में छत सूनी हो गई। केवल श्री आगर और अदा वहाँ रह गये।

लगभग पाँच मिनट के बाद सीढ़ियों पर से पुनः धमधमाहट की आवाज़ आई और दूसरे ही क्षण वहाँ पच्चीसों हथियारबन्द सिपाही एक इन्स्पेक्टर के साथ आ पहुँचे। इन्स्पेक्टर ने श्री आगर को देखकर सम्मान-प्रदर्शन के लिए फौजी सलाम किया और बोला, 'आपकी जान बच गई, शुक्र है। खबर पाकर हम लोग अभी-अभी दौड़े चले आ रहे हैं। मगर सब जुआरी कहाँ गए?'

'नीचे होंगे'—

'नहीं, वहाँ तो एक आदमी भी नहीं है,' इन्स्पेक्टर बोला। इसके बाद सबों ने मिलकर उस बड़े मकान का कोना-कोना छान डाला, परन्तु

कहीं किसी का पता न चला, न जाने सब जुआरी क्या हो गये ?

'ज़मींदार साहब !' इन्स्पेक्टर श्री आगर से कहने लगा, 'हम लोग इसी प्रकार इस अड्डे पर कई बार हमला कर चुके हैं, परन्तु हमें हर बार निराशा ही हाथ लगी है। न जाने सब शैतान किधर चले जाते हैं ?'

'ओह समझ गई,' अदा यकायक बोली, 'आप लोग कृपा कर मेरे साथ आइए।'

अदा सबको लेकर 'हाल' में आई, जहाँ सब जुआरी बैठकर जूआ खेला करते थे। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि 'हाल' के बीचोंबीच संगमरमर का एक ऊँचा-सा गोल चबूतरा बना हुआ था, जिस पर अदा खड़ी होकर नाचती-गाती थी। अदा इसी चबूतरे के पास आई और सबको उस चबूतरे पर चढ़ जाने का इशारा किया। वह गोल चबूतरा चार फीट ऊँचा था और इतना लम्बा-चौड़ा था कि उस पर पच्चीस-तीस आदमी आसानी से बैठ सकें। श्री आगर, इन्स्पेक्टर, अदा एवं सब सिपाही आकर उस चबूतरे पर बैठ गए। अदा ने चबूतरे के बगल में हाथ डालकर कोई खटका दबा दिया। खटका दबाते ही चबूतरे में कम्पन पैदा हुआ और यह देखकर सबके हर्ष का पारावार न रहा कि वह गोल चबूतरा, कुम्हार की चाक की तरह अपनी जगह पर धीरे-धीरे घूम रहा है।

एक मिनट तक घूमते रहने के बाद वह चबूतरा उसी प्रकार घूमता हुआ ज़मीन के अन्दर धँसने लगा। दो फीट, चार फीट, यहाँ तक कि धँसते-धँसते वह पचासों फीट नीचे आकर तब रुका। उसके रुकते ही, सब नीचे उतर पड़े। वह चबूतरा घूमता हुआ पुनः ऊपर को चढ़ गया। जिस जगह ये लोग खड़े थे, उस जगह घना अन्धेरा था, परन्तु रोशनी की एक पतली लकीर उस दरवाज़े से आ रही थी जो दक्खिन की ओर पड़ता था। सब लोग इसी दरवाज़े के सामने आकर खड़े हो गए। दरवाजे के पल्ले थोड़े से खुले थे, जिससे भीतर का सब हाल दिखाई पड़ रहा था। सबने देखा कि उस कोठरी के भीतर सब जुआरी बैठे हुए आपस में न जाने क्या विचार कर रहे हैं। सिपाही भीतर घुस गये और पलक-भर में सब जुआरी, कारिन्दा, पण्डित आदि गिरफ़्तार कर लिए गये।

× × ×

सब जुआरियों पर मुकदमा चला और किसी को साल-भर, किसी को छः महीने की सजा हुई। कारिन्दा को जुए का अड्डा कायम करने एवं श्री आगर को धोखा देने के जुर्म में चार साल की सजा हुई। सब अभियुक्त जेल भेज दिए गये। यद्यपि दुष्ट कारिन्दा ने श्री आगर के साथ विश्वासघात किया था फिर भी उसे जेल जाते हुए देखकर सरल हृदय श्री आगर का दिल पसीज उठा। कारिन्दा को वे बहुत मानते थे, अतः उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि कारिन्दा को अवश्य बचायेंगे। उन्होंने बुराई का बदला भलाई द्वारा देने का निश्चय किया। दूसरों का सर झुकाने के लिए यही तो अस्त्र है।

श्री आगर ने कारिन्दा के लिये पानी की तरह रुपया बहाया और हाईकोर्ट में अपील कर उसे बेलाग छुड़ा लिया। कारिन्दा जेल से छूटा और श्री आगर के पैरों में गिर पड़ा।

श्री आगर ने केवल इतना ही कहा, 'नादान ! मैं तुझे अपने बेटे की तरह चाहता था और इसलिए तुझे जेल से रिहाई दिलाई। तूने मेरे साथ बुराई की और मैंने तेरे साथ भलाई। इसका फल तुझे ईश्वर देगा।'

'स्वामी। मुझे क्षमा कीजिए। मैं अधम हूँ, नीच हूँ, पतित हूँ,' कारिन्दा बच्चों की तरह रो पड़ा।

'तुझे ईश्वर क्षमा करेगा। अपराधियों को क्षमा करने का मुझे अधिकार ही कहाँ ? अब तू यहाँ रहकर मुझे अधिक दुःख न दे। जा, चला जा यहाँ से। जन्म-भर मुझे मुँह न दिखाना,' श्री आगर बोले।

× × ×

अदा भी श्री आगर के साथ रहकर उन्हें धैर्य बँधाने लगी। श्री आगर कुन्दन कुमार के लिए रोते, विलाप करते और अदा उन्हें समझाती। कहती, 'बाबूजी। वे चले गये हैं, लेकिन कभी-न-कभी जरूर आवेंगे। आप धैर्य रखें।'

श्री आगर कहते, 'बेटी ! मैंने तेरे कुन्दन के साथ बड़ा अन्याय किया है, उसी का फल भोग रहा हूँ। न रात को नींद आती है न दिन को चैन पड़ता है। न जाने इस दुःख का कब अंत होगा।'

श्री आगर इसी प्रकार रोते हुए अपने दिवस व्यतीत कर रहे थे। अदा उन्हें बहुत समझाती, परन्तु उनका सन्तप्त हृदय कभी शांत न होता।

इक्कीस

देवमन्दिर के एक छोटे से कमरे में सोये हुए बीरन की एकाएक नींद खुल गई। उसके कानों में किसी प्रकार के खटके की आवाज़ आई थी। वह चारपाई पर उठकर बैठ गया और उस आवाज़ पर गौर करने लगा। थोड़ी ही देर में किसी बछड़े के चिल्लाने की दर्दनाक आवाज़ आई और यह देखकर बीरन को महान् आश्चर्य हुआ कि इसी आधी रात के समय बछड़े की यह दर्दनाक आवाज़ ठीक उसी कमरे से आ रही है जिसमें देवता स्थापित हैं।

बीरन ने अपनी लाठी उठाई और देवता के कमरे की ओर बढ़ चला। उस कमरे में इस समय मामूली रोशनी हो रही था। उसने दरवाज़े के पास जाकर दरार से भीतर की ओर देखा, साथ ही उस पर वज्र गिर पड़ा। वह वहाँ खड़ा न रह सका और उल्टे पाँव आकर चारपाई पर धम्म से बैठ गया। वह सोचने लगा, उफ! यह पुजारी है या राक्षस।

× × ×

बम्बई में प्रातःकाल ही दंगा हो गया और हुआ बहुत ही भयंकर रूप से। दंगे का कारण यह था कि प्रातःकाल ही अलविश मस्जिद में सूअर का माँस पड़ा हुआ मिला, तुरन्त ही मुसलमानों को शक हिन्दुओं की ओर गया। सिवा हिन्दुओं के औरकौन उनकी मस्जिद में सूअर का माँस फेंक सकता है?

इधर 'देवमन्दिर' में भी ऐसी ही घटना घटी। प्रातःकाल जब दर्शनार्थी मन्दिर में गये, तो देखा कि देवता के पास ही बछड़े का माँस फेंका हुआ है। बस हिन्दुओं की भी त्यौरियाँ चढ़ गईं। ओह! मुसलमानों की यह मजाल, कि वे हमारे पवित्र मन्दिर में बछड़े का माँस फेंके?

बस इसी कारण हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये। थोड़ी ही देर में दंगे की प्रबलता बहुत बढ़ गई। हिंदू एवं मुसलमानों के झुण्ड-के-झुण्ड इधर-उधर मार-काट मचाते हुए घूमने लगे। खून का बाजार गर्म हो उठा। परन्तु हिन्दू और मुसलमान दोनों में से कोई भी यह न जान सका कि इस दंगे के पीछे कैसी भीषण शक्ति का हाथ है। हिन्दू जो कि दूसरे ही दिन होली का पर्व मनाने की तैयारी

कर रहे थे, अब दंगे में पिल पड़े और देखते-ही-देखते दंगे का रूप भयंकर हो चला।

दंगे की खबर बीरन के कानों में भी पहुँची। वह तुरन्त ही पुजारी के पास दौड़ा। पुजारी उस समय अपने कमरे में बैठा, माला जप रहा था। बीरन आकर उसके सामने खड़ा हो गया और बोला, 'इस माला को फेंककर कसाई का काम कीजिए पुजारी जी !'

पुजारी यह बात सुनते ही चौंक पड़ा। कहने लगा, 'बात क्या है बीरन ?'

'बात यह है पुजारी जी !' बीरन ने कहा, कि मैं आज आधी रात की सब घटनाएँ देख चुका हूँ। बछड़े के सर पर छुरी फेरते हुए मैंने स्वयं आपको देखा था। बछड़े की वह दर्दनाक आवाज़ अभी तक मेरे कानों में गूँज रही है। मैं जान गया हूँ कि मन्दिर में बछड़े का माँस आप ही ने रखा है और इस दंगे के पीछे आपका हाथ विशेष रूप से है। लेकिन यह सब किया ही क्यों ?'

एकाएक पुजारी की आकृति गम्भीर हो गई। वह बोला, 'बीरन ! तुम सब जान चुके हो। अतः तुमसे छिपाना ठीक नहीं। इस दंगे के पीछे एक भीषण शक्ति का हाथ है। उसी शक्ति ने मुझे और अलविदा मस्जिद के मौलाना को मिलाकर, हम लोगों की सहायता से दंगा कराया है। दंगा कराने का उद्देश्य बहुत गुप्त है, लेकिन मैं तुम पर पूर्ण विश्वास करता हूँ, अतः तुमसे बताने में कोई हर्ज नहीं। सुनो...' इतना कहकर पुजारी ने बीरन के कान में न जाने क्या कहा ! सुनते ही बीरन चौंक पड़ा। थोड़ी देर बाद बोला, 'चाहे जो कुछ हो। अब मैं इस पाप-भूमि में एक क्षण के लिए भी नहीं ठहर सकता।'

'आखिर तुम जाना कहाँ चाहते हो ?'

'मैं अपने घर जाऊँगा। कल होली है। मेरी स्त्री मेरी बाट जोहती होगी।' बीरन बोला, 'लेकिन पुजारीजी ! मैंने स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि देव-मन्दिर का पुजारी राक्षस होगा।'

'इस समय परिस्थिति भयंकर है। तुम्हारा बाहर जाना ठीक नहीं।'

'मैं अवश्य बाहर जाऊँगा और लोगों को बताऊँगा कि देखो, इस दंगे के पीछे कैसा भीषण इतिहास है।' कहता हुआ बीरन दौड़कर मन्दिर से बाहर निकल गया। सड़क पर आते ही उसे झुण्ड-के-झुण्ड

मनुष्य भागे हुए आते दीख पड़े। चारों ओर से 'जय अम्बा जय काली' की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। कहीं-कहीं से 'अल्ला हो अकबर' की आवाज़ भी आ जाती थी। बीरन बढ़ चला शहर की ओर। वह चिल्लाता जा रहा था—'भाइयो! भ्रम में पड़कर भाई-भाई का खून न बहाओ! मेरी सुनो···।'

उसी समय सब मुसलमान चिल्ला उठे—'पकड़ो! काफिर जाने न पावे।'—दूसरे ही क्षण बीरन को चारों ओर से मुसलमानों ने घेर लिया। अब बीरन की तन्द्रा भंग हुई। वह गरजकर बोला, 'बुजदिलो! क्यों झूठी धर्मान्धता में पड़कर भाई-भाई का खून बहा रहे हो? हिन्दू मुसलमान दोनों ही भारत माता की सन्तान हैं—दोनों ही इस पवित्र भूमि में पले हैं।'

'बस-बस! यह नसीहत यहाँ न चलेगी।' मुसलमान बोले।

'तुम लोग मुझसे चाहते क्या हो?' बीरन ने पूछा।

'तुम्हारा खून!' एक बोला।

'तुम्हारा कलेजा!' दूसरे ने कहा।

'तुम लोग मेरा खून चाहते हो।' बीरन बोला, 'भाई होकर भाई का कलेजा चाहते हो? अच्छा तो लो!' कहकर बीरन विद्युत-वेग से सामने वाले मुसलमान पर टूट पड़ा और उसके हाथ की लम्बी लाठी छीन ली। तुरन्त ही बीरन के हाथ की वह लाठी तड़प-तड़पकर यवनों के सर पर बरसने लगीं। मारकाट का बाजार गर्म हो उठा। परन्तु मुसलमानों की उस अपार भीड़ के आगे अकेला बीरन कब तक ठहरता? अन्त में वह, हाथ में लाठी लिए हुए ही एक ओर को भाग चला और पास ही के एक मन्दिर में घुसकर अन्दर से किवाड़ बन्दकर लिये। परन्तु ज्योंही उसकी दृष्टि मन्दिर के आँगन की ओर गई, उसने देखा कि छः हिन्दू गुण्डों ने एक मुसलमान स्त्री को जमीन पर पटककर निर्वस्त्र कर डाला है, और एक उसे बेइज्जत करना ही चाहता है। बीरन लाठी सम्भालकर उन गुण्डों की ओर बढ़ा और बोला, 'तुम्हें अपनी माँ-बहनों पर दुराचार करते हुए शर्म नहीं आती?'

परन्तु गुण्डों ने उसकी एक न सुनी और उसे ढकेककर अपना कुकृत्य करने को तैयार हो गये। दूसरे क्षण बीरन के हाथ की लाठी भर्राती हुई आकर उस गुण्डे के सर पर पड़ी, जो उस मुसलमान स्त्री से व्यभिचार करना चाहता था। वह वहीं ढेर हो गया। सब गुण्डे

बीरन पर झपटे। बीरन की लाठी पुनः तेजी से चलने लगी, और कुछ ही देर बाद सब गुण्डे भाग खड़े हुए।

'तुम फरिश्ते हो भाई!' उस मुसलमान स्त्री ने बीरन के दिए हुए दुपट्टे से अपना शरीर ढाँकते हुए कहा, 'मेरा नाम फातिमा है। क्या तुम मुझ दुखिया को मेरे घर तक पहुँचा दोगे?'

'क्यों नहीं बहन! चलो!' बीरन ने कहा और फातिमा को साथ लेकर उसके घर की ओर चल पड़ा।

फातिमा के अब्बा अताउल्ला खाँ बरांडे में खड़े थे। उनके हाथ में दो-नली बन्दूक थी। दूर पर उन्होंने अपनी लड़की को एक हिन्दू के साथ आते देखा, उनकी भवों पर बल पड़ गये। वे कट्टर मुसलमान थे। एक काफिर को देखकर उनके हाथ फड़क उठे। उन्होंने अपनी बन्दूक ऊँची की।

'धाँय! धाँय!! और बीरन कटे वृक्ष की तरह भूमि पर गिर कर छटपटाने लगा। फातिमा अपने अब्बा की ओर खूनी आँखों से देखती हुई बोली, 'अब्बा! तुम शैतान हो, बुज़दिल हो, काफ़िर हो। तुमने एक फ़रिश्ते को मार डाला है। तुम मज़हब के जोश में आकर अपने ही भाई का ख़ून कर बैठे हो? जानते हो? वह हिन्दू था, बहादुर था, मेरा भाई था। वही भाई, जिसने मुझे मुसलमान जानते हुए भी मेरी इज़्जत बचाई थी। मज़हब के दीवाने! खुदा तुम्हें कभी मुआफ करेगा।'

किधर है खयाल तेरा तू कहाँ है?
सुन हातिम से इबरत का बयाँ है।
ज़रा खौफ़े खुदा से काँप इन्साँ—
ज़मीं नीचे है, ऊपर आसमाँ है।'

बाईस

'उपदेश सुनने नहीं चलोगे क्या भैया?
'कैसा उपदेश रे!'

'आपने सुना ही नहीं—मन्दिर में आज एक योग्य साधु आये हैं, उन्हीं का उपदेश होगा। गाँव के सभी स्त्री-पुरुष मन्दिर की ओर दौड़े जा रहे हैं। सुना है साधु की उम्र अभी बहुत थोड़ी है, परन्तु इतनी थोड़ी अवस्था में उनमें अतीव प्रतिभा विराजमान है। चलिए! हम लोग भी चलकर उनके दर्शन कर लें।'

'अच्छा चल! लेकिन मेरा साधुओं पर ज़रा भी विश्वास नहीं।'

× × ×

गाँव के मन्दिर में खूब तैयारी हुई थीं। साधु सुधासिन्धु का उपदेश सुनने के लिए दूर-दूर से लोग चले आ रहे थे। साधु का पदार्पण आज ही हुआ था और आज ही वे चले जाने वाले भी थे, परन्तु लोगों के विशेष आग्रह से अपना उपदेशामृत सुनाने के लिए ठहर गये थे। मन्दिर के विस्तृत प्रांगण के सामने हज़ारों की भीड़ इकट्ठी थी। सभी बैठे हुए उद्विग्नतापूर्वक साधु के आगमन की राह देख रहे थे।

लोगों में खलबली मची और सभी उठकर खड़े हो गये। उस विस्तृत समाज में साधु 'सुधासिन्धु ने प्रवेश किया। सभी आँखें उनकी ओर उठ गईं। साधु की अवस्था बहुत कम, यानी २५-२६ वर्ष की थी। उनके सुन्दर शरीर पर गेरुवे वस्त्र बहुत ही भले लगते थे। उनके मुख पर एक ऐसी आभा विराजमान थी, जिसे देखकर लोगों का मस्तक आप-से-आप झुक जाता था। उनके नेत्रों से एक ऐसी ज्योति प्रवाहित हो रही थी, कि कोई भी उनके नेत्रों से अपने नेत्र न मिला सकता था। लोगों का विश्वास था कि साधु ने अपनी इन्द्रियों को पूर्णतया अपने वश में कर लिया है, एवं योग विद्या के अभ्यास से उन्होंने अपनी मनः-शक्ति को एकत्रित करके भगवान के चरणों में केन्द्रित कर दिया है।

साधु आकर मृगासन पर बैठ गये। लोगों ने उनकी ओर देखा, परन्तु उनकी तेजवान प्रतिमा के आगे किसी की आँखें न ठहर सकीं। सभी के नेत्र नीचे झुक गये। जनता में कानाफूसी होने लगी। कोई कहता, 'साधु के मुँह पर बड़ा तेज है। अवश्य कोई अवतारी पुरुष है।' कोई कहता, 'ऐसी सुन्दरता और युवावस्था होते हुए भी सांसारिक मायाबन्धन से एकदम मुक्त हो जाना हँसी-खेल नहीं है। अवश्य ही ये कोई महान् व्यक्ति हैं, तभी तो इन्होंने काम, क्रोध, मद, लोभ पर विजय पा ली है। लेकिन भाई! मैंने ऐसा साधु आज तक नहीं

देखा।'

साधु अपना आसन छोड़ उठ खड़े हुए और कोमल वाणी में कहने लगे, 'मनुष्य कल्याण चाहता है, परन्तु कल्याण-प्राप्ति के साधन जब तक प्राप्त नहीं हो जाते, तब तक कल्याण की प्राप्ति असम्भव है। कल्याण प्राप्ति का साधन है 'ईश्वरभक्ति'। ईश्वर की आराधना एवं उपासना से जब ईश्वर प्रसन्न होता है तो वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अपने भक्तों को प्रदान कर उन्हें कृतकृत्य कर देता है। ईश्वर कौन है? ईश्वर उस महान शक्ति का नाम है, जो अविद्या, क्लेश, कुशल-अकुशल, इष्ट अनिष्ट आदि कर्मों की वासना से रहित है। ईश्वर उस असीम शक्ति को कहते हैं जो निराकार है, जिसकी माया अपरमित है जो देश-काल वस्तुओं में अपरिछिन्न हैं, एवं जिसे क्षुधा-तृषा छेदन-भेदन शीतोष्ण ज्वर पीड़ादिक कुछ भी नहीं व्यापते। ईश्वर वह है, जो त्रसरेणु, अणु, परमाणु और प्रकृति को अपने वश में रखता है। वह ईश्वर भौतिक इन्द्रिय गोलक हस्तपादादि अवयवों से रहित है, परन्तु उसकी शक्ति अनन्त है और उसी के द्वारा वह ऐसे कार्य करता है, जो प्रकृति के पराक्रम से परे हैं। ईश्वर के हाथ नहीं, परन्तु अपनी शक्ति-रूपी हाथ से वह सबकी रचना करता है, पग नहीं, परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक बेगवान है, चक्षु नहीं, फिर भी सबको यथावत् देखता है, अन्तःकरण नहीं, फिर भी सब जगत को जानता है। वह ईश्वर सर्वव्यापी, सर्वान्तरयामी है। जिस पर उस परमपिता की कृपा हुई, वह शारीरिक बन्धनों से मुक्त हो गया। उसमें क्लेश, दुःख, अज्ञान नहीं रह जाता और वह राग आदि अवगुणों से पृथक हो जाता है।'

'लेकिन महाराज! यह जीव स्वतन्त्र है या परतन्त्र?' एक ने पूछा।

'भाई?' साधु कहने लगे, 'यह जीव ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है, क्योंकि जीवन, मरण, वायु, आकाश आदि इसके वश में नहीं। निष्ट अनिष्ट एवं पुण्य-पाप के कर्म करने में यह जीव स्वतन्त्र है। यह चाहे पाप-कर्म करे या सद्कर्म--- यह उसकी इच्छा पर निर्भर है। हाँ! सत् और असत् कर्मों का फल उस जगतपिता के निर्णय पर ही अवलम्बित है। इसीलिए अपनी सामर्थ्यानुकूल कर्म करने में पराधीन होकर अपने पाप का फल भोगता है। वहाँ ईश्वरीय विधान है।'

'धन्य महाराज !' यह प्रश्नकर्त्ता बोल उठा। चारों ओर से कर-तल-ध्वनि गूँज उठी। सभी के मुख से साधु की विद्वत्ता की प्रशंसा होने लगी। स्त्रियाँ भी उसके सदुपदेश से अतीव प्रसन्न हुईं। उपस्थित मडली साधु का विद्वत्तापूर्ण वक्तव्य सुनकर अवाक् रह गई। इतनी कम अवस्था और यह पांडित्य ? पंडितों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। जब साधु सुधासिन्धु का उपदेश समाप्त हुआ, सब लोग साधु की प्रशंसा करते हुए अपने-अपने घर सिधारे। आज उन्होंने जो उपदेश दिया था, उससे ज्ञान-कपाट खुल गये थे।

× × ×

जिस स्थान पर साधु सुधासिन्धु शयन कर रहे थे, वह मन्दिर का बाहरी हिस्सा था। एकाएक रात्रि समय अपने पार्श्व में किसी के कोमल करस्पर्श से वे चौंक उठे। उन्होंने अपने नेत्र खोले। देखा एक रमणीय मूर्ति उनकी चारपाई के बगल में खड़ी है। वे उठकर बैठ गये। यह रमणीय मूर्ति पीछे हटकर दूर जा खड़ी हुई और हाथ के संकेत द्वारा साधु को अपनी ओर बुलाने लगी। साधु मन्त्र-मुग्ध से होकर उसकी ओर बढ़े। वह रमणीय मूर्ति भी उन्हें अपनी ओर आता हुआ देखकर उस ओर बढ़ चली जिधर कलकल-निनादिनी अमरावती नदी प्रवाहित हो रही थी।

'मेरा नाम नीरा है महाराज !' वह रमणीय मूर्ति बोली, 'मैं आप से एक भिक्षा माँगने आई हूँ।'

'मुझ असमर्थ जीव से तुम क्या भिक्षा चाहती हो ? भिक्षा ही माँगना है तो उस सर्वशक्तिमान जगदीश्वर से माँगो।' साधु ने कहा, उस समय उन्हें महान आश्चर्य हो रहा था कि आखिर यह अद्भुत रूपराशि वाली नवयौवना उनसे चाहती क्या है।

'नहीं महाराज ! मैं आप से ही भिक्षा चाहती हूँ।'

'माँग लो। यदि मेरी सामर्थ्य से बाहर नहीं होगा, तो तुम्हें निराश नहीं करूँगा।'

'महाराज ! मैं आप जैसा पुत्र चाहती हूँ।'

'मेरे जैसा पुत्र ?' साधु बोले, 'तो मुझे ही अपना पुत्र मान लो माँ ?'

'नहीं महाराज ! आप मेरा मतलब नहीं समझे। मैं आपको चाहती हूँ। आपको प्यार करती हूँ।' उस रमणी ने आजिजी के साथ

कहा।

'तो क्या माता अपने पुत्र को नहीं चाहती? माँ अपने बेटे को प्यार नहीं करती?'

'ओह साधु! आप मेरा मतलब···।'

'मैं खूब समझ रहा हूँ तुम्हारा मतलब! आज तक मैंने दुनिया को समझने की ही तो कोशिश की है, और बहुत कुछ समझा भी है। मैं जानता हूँ कि तुम मुझे प्यार करती हो, परन्तु तुम्हारा यह प्रेम माता-पुत्र एवं भाई-बहन का नहीं, वरन् वासना का कुत्सित प्रेम है। इसी प्रेम के वश होकर तुमने इस आधी रात के समय मुझे बुलाया है। परन्तु क्या वास्तव में तुम मुझसे प्रेम करती हो? नहीं! तुम मुझसे प्रेम नहीं वरन् पंचतत्वों द्वारा निर्मित मेरे इस शरीर से प्रेम करती हो, जो एक दिन मिट्टी में मिलकर नष्ट हो जायगा। यदि तुम वासनामय प्रेम को छोड़कर वास्तविक प्रेम से मुझे देखतीं, तो तुम्हें मेरा दूसरा ही स्वरूप दृष्टिगोचर होता। तब तुम देखतीं कि मेरे इस सुन्दर शरीर के पीछे कैसा भयानक वातावरण उपस्थित है।' साधु सुधासिंधु गम्भीर वाणी में बोले।

'महाराज! यह आप क्या कह रहे हैं!'

'मैं उचित ही कह रहा हूँ। तुम मुझसे प्रेम न करके, मेरे अंतः-करण में उपस्थित उस महान् शक्ति से प्रेम करो जो यावत् जगत् की रचना करती है। वह परमात्मा ही तुम्हें इच्छित फल प्रदान करेगा। उधर देखो! वह निर्मलचन्द्र पूर्वाकाश में खिलखिला उठा है और उसकी उज्ज्वल किरणें शरत्‌जल में चमचमा रही हैं। क्या तुम्हारा हृदय भी वैसा ही उज्ज्वल है? नहीं! उसमें तो वासना की प्रखर कालिमा छाई हुई है। तुम अपनी कालिमा को इस चाँदनी रात्रि में धोकर बहा दो। तुम्हारा हृदय भी तुम्हारे नाम ही जैसा उज्ज्वल हो जाय। ऐसे सुखद समय में, जबकि प्रकृति पूर्णतया निस्तब्ध हो, तुम अपने को उस जगतपिता परमात्मा के चरणों में डाल दो, वही तुम्हारा कल्याण करेगा!'

'आप धन्य हैं,' वह रमणी पुलकित स्वर में बोली।

'मैं धन्य नहीं हूँ। धन्य है वह परमपिता, जो मेरे अन्तःकरण से बोल रहा है। तुम्हारी कालिमा विलीन हो गई, यह देखकर मुझे महान् आनन्द प्राप्त हुआ है। अब तुम जाकर सो रहो।'

'और आप !'

'मैं अब यहाँ नहीं ठहरना चाहता। मैं सदैव के लिए यह स्थान छोड़ रहा हूँ। जीवन में शायद ही कभी अब यहाँ आऊँ, कहकर साधु तेजी दक्षिण दिशा की ओर बढ़ चले। नीरा उन्हें तब तक देखती रही, जब तक कि उनकी अन्तिम परछाईं, वायुमण्डल में विलीन न हो गई।

तेईस

बीरन ने एक पत्र तिल्लो के पास भेजा था। वह पिछले किसी परिच्छेद में लिखा जा चुका था। वह पत्र तिल्लो को होली के सात दिन पहले ही मिल चुका था। पत्र पाकर तिल्लो की प्रसन्नता का पारावार न रहा था। उसका पति उसका जीवन, उसका बारन आज इतने दिनों के बाद घर आयेगा, तो भला वह क्यों न प्रसन्न होती ?

होली के दिन वह प्रातःकाल ही उठी। घर को बुहार कर साफ कर दिया, तत्पश्चात् स्नान कर एक काली धोती पहन ली ! उसके गोरे बदन पर वह काली धोती बड़ी ही आकर्षक मालूम पड़ती थी। आज इतने दिनों के बाद उसने अपना श्रृंगार किया था। जो भी उसे देखता उसके कलेजे पर साँप लोट जाता।

दरवाजे पर बैठकर बीरन की प्रतीक्षा करने लगी। ८ बजा, १० बजा, १२ बजा और एक बजा, परन्तु बीरन अभी तक न आया, तिल्लो का मन उद्विग्न होने लगा। वह सोचने लगी 'उन्होंने आज प्रातःकाल आ जाने को लिखा था, परन्तु अभी तक न आये।' वह रह-रहकर सड़क की ओर देखती, परन्तु उसे सूनी देखकर कलेजा थाम लेती।

शाम हो गई, परन्तु बीरन अभी तक न आया, न जाने क्यों ? तिल्लो ने अभी तक एक दाना भी मुँह में न रखा था। रात्रि का आगमन जानकर उसने अपनी काली धोती उतारकर पुनः सन्दूक में रख दी

और अपना श्रृंगार एकदम से बिगाड़ दिया। उसे न जाने क्यों विश्वास हो गया कि अब उसका बीरन नहीं आवेगा, हाँ नहीं आवेगा।

तिल्लो आँसू बहाती हुई आकर दरवाज़े पर बैठ गई। उस समय गाँव के सभी लोग आनन्द में मग्न थे। चारों ओर हर्ष की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। गाँव की ललनाएँ एक जगह जमा होकर अलाप रहीथीं। उनके गाने में क्या रस था, क्या आनन्द था, यह बेचारी तिल्लो क्या जाने? वह तो अपने बीरन की राह देख रही थी। जिसकी प्रतीक्षा में उसने इतने लम्बे-लम्बे वर्ष व्यतीत किये, वही आज आने वाला था, परन्तु हाय, अभी तक वह क्यों नहीं आया?

दीर्घ नि:श्वास लेकर तिल्लो कहने लगी, 'अभी तक नहीं आये। आज उनके बिना घर सूना लग रहा है।' वह अपने-आप ही अलापने लगी, नहीं आये बीरन, घर सूना लगे...।'

उधर पास के घर से ग्रामोफोन की आवाज़ आई।

न आया मन का मीत।
उमरिया बीत गई सारी।।

× × ×

उन दिनों साधु सुधासिन्धु का नाम चारों ओर तेज़ी के साथ फैल रहा था। वे जहाँ भी जाते, वहीं उनका स्वागत होता और जनता उनके उपदेश को सुनकर दंग रह जाती। थोड़े ही दिनों में उनका यश सूर्य की तेज़ी के साथ चमकने लगा था।

उस समय मिर्ज़ापुर की जनता के हर्ष का पारावार न रहा, जब उसने सुना कि साधु सुधासिन्धु शीघ्र उनके शहर में आ रहे हैं। उनके स्वागत का प्रबन्ध होने लगा। शहर के बड़े-बड़े रईस इस कार्य में सहयोग देने लगे। सारा शहर उस महान् योगी का स्वागत करने के लिये शीघ्र ही प्रस्तुत हो गया।

साधु मिर्ज़ापुर में आये। उनका अपूर्व समारोह के साथ स्वागत हुआ। उनके दर्शनार्थ सारा शहर उमड़ पड़ा। साधु 'महन्त शिवाले' पर ठहरे। उनका उपदेशामृत पान करने के लिये 'महन्त शिवाला' पर लोगों की भीड़ उपस्थित होने लगी। पचीसों हजार की भीड़ इकट्ठी हो गई। तिल रखने का भी स्थान न रहा।

साधु अपना आसन छोड़कर उठ खड़े हुए। सूर्य-सा देदीप्यमान उनका मुख देखकर जनता आश्चर्यचकित रह गई। साधु अमृतवर्षा

करते हुए बोले, इन्द्रिय-निग्रह ही मनुष्य का शुद्ध आचरण है। अतः मनुष्य को चाहिए कि जो इन्द्रियाँ, चित्त को हरण करने वाले विषयों की प्रवृत्त करती हैं, उन्हें रोकने का प्रयत्न करे और उन्हें अपने वश में करके अधर्म मार्ग से हटाकर धर्म मार्ग पर सदैव चलाया करे। इन्द्रियों को विषयासक्ति एवं अधर्म की ओर चलाने में मनुष्य निश्चय ही दोष को प्राप्त होता है। जैसे अग्नि में घी डालने से अग्नि का वेग बढ़ता ही जाता है, वैसे ही कामों के उपभोग से काम शान्त नहीं होता, वरन् बढ़ता ही जाता है। अतः मनुष्य को कभी विषयासक्त न होना चाहिये। वेद-ज्ञान, त्याग, यज्ञ, नियम एवं धर्माचरण केवल जितेन्द्रिय पुरुष को ही प्राप्त होते हैं। अतः जीव को चाहिये कि पाँच कर्म, पाँच ज्ञानेन्द्रिय एवं ग्यारहवें मन को अपने वश में करके युक्ताहार विहार एवं योग से शरीर की रक्षा करे। जितेन्द्रिय वह है, जो प्रशंसा सुनकर हर्ष और निन्दा सुन के शोक न करे, जो सुन्दर रूप देखकर प्रसन्न और विकृत रूप देखकर अप्रसन्न न हो, जो उत्तम भोजन करके आनन्दित और निकृष्ट भोजन करके दुख न माने।···माता, पिता आचार्य और अतिथि की सेवा करना ही 'देव पूजा' कहलाती है और जिस कर्म से जगत का उपकार हो, वह कर्म करना एवं हानिकारक कर्म छोड़ देना ही, मनुष्य का मुख्य कर्तव्य कर्म है। कभी लम्पट विश्वासघाती, मिथ्यावादी, स्वार्थी, कपटी, छली आदि दुष्ट मनुष्यों का संग न करे। जो सत्यवादी, धर्मात्मा, परोपकारी और प्रियजन हैं, उनका सदैव संग करने का नाम ही श्रेष्ठाचार है।'

साधु के बैठते ही चारों ओर से जयजयकार की आवाजें आने लगीं। सभी एक मुख से साधु की प्रशंसा कर रहे थे। इतने में ही उस प्रगाढ़ भीड़ को भेदता हुआ एक दुबला-पतला कृश मनुष्य, जिसके कपड़े जगह-जगह से फट गये थे, आकर साधु के चरणों पर गिर पड़ा और दीनतायुक्त वाणी में बोला, 'महाराज ! मैं अधम हूँ, नीच हूँ। मैंने अपने स्वामी के साथ कपट किया था, उसी का फल भोग रहा हूँ। मुझे शान्ति···'

साधु उस मनुष्य को देखते ही एकाएक चौंक पड़े, फिर भी अपने को संयत करके बोले, 'तुम कौन हो भाई ?'

'मैं यहाँ के सबसे भारी ज़मींदार श्री आगर का कारिन्दा था महाराज !' वह मनुष्य कहने लगा, 'परन्तु आजकल भिखारी हूँ। मैंने

उनके साथ दगा किया था, परन्तु उन्होंने उसका बदला 'भलाई द्वारा दिया। मैंने जिसे बरबाद किया, उसीने मुझे आबाद किया, नहीं तो अब तक मैं जेल की चक्की पीसता हुआ मर चुका होता। महाराज मेरे हृदय में न जाने क्यों एक ज्वाला-सी जलती रहती है। मैं शान्ति चाहता हूँ, परन्तु वह मुझसे दूर भागती है। अब मैं आपके चरणों में आया हूँ, आप मुझे शान्ति प्रदान कर मेरी रक्षा कीजिये।'

'भाई! तुम शान्ति चाहते हो,' साधु कहने लगे, 'अच्छा घबड़ाओ नहीं। मैं तुम्हें शान्ति दूंगा। इधर देखो, मेरी आँखों की ओर।'

अब तक कारिन्दा को साधु के मुख पर दृष्टिपात कर उनकी आँखों से अपनी आँखें मिलाने का साहस नहीं हुआ था। अब तक तो वह ज़मीन की ओर देखता हुआ साधु से वार्तालाप कर रहा था, परन्तु साधु के कहने पर उसने उनके मुख पर दृष्टि डाली। उनके मुख पर उसने न जाने क्या देखा कि वह चौंक पड़ा। इतना चौंक पड़ा कि उठ खड़ा हुआ। उसका कृश शरीर काँपने लगा। उसे ऐसा लगा मानो वह अपने सामने कोई भयानक प्रतिमा देख रहा हो। उसके होंठों से काँपती हुई आवाज़ निकली, 'आप?'

× × ×

बिजली ज़ोरों से कड़की और खिड़की के पास बैठी हुई अदा के हृदय में ज़ोरों की टीस लगी। रिमझिम बरसती हुई पानी की बूंदें, कड़कड़ करती हुई दामिनी की दमक एवं दिल में उठती हुई प्रियतम की याद, अदा स्वतः अलापने लगी—

घन उमड़ घुमड़कर बरस रहे,
ये लोचन प्रिय बिन तरस रहे।
सावन के रस पूरित बादल—
बरसाते जब बूंदें पागल—
बुझता जगती का विरहानल—
सखि! वे दिन कैसे सरस रहे।
ये लोचन पिय बिन तरस रहे॥

नीचे कमरे में बैठे हुए श्री आगर भी कुमार की याद में आँसू बहा रहे थे। वे अपने-आप ही कह रहे थे, 'हाय बेटा! नहीं जानता था कि तुम इतनी-सी बात में मुझसे रुष्ट होकर चले जाओगे। तुमने मुझ बुड्ढे को त्याग दिया, परन्तु यह न सोचा कि तुम्हारे पीछे इस बड़ी

जमींदारी का क्या होगा।

इसी समय उस कमरे में घबड़ाये हुए, फटे हाल में कारिन्दा ने प्रवेश किया। उसे देखते ही श्री आगर उठ खड़े हुए, और बोले, 'तू मेरे दिल को जलाने के लिए फिर आ पहुँचा? क्या तुझे मेरी दशा देखकर कुछ भी दया नहीं आती?''

'सरकार! मैं इस समय एक अत्यावश्यक सूचना लेकर आपके पास आया हूँ। यदि आवश्यक कार्य न होता तो मैं कभी आपको अपना मुख न दिखाता। मैं छोटे सरकार की खबर लेकर आया हूँ। मैंने उन्हें देखा है, इसी शहर में, अपनी इन्हीं आँखों द्वारा!'

'तुम फिर मेरी जान लेना चाहते हो। एक बार पहले भी तुम ऐसा ही प्रयत्न कर चुके हो। मगर मैं इस बार तुम्हारे चंगुल में नहीं आ सकता। तुम चले जाओ, अभी चले जाओ!' श्री आगर गरज उठे।

कारिन्दा कहने लगा, 'सरकार! मुझे बुरा-भला न कहिये। इस समय मैं पहले का कारिन्दा नहीं हूँ। मैं सच कह रहा हूँ। मैंने छोटे सरकार को देखा है। वे साधु हो गये हैं।'

'साधु?' श्री आगर आश्चर्य के साथ बोले।

'जी सरकार! साधु सुधासिन्धु का नाम तो आपने सुना ही होगा। वे छोटे सरकार ही हैं। आजकल यहाँ आये हुए हैं—'

'क्या वही सुधासिन्धु हैं,' श्री आगर उठे और अपना रेशमी कुर्ता गले में डालकर मोटर में आ बैठे। कारिन्दा भी उनके बगल में बैठ गया। मोटर तीव्र गति से 'महन्त शिवाले' की ओर रवाना हुई।

'महन्त शिवाला पर पहुँचते ही मोटर रुकी। श्री आगर और कारिन्दा तेज़ी के साथ बगीचे में घुसे। इस समय श्री आगर अपने-आपको भूल से गये थे। पांच वर्षों के पुत्र-वियोग ने उन्हें उत्तेजित कर दिया था। साधु सुधासिन्धु बगीचे में एक चबूतरे पर बैठे हुए न जाने क्या सोच रहे थे। श्री आगर ने उन्हें दूर से देखा, साथ ही बोल उठे, 'वही है। बिल्कुल वही। वही…।'

श्री आगर तेज़ी के साथ झपटकर साधु से लिपट गये और बोले, 'आह, मेरा बेटा! मेरा लाल!' साधु जो वास्तव में कुन्दन कुमार ही थे, रो पड़े। दोनों पिता-पुत्र एक-दूसरे से कई मिनटों तक लिपटे रहे। कारिन्दा पास ही खड़ा हुआ पिता और पुत्र का यह अद्भुत मिलन देख रहा था। उसकी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो चली थी।

उसे अपने कर्मों पर महान् पश्चात्ताप हो रहा था, इन दोनों अभागे पिता-पुत्र की दुर्गति का कारण वही तो था।

'बेटा ! तुम मुझे छोड़कर चले गए, यह न सोचा कि…'

'पिताजी ! जो कुछ होता है, उसमें उसी ईश्वर की माया का मिश्रण रहता है—'

'खैर बेटा ! जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ। चलो, घर चलकर…'

'पिताजी ! मुझे क्षमा कीजिये। अब मैं माया-बन्धन से मुक्त होकर फिर उसी जंजाल में फँसना नहीं चाहता—'

'यह तुम क्या कह रहे हो कुन्दन। तुम्हीं हमारे सहारे हो। तुम्हीं मुझ बुड्ढे की लाठी हो। तुमसे अलग रहकर मैं जीवित न रह सकूँगा। तुम्हारी अदा भी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी। वह बेचारी तुम्हारे बिना अत्यन्त सन्तप्त है—'

श्री आगर ने बहुत कहा। लाचार कुमार को उनकी बात माननी ही पड़ी। कुन्दन कुमार (साधु सुधासिन्धु), श्री आगर एवं कारिन्दा पुनः मोटर में आकर बैठ गए। घर पहुँचकर कुमार अपने पिता की कोठरी में बैठ गए, और श्री आगर अदा की खबर लेने के लिए ऊपर चले गये। कारिन्दा बाहर ही बैठा रहा।

कुन्दन कुमार कमरे में बैठे-बैठे चारों ओर दृष्टि दौड़ाते रहे। उन्होंने देखा कि वही कमरा, जो उनकी उपस्थिति में स्वर्गिक शोभा-शाली दृष्टिगोचर होता था, आज बीरान हो गया है। साज-सजावट का कहीं नाम-निशान नहीं है। अभी वे सब देख ही रहे थे कि अदा दौड़ती हुई आकर उनसे लिपट गई और बोली, 'मेरे साजन।'

कुमार का कंठ अवरुद्ध हो गया। उनके मुख से केवल इतना निकला, 'अदा।…'

'साजन ! तुम मुझे छोड़कर चले ही गए। तुम्हारे बिना मेरी क्या दशा हुई, सो तो देख ही रहे हो। अब मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी। तुम मुझे छोड़कर अब नहीं जाने पाओगे,' अदा सिसकती हुई बोली।

'अदा !' कुमार गम्भीरतापूर्वक बोले, 'महान् पुरुष कहते हैं कि यह जगत् मिथ्या है, मायाजाल है। मुझे भी कुछ-कुछ ऐसा ही अनुभव हुआ है और यही कारण है मैं संन्यासी का वेश धारण कर, इस भव-जाल से अलग हो गया हूँ और मनुष्य-मात्र के कल्याणार्थ उस परम

पिता का दिव्य संदेश सुनाता हुआ इधर-उधर भ्रमण कर रहा हूँ। इसमें मुझे जो शान्ति मिल रही है वह वर्णनातीत है। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग मेरी इस शान्ति में विघ्न न डालो और मुझे जीव एवं जगत् का कल्याण करने के लिए परमेश्वर के नाम पर स्वतन्त्र कर दो। मैं अब पिताजी के और तुम्हारे साथ अधिक देर तक नहीं ठहर सकता। मैं आज ही, अभी ही, यहाँ से चला जाऊँगा। जिस जंजाल को लात मारकर मैं उस परम पिता की शरण में गया था, अब उसी में पुनः प्रवेशन करूँगा।'

'साजन !' अदा ने कहा, 'तुम वैरागी हो गए हो। तुम्हारी सभी बातें वैरागियों की-सी हो रही है। परन्तु ज़रा मेरी ओर तो देखो। मैं तुम्हारे ही सहारे अब तक जीवित हूँ, परन्तु जब तुम मुझे छोड़कर चले जाओगे, तो क्या मैं ज़िन्दा रह सकूँगी।'

इतने में ही श्री आगर ने उस कमरे में प्रवेश किया और बोले—

'बेटा ! अब इस संन्यासी वेश को उतार···'

'पिताजी !' —एकाएक कुमार का स्वर कठोर हो गया। वे उठकर खड़े हो गए और कमरे से बाहर आकर बोले, 'मैं अब यहाँ एक क्षण भी ठहरना नहीं चाहता। इस मायाजाल में पड़कर मेरा दम घुटा जा रहा है। मैं अब पुनः शान्त प्रकृति में चलकर भगवान् की आराधना करना चाहता हूँ। मैं घर-द्वार, पिता-माता, सबको छोड़कर केवल भगवद्-भक्ति चाहता हूँ। अब मैं जाऊँगा ही।'

इतना कहकर कुमार हाँफने लगे। श्री आगर रोते हुए बोले, 'बेटे ! मेरे जीवन के सहारे ! मेरे लाल ! यह तुझे क्या हो गया···'

'पिताजी ! मुझे भगद्कृपा प्राप्त हो गई और मैं इस संसार का अस्तित्व जान गया हूँ, परन्तु आप लोग अभी तक उसी भवजाल में···'

'परन्तु ज़रा सोचो तो बेटा ! कि तुम्हारे पीछे इस ज़मींदारी का क्या होगा ? इस बूढ़े बाप का क्या होगा ? इस अनाथिनी अदा का क्या होगा ?'

'इन सबके सोचने का समय नहीं है पिताजी। मैं जब से यहाँ आया हूँ, तभी से मेरे हृदय में न जाने कैसी ज्वाला उत्पन्न हो गई है। यह सारा घर, सारा गाँव मुझे काटने दौड़ रहा है। मैं इन सबको

छोड़कर जंगल को प्रस्थान करना चाहता हूँ, जहाँ भगवान् की छत्र-छाया विराजमान है। अब मैं जाऊँगा ही, कोई मुझे नहीं रोक सकता,' कहते हुए कुमार तेजी के साथ एक ओर को चल पड़े। श्री आगर आर्तनाद कर उठे, उनका शरीर शिथिल हो गया और वे भूमि पर गिर पड़े। कारिन्दा ने उन्हें सम्हाला। श्री आगर चिल्ला उठे, 'वह मुझे छोड़कर जा रहा है, सदैव के लिए जा रहा है। उसे पकड़ो, जाने न पावे।'

कारिन्दा बोला, 'अब वे न लौटेंगे सरकार! ईश्वर की यही मरजी थी।' कहकर कारिन्दा ज़ोरों से रो पड़ा।

कुमार को जाते देख अदा श्री आगर से बोली, 'मैं भी उन्हीं के साथ जा रही हूँ बाबूजी! ...'

'अदा! अदा!! क्या तुम भी मुझ बुड्ढे को छोड़ दोगी?' श्री आगर ज़ोरों से चिल्ला उठे। अदा कुमार के पीछे दौड़ चली और कुछ ही दूर जाकर उन्हें पकड़ लिया। बोली, 'मुझे भी साथ ले चलो साजन! मैं तुम्हें अकेले नहीं जाने दूँगी।'

'अदा! तुम मेरे मार्ग में रोड़े न अटकाओ,' कुमार ने कहा, परन्तु लाख समझाने पर अदा ने न माना। लाचार कुमार उनको साथ लेकर आगे बढ़े। जब कुमार और अदा गांव के छोर पर पहुँचे, जिधर बीरन का मकान पड़ता था, तो उन्होंने देखा कि झोंपड़ी के दरवाज़े पर बीरन और तिल्लो खड़े हुए उन्हींकी ओर देख रहे हैं। कुमार ने कहा, 'बीरन जेल से छूट कर आ गया क्या?'

जब कुमार और अदा बीरन के दरवाज़े के सामने पहुँचे, तो बीरन और तिल्लो कुमार के चरणों पर गिर पड़े। कुमार बोले, 'जेल से छूट कर आ गया क्या बीरन?'

'जेल से तो बहुत दिन पहले छूटा हूँ। इधर बम्बई चला गया था, वहाँ दंगे में एक मुसलमान ने गोली मार दी थी, परन्तु आपकी कृपा से मेरी जान जाते-जाते बच गई। परन्तु आपको इस वेश में...'

'मैं अब सदैव के लिए इस गाँव से जा रहा हूँ बीरन! अब मैं कभी तुम लोगों को न देख सकूँगा। तुम लोग मेरे अपराधों पर क्षमा प्रदान करना,' कहकर कुमार और अदा आगे बढ़ गए। बीरन और तिल्लो उन्हें एकटक तब तक देखते रहे, जब तक कि वे आँखों से ओझल न हो गए। गाँव की शोभा, गाँव का एक सहृदय व्यक्ति आज सदैव के लिए

व छोड़कर चला गया। बीरन और तिल्लो की आँखों में आँसू आ ए। तिल्लो बोली, 'हाय कुमार ! क्या आपके भाग्य में यही ा।'

× × ×

जंगल की एक चट्टान पर कुन्दन कुमार बैठ गए। अदा भी उनकी बगल में जा बैठी। कुमार बोले, 'लौट जाओ अदा ! व्यर्थ में मेरे साथ कष्ट न सहो।

'मैं नहीं लौट सकती साजन ! मैं अब तुम्हें नहीं छोड़ूँगी, तुम निष्ठुर हो, निर्दयी हो, निर्भय हो,' कहकर अदा ने कुमार को अपने बाहुओं में कस लिया। कुमार का मन डगमगाने लगा। एक क्षण के लिए उनके ज्ञानतन्तु क्षीण पड़े और उन्होंने अदा के होठों पर अपना होंठ रख दिया। उसी समय शान्त प्रकृति को बेधता हुआ यह गीत प्रतिध्वनित हो उठा, 'छोड़ जगत की माया मुसाफिर ! छोड़ जगत की माया।'

एकाएक कुमार का शरीर काँप उठा, एक क्षण के लिए, और वे अदा को छोड़कर इस प्रकार खड़े हो गए, मानो उन्हें साँप छू गया हो। उनके हृदय में एक ज्वाला-सी धधक उठी। उन्हें ऐसा लगा मानो क्षितिज से कोई उनका नाम लेकर पुकार रहा हो। उनके अन्तःकरण का देवता बोल उठा, 'पागल ! कीचड़ से निकलकर पुनः उसी में धंसता है।'

कुमार को रोमांच हो आया। वे दृढ़तापूर्बक बोले, 'नहीं, यह नहीं हो सकता। अदा ! तुम मेरे साथ नहीं जा ।'

अदा बोली, 'साजन ! ...'और वह कुमार से लिपट गई, परन्तु र ने उसे निष्ठुरतापूर्वक ढकेल दिया और बोले, 'यह कभी नहीं सकता। जिस भवजाल से निकलता हूँ, उसमें पुनः नहीं फँस सकता। देखो मेरा देवता मुझे बुला रहा है। अदा ! मैं जा रहा हूँ, अनन्त ओर, क्षितिज की ओर, तुम मुझे न रोको। तुम छलना हो, माया-नी हो,' कहते हुए कुमार दक्षिण की ओर भाग चले। अदा चिल्ला ी, 'साजन मुझे छोड़कर न जाओ।'

परन्तु 'उसके साजन' ने उसकी बातें न सुनीं। चले ही गए। शीघ्र भयावने जंगल ने उन्हें अपने आँचल में छिपा लिया। अदा ज़ोरों से

चिल्ला उठी, 'साजन ! मेरे साजन !!'

दिशाएँ प्रतिध्वनित हो उठीं, 'साजन ! मेरे साजन !!'

पास ही वृक्ष पर बैठा हुआ पपीहा करुण स्वर में बोल उठा, 'पी कहाँ ? पी कहाँ ??'

० ० ०